दूरी पर रह गया तो सही स्थिति मालूम हुई। इसके बाद कुछ लोग तो सीधे हब्शा पलट गये और कुछ लोग छिप-छिपाकर या क़ुरैश के किसी आदमी की शरण लेकर मक्के में दाख़िल हुए।[1]

हब्शा की दूसरी हिजरत

इसके बाद उन मुहाजिरों पर ख़ास तौर पर और मुसलमानों पर आम तौर पर क़ुरैश का अन्याय और अत्याचार और बढ़ गया और उनके परिवार वालों ने उन्हें ख़ूब सताया, क्योंकि क़ुरैश को उनके साथ नजाशी के सद्व्यवहार की जो ख़बर मिली थी, उस पर वे बहुत रुष्ट थे। मजबूर होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को फिर हब्शा की हिजरत का मश्विरा दिया, लेकिन यह दूसरी हिजरत पहली हिजरत के मुक़ाबले में ज़्यादा परेशानियों और कठिनाइयों से भरी हुई थी, क्योंकि इस बार क़ुरैश पहले ही से चौकन्ना थे और ऐसी किसी कोशिश को विफल करने का संकल्प किए हुए थे, लेकिन मुसलमान उनसे कहीं ज़्यादा मुस्तैद साबित हुए और अल्लाह ने उनके लिए सफ़र आसान बना दिया, चुनांचे वे क़ुरैश की पकड़ में आने से पहले ही हब्श के बादशाह के पास पहुंच गए।

इस बार कुल 82 या 83 मर्दों ने हिजरत की। (हज़रत अम्मार की हिजरत में मतभेद है) और अठारह या उन्नीस औरतों ने।[2] अल्लामा मंसूरपुरी ने पूरे विश्वास के साथ औरतों की तायदाद अठारह लिखी है।[3]

हब्शा के मुहाजिरों के विरुद्ध क़ुरैश का षड्यंत्र

मुश्रिकों को बड़ा दुख था कि मुसलमान अपनी जान और अपना दीन बचाकर एक शांतिपूर्ण जगह पहुंच गए हैं, इसलिए उन्होंने अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को, जो गहरी सूझ-बूझ के मालिक थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे, दूत बनाकर एक अहम मुहिम पर भेजने को सोचा और इन दोनों को नजाशी और बितरीक़ों (दरबारियों) की सेवा में भेंट और उपहार देने के लिए हब्शा रवाना किया। इन दोनों ने पहले हब्शा पहुंचकर बितरीक़ों को उपहार दिए, फिर उन्हें अपनी वे दलीलें बताईं, जिनको आधार बनाकर वे मुसलमानों को हब्शा से निकलवाना चाहते थे। जब बितरीक़ों ने इसे मान लिया कि वे नजाशी

1. ज़ादुल मआद 1/24, 2/44, इब्ने हिशाम 1/364
2. ज़ादुल मआद 1/24,
3. वही, रहमतुल लिल आलमीन

को मुसलमानों के निकाल देने का मश्विरा देंगे तो ये दोनों नजाशी के दरबार में हाज़िर हुए और भेंट-उपहार देकर अपनी बात इस तरह रखी—

'ऐ बादशाह! आपके देश मे हमारे कुछ नासमझ नवजवान भाग आए हैं, उन्होंने अपनी क़ौम का धर्म छोड़ दिया है, लेकिन आपके दीन में भी दाख़िल नहीं हुए हैं, बल्कि एक नया दीन गढ़ लिया है, जिसे न हम जानते हैं, न आप। हमें आपकी सेवा में उन्हीं के बारे में उनके मां-बाप, चचा और कुंबे-क़बीले के सरदारों ने भेजा है। अभिप्राय यह है कि आप इन्हें उनके पास वापस भेज दें, क्योंकि वे लोग उन पर सबसे ऊंची निगाह रखते हैं और उनकी कमज़ोरी और ख़राबी को बेहतर तौर पर समझते हैं।

जब ये दोनों अपना उद्देश्य पेश कर चुके तो बितरीक़ों ने कहा, 'बादशाह सलामत! ये दोनों ठीक ही कह रहे हैं। आप इन जवानों को इन दोनों के सुपुर्द कर दें। ये दोनों इन्हें इनकी क़ौम और इनके देश में वापस पहुंचा देंगे।'

लेकिन नजाशी ने सोचा कि इस विवाद को गहराई में जाकर समझना और उनके तमाम पहलुओं को सुनना-जानना ज़रूरी है। चुनांचे उसने मुसलमानों को बुला भेजा।

मुसलमान यह तै करके उसके दरबार में आए कि हम सच ही बोलेंगे, चाहे नतीजा कुछ भी हो। जब मुसलमान आ गए तो नजाशी ने पूछा—

'यह कौन-सा दीन है जिसकी बुनियाद पर तुम अपनी क़ौम से अलग हो गए? और मेरे धर्म में भी दाख़िल नहीं हुए और न इन समुदायों ही में से किसी के धर्म को अपनाया?'

मुसलमानों के नुमाइंदे हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने कहा—

'ऐ बादशाह! हम ऐसी क़ौम थे, जो अज्ञानता में पड़ी हुई थी। हम बुत पूजते थे, मुरदार खाते थे, कुकर्म करते थे, नातेदारों से नाते तोड़ते थे, पड़ोसियों से दुर्व्यवहार करते थे और हम में से ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा था। हम इसी हालत में थे कि अल्लाह ने हम ही में से एक रसूल भेजा। उसका श्रेष्ठ वंश का होना, उसकी सच्चाई, अमानतदारी और पाकदामनी हमें पहले से मालूम थी। उसने हमें अल्लाह की ओर बुलाया और समझाया कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह को मानें और उसी की इबादत करें और उसके सिवा जिन पत्थरों और बुतों को हमारे बाप-दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें। उसने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्ते-नाते जोड़ने, पड़ोसी से अच्छा व्यवहार करने और कुकर्मों से और ख़ून बहाने से बचने का हुक्म दिया और बेहयाई में पड़ने, झूठ बोलने, यतीम का माल खाने और पाकदामन औरतों पर झूठी तोहमत लगाने से मना किया। उसने

हमें यह भी हुक्म दिया कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें, उसके साथ किसी को शरीक न करें, उसने हमें नमाज़, रोज़ा और ज़कात का हुक्म दिया।'

इसी तरह हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के काम गिनाए, फिर कहा—

'हमने उस पैग़म्बर को सच्चा माना, उस पर ईमान लाए और उसके लाए हुए ख़ुदाई दीन का पालन किया, उसकी पैरवी की, चुनांचे हमने सिर्फ़ अल्लाह की इबादत की, उसके साथ किसी को शरीक नहीं किया और जिन बातों को उस पैग़म्बर ने हराम बताया उन्हें हराम माना और जिनको हलाल बताया, उन्हें हलाल जाना। इस पर हमारी क़ौम हमसे बिगड़ गई, उसने हम पर ज़ुल्म व सितम किया और हमें हमारे दीन से फेरने के लिए फ़िले और सज़ाओं से दो चार किया, ताकि हम अल्लाह की इबादत छोड़कर बुतपरस्ती की ओर पलट जाएं और जिन गन्दी चीज़ों को हलाल समझते थे, उन्हें फिर हलाल समझने लगें। जब उन्होंने हम पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ दिए, जीना दूभर कर दिया, ज़मीन तंग कर दी और हमारे और हमारे दीन के बीच रोक बनकर खड़े हो गए तो हमने आपके देश का रास्ता पकड़ा और दूसरों पर प्रमुखता देते हुए आपकी शरण में रहना पसन्द किया और यह आशा की कि ऐ बादशाह! आपके पास हमारे साथ अन्याय न किया जाएगा।'

नजाशी ने कहा, 'वह पैग़म्बर जो कुछ लाए हैं, उसमें से कुछ तुम्हारे पास है?'

हज़रत जाफ़र ने कहा, 'हां!'

नजाशी ने कहा, 'तनिक मुझे भी पढ़ कर सुनाओ।'

हज़रत जाफ़र ने सूरः मरयम की शुरू की आयतें तिलावत फ़रमाई। नजाशी इतना रोया कि उसकी दाढ़ी भीग गई। नजाशी के तमाम पादरी भी हज़रत जाफ़र की तिलावत सुनकर इतना रोए कि उनकी किताबें भीग गई।

फिर नजाशी ने कहा कि यह कलाम और वह कलाम जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम लेकर आए थे, दोनों एक ही शमादान (ज्योति पुंज) से निकले हुए हैं।

इसके बाद नजाशी ने अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को सम्बोधित करके कहा कि तुम दोनों चले जाओ। मैं इन लोगों को तुम्हारे सुपुर्द नहीं कर सकता और न यहां इनके ख़िलाफ़ कोई चाल चली जा सकती है।

इस हुक्म पर वे दोनों वहां से निकल गए, लेकिन फिर अम्र बिन आस ने अब्दुल्लाह बिन रबीआ से कहा, 'ख़ुदा की क़सम! कल इनके बारे में ऐसी बातें लाऊंगा कि उनकी हरियाली की जड़ काट कर रख दूंगा।'

अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने कहा, नहीं, ऐसा न करना। इन लोगों ने अगरचे हमारे

ख़िलाफ़ कुछ किया है, लेकिन हैं बहरहाल हमारे अपने ही कुंबे-क़बीले के लोग।

मगर अम्र बिन आस अपनी राय पर अड़े रहे।

अगला दिन आया, तो अम्र बिन आस ने नजाशी से कहा, ऐ बादशाह! ये लोग ईसा बिन मरयम के बारे में एक बड़ी बात कहते हैं।

इस पर नजाशी ने मुसलमानों को फिर बुला भेजा। वह पूछना चाहता था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में मुसलमान क्या कहते हैं?

इस बार मुसलमानों को घबराहट हुई, लेकिन उन्होंने तै किया कि सच ही बोलेंगे, नतीजा भले ही कुछ निकले। चुनांचे जब मुसलमान नजाशी के दरबार में हाज़िर हुए और उसने सवाल किया, तो हज़रत जाफ़र रज़ि० ने फ़रमाया—

'हम ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में वही बात कहते हैं, जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए हैं, यानी हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे, उसके रसूल, उसकी रूह और उसका वह कलिमा हैं, जिसे अल्लाह ने कुंवारी पाकदामन हज़रत मरयम अलैहस्सलाम की ओर डाला था।'

इस पर नजाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठाया और बोला, 'ख़ुदा की क़सम! जो कुछ तुमने कहा है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उससे इस तिनके के बराबर भी बढ़कर न थे। इस पर बितरीक़ों ने 'हुंह' की आवाज़ लगाई।

नजाशी ने कहा, 'अगरचे तुम लोग 'हुंह' कहो।'

इसके बाद नजाशी ने मुसलमानों से कहा, 'जाओ, तुम लोग मेरे राज्य में सुख-शान्ति से रहो। जो तुम्हें गाली देगा, उस पर ज़ुर्माना लगाया जाएगा। मुझे गवारा नहीं कि तुम में से मैं किसी आदमी को सताऊं और उसके बदले मुझे सोने का पहाड़ मिल जाए।'

इसके बाद उसने अपने दरबारियों को सम्बोधित करके कहा, 'इन दोनों को इनके उपहार वापस कर दो। मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं। ख़ुदा की क़सम! अल्लाह ने जब मुझे मेरा देश वापस किया था, तो मुझसे कोई रिश्वत नहीं ली थी कि मैं उसकी राह में रिश्वत लूं। साथ ही अल्लाह ने मेरे बारे में लोगों की बात स्वीकार न की थी कि मैं अल्लाह के बारे में लोगों की बात मानूं।'

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि०, जिन्होंने इस घटना का उल्लेख किया है, कहती हैं, इसके बाद वे दोनों अपने भेंट-उपहार लिए बे-आबरू होकर वापस चले गये और हम नजाशी के पास एक अच्छे देश में एक अच्छे पड़ोसी की छत्र-छाया में ठहरे रहे।[1]

---

1. इब्ने हिशाम (संक्षिप्त किया गया) 1/334-338

यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। दूसरे सीरत के रचनाकारों का मत है कि नजाशी के दरबार में हज़रत अम्र बिन आस की हाज़िरी बद्र की लड़ाई के बाद हुई थी। कुछ लोगों ने दोनों में ताल-मेल पैदा करने की यह शक्ल निकाली है कि हज़रत अम्र बिन आस नजाशी के दरबार में मुसलमानों की वापसी के लिए दो बार गए थे, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद की हाज़िरी के ताल्लुक़ से हज़रत जाफ़र रज़ि० और नजाशी के बीच सवाल व जवाब का जो विवरण दिया जाता है, वह लगभग वही है जो इब्ने इस्हाक़ ने हब्शा की हिजरत के बाद की हाज़िरी के सिलसिले में बयान की हैं। फिर इन सवालों के विषयों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि नजाशी के पास यह मामला अभी पहली बार आया था, इसलिए प्रमुखता इस बात को प्राप्त है कि मुसलमानों को वापस लाने की कोशिश केवल एक बार हुई थी और वह हब्शा की हिजरत के बाद थी।

पीड़ा पहुंचाने में तीव्रता और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल की कोशिश

जब मुश्रिक अपनी चाल में सफल न हो सके और हब्शा के मुहाजिरों को वापस लाने में मुंह की खानी पड़ी तो आपा खो बैठे और लगता था कि मारे ग़ुस्से के फट पड़ेंगे, चुनांचे उनकी दरिन्दगी (पशिवकता) और बढ़ गई उनका हाथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक बढ़ने लगा और उनकी गतिविधियों से यह महसूस होने लगा कि वह आपका अन्त करना चाहते हैं, ताकि उनके विचार से जिस फ़िले ने उनकी नींद हराम कर रखी है, उसे जड़ से उखाड़ फेंका जाए।

जहां तक मुसलमानों का ताल्लुक़ है तो अब मक्का में जो मुसलमान बचे-खुचे रह गए थे, वह बहुत ही थोड़े थे और फिर प्रतिष्ठित लोग थे, या किसी बड़े आदमी की पनाह में थे। इसके साथ ही वे अपने इस्लाम को छिपाए हुए भी थे और यथासंभव सरकशों और ज़ालिमों की निगाहों से दूर रहते थे, लेकिन इस सावधानी और बचाव के बावजूद वे ज़ुल्म व जौर और पीड़ा के शिकार बनने से पूरी तरह न बच सके।

जहां तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ताल्लुक़ है तो आप ज़ालिमों की निगाहों के सामने नमाज़ पढ़ते और अल्लाह की इबादत करते थे और ख़ुफ़िया और खुल्लम खुल्ला दोनों तरह अल्लाह के दीन की दावत देते थे। इससे आपको न कोई रोकने वाली चीज़ रोक सकती थी और न मोड़ने वाली चीज़ मोड़ सकती थी, क्योंकि यह अल्लाह की रिसालत के प्रचार का एक हिस्सा

था और इस पर आप उस वक़्त से अमल कर रहे थे जब से अल्लाह का यह हुक्म आया था, 'आपको जो हुक्म दिया जाता है, उसे खुल्लम खुल्ला कीजिए और मुश्रिकों से मुंह फेरे रखिए।'

चुनांचे ऐसी स्थिति में मुश्रिकों के लिए संभव था कि आपसे जब चाहें छेड़-छाड़ कर बैठें। प्रत्यक्ष में कोई चीज़ न थी जो उनके और उनके इरादों के दर्मियान रोक बन सकती। अगर कुछ था तो वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना निजी रौब व दबदबा था या अबू तालिब का ज़िम्मा व एहतराम था या इस बात का डर था कि अगर उन्होंने कोई ग़लत हरकत की तो अंजाम अच्छा न होगा और सारे बनू हाशिम उनके ख़िलाफ़ डट जाएंगे।

मगर उनके दिलों में इन सारी बातों का जैसा असर होना चाहिए था, वह असर बाक़ी न रह गया था और जब से उन्हें यह महसूस हो चला था कि आपकी दावत के सामने उनकी दीनी चौधराहट और मूर्ति पूजा-व्यवस्था टूट-फूट का शिकार हुआ चाहती है, तब से उन्होंने आपसे ओछी हरकतें करने शुरू कर दी थीं। इस संबंध में जो घटनाएं हदीस व सीरत की किताबों में रिवायत की गई हैं और जिनकी गवाही हालात भी देते हैं, वे इसी दौर में घटीं। उनके एक दो नमूने ये हैं कि—

एक दिन अबू लहब का बेटा उतैबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और बोला—

'मैं 'वन्नज्मि इज़ा हवा' और 'सुम-म दना फ़-त-दल्ला' के साथ कुफ़्र करता हूं।'

इसके बाद वह आपको पीड़ा पहुंचाने पर उतर आया। आपका कुरता फाड़ दिया और आपके चेहरे पर थूक दिया। अगरचे थूक आप पर न पड़ा।

इसी मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद-दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस पर अपने कुत्तों में से कोई कुत्ता मुसल्लत कर दे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बद-दुआ क़ुबूल हुई। चुनांचे एक बार उतैबा क़ुरैश के कुछ लोगों के साथ सफ़र में गया। जब उन्होंने शाम देश के नगर ज़रक़ा में पड़ाव डाला, तो रात के वक़्त शेर ने उनका चक्कर लगाया।

उतैबा ने देखते ही कहा, 'हाय! मेरी तबाही! यह अल्लाह की क़सम! मुझे खा जाएगा, जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बद-दुआ दी है। देखो, मैं शाम देश में हूं, लेकिन उसने मक्का में रहते हुए मुझे मार डाला।

सावधानी और रक्षा की दृष्टि से लोगों ने उतैबा को अपने और जानवरों के

घेरे के बीचों-बीच सुलाया, लेकिन रात को शेर सबको फांदता हुआ सीधा उतैबा के पास पहुंचा और पकड़ कर ज़िब्ह कर डाला।[1]

एक बार उक़्बा बिन अबी मुऐत ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गरदन सज्दे की हालत में इस ज़ोर से रौंदी कि मालूम होता था, दोनों आंखें निकल आएंगी।[2]

इब्ने इस्हाक़ की एक लम्बी रिवायत से भी क़ुरैश के दुष्टों के इस इरादे पर रोशनी पड़ती है कि वे नबी सल्ल० के ख़ात्मे के चक्कर में थे, चुनांचे इस रिवायत में बयान किया गया है कि एक बार अबू जहल ने कहा—

'क़ुरैशी भाइयो! आप देखते हैं कि मुहम्मद हमारे धर्म में दोष निकालने, हमारे पुरखों को बुरा-भला कहने, हमारी सूझ-बूझ को घटाने और हमारे उपास्यों का अपमान करने से रुकते नहीं, इसलिए मैं अल्लाह से प्रण कर रहा हूं कि एक बहुत भारी और मुश्किल से उठने वाला पत्थर लेकर बैठूंगा और जब वह सज्दा करेगा, तो उसी पत्थर से उसका सर कुचल दूंगा। अब इसके बाद चाहे तुम लोग मुझको असहाय छोड़ दो, चाहे मेरी रक्षा करो और बनू अब्द मुनाफ़ भी इसके बाद जो चाहें करें।'

लोगों ने कहा, 'नहीं, ख़ुदा की क़सम! हम तुम्हें कभी किसी मामले में असहाय नहीं छोड़ सकते। तुम जो करना चाहते हो, कर गुज़रो।'

सुबह हुई तो अबू जहल वैसा ही एक पत्थर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन्तिज़ार में बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पहले ही की तरह तशरीफ़ लाये और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। क़ुरैश भी अपनी-अपनी मज्लिसों (बैठकों की जगहों) में आ चुके थे और अबू जहल की कार्रवाई देखने के इन्तिज़ार में थे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो अबू जहल ने पत्थर उठाया, फिर आपकी ओर बढ़ा, लेकिन जब क़रीब पहुंचा तो पराजित व्यक्ति की तरह वापस भागा। उसका रंग उड़ रहा था और वह इतना रौब खा गया था कि उसके दोनों हाथ पत्थर पर चिपककर रह गए थे। वह बड़ी मुश्किल से हाथ से पत्थर अलग कर सका।

जहां तक क़ुरैश के दूसरे गुंडों का ताल्लुक़ है, तो उनके दिलों में भी नबी

1. मुख़्तसरुस्सीर, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 135, इस्तीआब, इसाबा, दलाइलुन्नुबुव्व:, अर्रौज़ुल उन्फ़

2. वही, मुख़्तसरुस्सीर, पृ० 113

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ात्मे का ख़्याल बराबर पक रहा था। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से इब्ने इस्हाक़ ने उनका यह बयान नक़्ल किया है कि एक बार मुश्रिक हतीम में जमा थे। मैं भी मौजूद था। मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० का ज़िक्र छेड़ा और कहने लगे—

'इस व्यक्ति के मामले में हमने जैसा सब्र किया है, उसकी मिसाल नहीं। सच तो यह है कि हमने इसके मामले में बहुत ही बड़ी बात पर सब्र किया है।'

यह बातचीत चल ही रही थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सामने आ गए। आपने आते ही पहले हजरे अस्वद को चूमा, फिर तवाफ़ करते हुए मुश्रिकों के पास से गुज़रे। उन्होंने कुछ कहकर लान-तान किया, जिसका प्रभाव मैंने आपके चेहरे पर देखा। इसके बाद आप तीसरी बार गुज़रे, तो मुश्रिकों ने फिर आप पर लान-तान की। अब की बार आप ठहर गए और फ़रमाया—

'क़ुरैश के लोगो ! सुन रहे हो ? उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तुम्हारे पास ज़िब्ह लेकर आया हूं।'

आपके इस इर्शाद ने लोगों को पकड़ लिया। (वे ऐसा चुप हुए कि) मानो हर व्यक्ति के सर पर चिड़िया है, यहां तक कि जो आप पर सबसे ज़्यादा सख़्त था, वह भी बेहतर से बेहतर शब्द जो पा सकता था, उसके द्वारा आपसे रहमत तलब करने लगा, कहता—

'अबुल क़ासिम ! वापस जाइए। खुदा की क़सम ! आप कभी नादान न थे।'

दूसरे दिन क़ुरैश फिर इसी तरह जमा होकर आपका ज़िक्र कर रहे थे कि आप सामने आ गए। देखते ही सब इकट्ठा होकर एक आदमी की तरह आप पर पिल पड़े और आपको घेर लिया। फिर मैंने एक आदमी को देखा कि उसने गले के पास से आपकी चादर पकड़ ली। (और बल देने लगा) अबूबक्र रज़ि० आपके बचाव में लग गए। वह रोते जाते थे और कहते जाते थे—

'क्या तुम लोग एक व्यक्ति को इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है ?'

इसके बाद वे लोग आपको छोड़कर पलट गये।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि यह सबसे बड़ी पीड़ा पहुंचाने वाली बात थी, जो मैंने क़ुरैश को कभी करते हुए देखी।[1] (संक्षिप्त करके लिखा गया)

---

1. इब्ने हिशाम 1/289-290

सहीह बुख़ारी में हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० से उनका बयान रिवायत किया गया है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से सवाल किया कि मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जो सबसे बुरी बद-सुलूकी की थी, आप मुझे उसे विस्तार में बताइए।

उन्होंने कहा कि नबी सल्ल० ख़ाना काबा के क़रीब हतीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुऐत आ गया। उसने आते ही अपना कपड़ा आपकी गरदन में डाल कर बड़ी सख़्ती के साथ आपका गला घोंटा। इतने में अबूबक्र आ पहुंचे और उन्होंने उसके दोनों कंधे पकड़ कर धक्का दिया और उसे नबी सल्ल० से दूर करते हुए फ़रमाया, 'क्या तुम लोग एक आदमी को इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है।'[1]

हज़रत अस्मा रज़ि० की रिवायत में कुछ और विस्तार है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास यह चीख पहुंची कि अपने साथी को बचाओ। वह झट हमारे पास से निकले। उनके सर पर चार चोटियां थीं। वह यह कहते हुए गए कि 'क्या तुम लोग एक व्यक्ति को केवल इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है।' मुश्रिक नबी सल्ल० को छोड़कर अबूबक्र रज़ि० पर पिल पड़े। वह वापस आए तो हालत यह थी कि हम उनकी चोटियों का जो बाल भी छूते थे, वह हमारी (चुटकी) के साथ आता था।[2]

हज़रत हमज़ा रज़ि० का इस्लाम ले आना

मक्का का वातावरण अत्याचार और दमन के इन काले बादलों से गम्भीर हो गया था कि अचानक एक बिजली चमकी और सताए जा रहे लोगों का रास्ता चमक उठा, यानी हज़रत हमज़ा रज़ि० मुसलमान हो गए।

उनके इस्लाम लाने की घटना सन् 06 नबवी के अन्त की है और सही अनुमान यही है कि वह ज़िलहिज्जा के महीने में मुसलमान हुए थे।

उनके इस्लाम लाने की वजह यह है कि एक दिन अबू जहल सफ़ा पहाड़ी के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रा तो आपको पीड़ा पहुंचाई और बुरा-भला कहा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे और कुछ भी न कहा, लेकिन इसके बाद उसने आपके

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ज़िक्र मा लक़ि यन्नबीयु सल्ल० मिनल मुश्रिकीन बि म-क्क-त 1/544
2. मुख़्तसरुस्सीरः शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 113

सर पर एक पत्थर दे मारा, जिससे ऐसी चोट आई कि ख़ून बह निकला। फिर वह ख़ाना काबा के पास क़ुरैश की सभा में जा बैठा।

अब्दुल्लाह बिन जुदआन की एक लौंडी सफ़ा पहाड़ी पर स्थित अपने मकान से यह पूरा दृश्य देख रही थी। हज़रत हमज़ा कमान लटकाए शिकार से वापस आए तो उसने उनसे अबू जहल की सारी हरकत कह सुनाई। हज़रत हमज़ा गुस्से से भड़क उठे।

यह क़ुरैश के सबसे ताक़तवर और मज़बूत जवान थे। क़िस्सा सुनकर एक क्षण के लिए भी नहीं रुके। दौड़ते हुए और यह तहैया करते हुए आए कि ज्यों ही अबू जहल का सामना होगा, उसकी मरम्मत कर देंगे, चुनांचे मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर सीधे उसके सर पर जा खड़े हुए और बोले—

'ओ अपने चूतड़ से पाद निकालने वाले! तू मेरे भतीजे को गाली देता है, हालांकि मैं भी उसी के दीन पर हूं।'

इसके बाद कमान से इस ज़ोर की मारी कि उसके सर पर बड़ा घाव हो गया। इस पर अबू जहल के क़बीले बनू मख़्ज़ूम और हज़रत हमज़ा रज़ि० के क़बीले बनू हाशिम के लोग एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़क उठे, लेकिन अबू जहल ने यह कहकर उन्हें चुप करा दिया कि अबू अम्मारा को जाने दो। मैंने वाक़ई उसके भतीजे को बहुत बुरी गाली दी थी।[1]

शुरू में हज़रत हमजा का इस्लाम मात्र इस भावना के साथ था कि उनके रिश्तेदार की तौहीन क्यों की गई, लेकिन फिर अल्लाह ने उनका सीना खोल दिया और उन्होंने इस्लाम का दामन मज़बूती से थाम लिया[2] और मुसलमानों ने उनकी वजह से बड़ी शक्ति महसूस की।

हज़रत उमर रज़ि० का इस्लाम लाना

अत्याचार और दमन के इन काले बादलों में एक और बिजली चमकी, जिसकी चमक पहले से ज़ोरदार थी। यानी हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए।

उनके इस्लाम लाने की घटना सन् 06 नबवी की है।[3] वह हज़रत हमज़ा

---

1. इब्ने हिशाम 1/291-292
2. इसका अन्दाज़ा मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह में उल्लिखित एक रिवायत से होता है, देखिए पृ० 101
3. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी, पृ० 11

रज़ि० के सिर्फ़ तीन दिन बाद मुसलमान हुए थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके ईमान लाने की दुआ की थी।

चुनांचे इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत की है और इसे सहीह भी क़रार दिया है। इसी तरह तबरानी ने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० और हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो व्यक्ति तेरे नज़दीक अधिक प्रिय है, उसके ज़रिए से इस्लाम को ताक़त पहुंचा।'

(अल्लाह ने यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए) अल्लाह के नज़दीक इन दोनों में अधिक प्रिय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने की तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से यह बात उभर कर सामने आती है कि उनके दिल में इस्लाम धीरे-धीरे उतरा। उचित मालूम होता है कि इन रिवायतों का सार प्रस्तुत करने से पहले हज़रत उमर रज़ि० के स्वभाव, विचारों और भावनाओं की ओर भी संक्षेप में संकेत कर दिया जाए।

हज़रत उमर रज़ि० अपनी तेज़ी और सख़्ती के लिए मशहूर थे। मुसलमानों ने लंबे समय तक उनके हाथों तरह-तरह की सख़्तियां झेली थीं। ऐसा लगता है कि उनके भीतर उनकी अपनी एक दूसरे से टकराने वाली भावनाएं आपस में जूझ रही थीं। चुनांचे वह एक ओर तो बाप-दादा की गढ़ी हुई रस्मों का बड़ा आदर करते थे, शराब पीते थे और खेल-तमाशे के शौक़ीन थे, लेकिन दूसरी ओर वह ईमान व अक़ीदे की राह में मुसलमानों की दृढ़ता और विपदाओं को झेलने की उनकी सहन-शक्ति की भी सराहना करते थे। फिर उनके भीतर सोचने-समझने वालों की तरह प्रश्नों का एक तांता था जो रह-रहकर उभरा करता था कि इस्लाम जिस बात की दावत दे रहा है, शायद वही अधिक श्रेष्ठ और पवित्र है। इसीलिए उनकी मनोदशा (दम में माशा और दम में तोला की-सी) थी कि अभी भड़के और अभी ढीले पड़ गए।

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने के बारे में मिलने वाली तमाम रिवायतों का सार यह है कि—

एक दिन उन्हें घर से बाहर रात बितानी पड़ी। वह हरम तशरीफ़ लाए और

1. तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, मनाक़िब अबी हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब 2/209.

ख़ाना काबा के परदे में घुस गए। उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे और सूरः अल-हाक़्क़ा की तिलावत फ़रमा रहे थे। हज़रत उमर क़ुरआन सुनने लगे और उसे सुनकर चकित रह गए।

उनका बयान है कि मैंने अपने जी में कहा, ख़ुदा की क़सम! यह तो कवि है, जैसा कि क़ुरैश कहते हैं। लेकिन इतने में आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'यह एक बुज़ुर्ग रसूल का क़ौल है, यह किसी कवि की कविता नहीं है, तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।'

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने अपने जी में कहा, ओहो यह तो काहिन है, लेकिन आपने इतने में यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'यह किसी काहिन का क़ौल भी नहीं, तुम लोग कम ही नसीहत क़ुबूल करते हो। यह अल्लाह रब्बुल आलमीन की ओर से उतारा गया है।' (आख़िर सूरः तक)

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उस वक़्त मेरे दिल में इस्लाम घुस गया।[1]

यह पहला मौक़ा था कि हज़रत उमर रज़ि० के दिल में इस्लाम का बीज पड़ा, लेकिन अभी उनके भीतर अज्ञानतापूर्ण विचार, पक्षपात और पुरखों के धर्म की महानता इतरी गहरी बैठी हुई थी कि वह आगे नहीं बढ़ने देती थी और उनका इस्लाम-विरोध चल रहा था।

उनके स्वभाव की सख़्ती और नबी सल्ल० के प्रति वैर-भाव का यह हाल था कि एक दिन ख़ुद नबी सल्ल० का काम तमाम करने की नीयत से तलवार लेकर निकल पड़े, लेकिन अभी रास्ते ही में थे कि नुऐम बिन अब्दुल्लाह अन-नहाम अदवी[2] से या बनी ज़ोहरा[3] या बनी मख़्ज़ूम[4] के किसी आदमी से मुलाक़ात हो

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी पृ० 6, इब्ने इस्हाक़ ने अता और मुजाहिद से भी लगभग यही बात नक़ल की है। अलबत्ता इसका आख़िरी टुकड़ा उससे भिन्न है। देखिए सीरत इब्ने हिशाम 1/346, 348 और ख़ुद इब्ने जौज़ी ने भी हज़रत जाबिर रज़ि० से इसी के क़रीब-क़रीब रिवायत नक़ल की है, लेकिन इसका आख़िरी हिस्सा भी इससे भिन्न है। देखिए तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 9-10
2. यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। देखिए इब्ने हिशाम 1/344
3. यह हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी, पृ० 10
4. यह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है, देखिए मुख़्तसरुस्सीरः वही, पृ० 102

गई। उसने तैवर देखकर पूछा—

'उमर! कहां का इरादा है?'

उन्होंने कहा, 'मुहम्मद को क़त्ल करने जा रहा हूं।'

उसने कहा, 'मुहम्मद को क़त्ल करके बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से कैसे बच सकोगे?'

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, 'मालूम होता है तुम भी अपना पिछला धर्म छोड़कर विधर्मी हो चुके हो?'

उसने कहा, उमर! एक विचित्र बात न बता दूं? तुम्हारी बहन और बहनोई भी तुम्हारा धर्म छोड़कर विधर्मी हो चुके हैं।

यह सुनकर उमर ग़ुस्से से बे-क़ाबू हो गए और सीधे बहन-बहनोई का रुख़ किया। वहां उन्हें हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त सूरः ताहा पर सम्मिलित एक किताब पढ़ा रहे थे और क़ुरआन पढ़ाने के लिए वहां आना-जाना हज़रत ख़ब्बाब का रोज़ाना का काम था।

जब हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की आहट सुनी, तो घर के अन्दर छिप गए। उधर हज़रत उमर की बहन फ़ातिमा ने किताब छिपा दी, लेकिन हज़रत उमर घर के क़रीब पहुंच कर हज़रत ख़ब्बाब की क़िरात सुन चुके थे, चुनांचे पूछा कि यह कैसी धीमी-धीमी सी आवाज़ थी, जो तुम लोगों के पास मैंने सुनी थी?

उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं, बस हम आपस में बातें कर रहे थे।

हज़रत उमर ने कहा, शायद तुम दोनों विधर्मी हो चुके हो?

बहनोई ने कहा, अच्छा उमर! यह बताओ, अगर हक़ तुम्हारे धर्म के बजाए किसी और धर्म में हो तो?

हज़रत उमर का इतना सुनना था कि अपने बहनोई पर चढ़ दौड़े और उन्हें बुरी तरह कुचल दिया।

उनकी बहन ने लपक कर उन्हें अपने शौहर से अलग किया तो बहन को ऐसा चांटा मारा कि चेहरा ख़ून से भर गया।

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि उनके सर में चोट आई।

बहन ने गुस्से में चीख़ कर कहा, उमर! अगर तेरे दीन के बजाए दूसरा ही दीन हक़ पर हो तो? मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देती हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

यह सुनकर हज़रत उमर के चेहरे पर निराशा छा गई और उन्हें अपनी बहन के चेहरे पर ख़ून देखकर लज्जा भी आने लगी, कहने लगे—

'अच्छा, यह किताब जो तुम्हारे पास है, तनिक मुझे भी पढ़ने को दो।'

बहन ने कहा, तुम नापाक हो। इस किताब को सिर्फ़ पाक लोग ही छू सकते हैं। उठो, नहा लो।

हज़रत उमर ने उठ कर स्नान किया, फिर किताब ली और बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम० पढ़ी और कहने लगे—

'ये तो बड़े पवित्र नाम हैं।'

इसके बाद ताहा से 'इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अना फ़अबुदनी व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री० तक पढ़ा। कहने लगे—

'यह तो बड़ा अच्छा और बड़ा सम्माननीय कलाम है। मुझे मुहम्मद का पता बताओ।'

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ये वाक्य सुनकर बाहर आ गए। कहने लगे—

'उमर! ख़ुश हो जाओ। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वीरवार को तुम्हारे बारे में जो दुआ की थी (कि ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल बिन हिशाम के ज़रिए इस्लाम को शक्ति पहुंचा) यह वही है और उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० सफ़ा पहाड़ी के पास वाले मकान में तशरीफ़ रखते हैं।'

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी तलवार खींच ली और उस घर के पास आकर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक आदमी ने उठकर दरवाज़े की दराड़ से झांका तो देखा कि उमर तलवार नंगी किए मौजूद हैं। लपक कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी और सारे लोग सिमट कर इकट्ठा हो गए।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने पूछा, क्या बात है?

लोगों ने कहा, उमर हैं।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने कहा, बस, उमर हैं, दरवाज़ा खोल दो। अगर वह भली नीयत से आया है, तो उसे हम भलाई देंगे और अगर कोई बुरा इरादा लेकर आया है, तो हम उसी की तलवार से उसका काम तमाम कर देंगे।

उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्दर तशरीफ़ रखते थे, आप पर वह्य नाज़िल हो रही थी। वह्य नाज़िल हो चुकी तो हज़रत उमर के पास तशरीफ़ लाए। बैठक में उनसे मुलाक़ात हुई। आपने उनके कपड़े और तलवार का

परतला समेट कर पकड़ा और सख़्ती से झटकते हुए फ़रमाया, उमर ! क्या तुम उस वक़्त तक बाज़ नहीं आओगे, जब तक कि अल्लाह तुम पर वैसी ही ज़िल्लत और रुसवाई और शिक्षाप्रद सज़ा न उतार दे, जैसी वलीद बिन मुग़ीरह रज़ि० पर नाज़िल हो चुकी है। ऐ अल्लाह ! यह उमर बिन ख़त्ताब है। ऐ अल्लाह ! इस्लाम को उमर बिन खत्तब के ज़रिए ताक़त और इज़्ज़त अता फ़रमा।

आपके इस इर्शाद के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम स्वीकार करते हुए कहा—

'मैं गवाही देता हूं कि यक़ीनन अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और यक़ीनी तौर पर आप अल्लाह के रसूल हैं।'

यह सुनकर घर के भीतर मौजूद सहाबा रज़ि० ने इस ज़ोर से तक्बीर कही कि मस्जिदे हराम वालों को सुनाई पड़ी।[1]

मालूम है कि हज़रत उमर रज़ि० की ताक़त और दबदबे का हाल यह था कि कोई उनसे मुक़ाबले की हिम्मत न करता था, इसलिए उनके मुसलमान हो जाने से मुश्रिकों में कुहराम मच गया और उन्हें बड़ी ज़िल्लत व रुसवाई महसूस हुई।

दूसरी ओर इनके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बड़ी इज़्ज़त, ताक़त, पद-प्रतिष्ठा, और हर्ष-प्रसन्नता हुई। चुनांचे इब्ने इस्हाक़ ने अपनी सनद से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान नक़ल किया है कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मैंने सोचा कि मक्के का कौन आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा और सबसे सख़्त दुश्मन है? फिर मैंने जी ही जी में कहा, यह अबू जहल है। इसके बाद मैंने उसके घर जाकर उसका दरवाज़ा खटखटाया। वह बाहर आया, देखकर बोला—

'स्वागत है, स्वागत है, कैसे आना हुआ?'

मैंने कहा, 'तुम्हें यह बताने आया हूं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुका हूं और जो कुछ वह लाए हैं, उसकी तस्दीक़ कर चुका हूं।'

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि (यह सुनते ही) उसने मेरे सामने से रवाज़ा बन्द कर लिया और बोला—

'अल्लाह तेरा बुरा करे और जो कुछ तू लेकर आया है, उसका भी बुरा करे।'[2]

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 7-10, 11, सीरत बिन हिशाम 1/343-346
2. इब्ने हिशाम 1/349-350

इमाम इब्ने जौज़ी ने हज़रत उमर रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है कि जब कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाता तो लोग उसके पीछे पड़ जाते, उसे मारते-पीटते और वह भी उन्हें मारता, इसलिए जब मैं मुसलमान हुआ तो अपने मामूं आसी बिन हाशिम के पास गया और उसे ख़बर दी। वह घर के अन्दर घुस गया, फिर क़ुरैश के एक बड़े आदमी के पास गया, (शायद अबू जहल की ओर इशारा है) और उसे ख़बर दी, वह भी घर के अन्दर घुस गया।[1]

इब्ने हिशाम और इब्ने जौज़ी का बयान है कि जब हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो जमील बिन मोमर जुमही के पास गए। यह व्यक्ति किसी बात का ढोल पीटने में पूरे क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मशहूर था। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बताया कि वह मुसलमान हो गए हैं।

उसने सुनते ही बड़ी ऊंची आवाज़ में चिल्ला कर कहा कि ख़त्ताब का बेटा बेदीन (विधर्मी) हो गया है।

हज़रत उमर रज़ि० उसके पीछे ही थे, बोले—

'यह झूठ कहता है। मैं मुसलमान हो गया हूं।'

बहरहाल लोग हज़रत उमर रज़ि० पर टूट पड़े और मार-पीट शुरू हो गई। लोग हज़रत उमर रज़ि० को मार रहे थे और हज़रत उमर रज़ि० लोगों को मार रहे थे, यहां तक कि सूरज सर पर आ गया और हज़रत उमर थक कर बैठ गये। लोग सर पर सवार थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा—

'जो बन पड़े, कर लो। ख़ुदा की क़सम! अगर हम लोग तीन सौ की तायदाद में होते तो फिर मक्के में या तो तुम ही रहते या हम ही रहते।'[2]

इसके बाद मुश्रिकों ने इस इरादे से हज़रत उमर रज़ि० के घर पर हल्ला बोल दिया कि उन्हें जान से मार डालें। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि० ख़ौफ़ की हालत में घर के भीतर थे कि इस बीच अबू अम्र आस बिन वाइल सह्मी आ गया। वह धारीदार यमनी चादर का जोड़ा और रेशमी गोटे से सजा हुआ कुरता पहने हुए था। उसका ताल्लुक़ क़बीला सह्म से था और यह क़बीला अज्ञानता-युग में हमारा मित्र था। उसने पूछा, क्या बात है?

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 8
2. वही, पृ० 8, इब्ने हिशाम 1/348-349, इब्ने हिब्बान 9/16, अल मोजमुल अवसत, तबरानी 2/172 (हदीस न० 13)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं मुसलमान हो गया हूं। इसलिए आपकी क़ौम मुझे क़त्ल करना चाहती है।

आस ने कहा, यह संभव नहीं।

आस की बात सुनकर मुझे सन्तोष हो गया।

इसके बाद आस वहां से निकला और लोगों से मिला। उस वक़्त स्थिति यह थी कि घाटी में भीड़ की भीड़ जमा हो रही थी। आस ने उनसे पूछा, 'क्या इरादा है? क्यों जमा हो रहे हैं? कहां जाना चाहते हैं?'

लोगों ने बताया, यही ख़त्ताब के बेटे (उमर) की खोज है। वह बे-दीन हो गया है न!

आस ने कहा, वहां जाने की कोई ज़रूरत नहीं।

यह सुनते ही लोग वापस अपने घरों को पलट गये।[1]

इब्ने इस्हाक़ की एक रिवायत में है कि अल्लाह की क़सम, ऐसा लगता था, मानो वे लोग एक कपड़ा थे, जिसे उसके ऊपर से झटक कर फेंक दिया गया।[2]

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने पर यह हालत तो मुश्रिकों की हुई थी, बाक़ी रहे मुसलमान तो उनके हालात का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि मुजाहिद ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से मालूम किया कि किस वजह से आपकी उपाधि 'फ़ारूक़' हुई?

तो उन्होंने कहा—

'मुझसे तीन दिन पहले हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान हुए।'

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उनके इस्लाम लाने की घटना बता कर अन्त में कहा कि फिर जब मैं मुसलमान हुआ, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम हक़ (सत्य) पर नहीं हैं, भले ही ज़िंदा रहें या मरें?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग हक़ पर हो, चाहे ज़िंदा रहो, चाहे मौत के शिकार हो जाओ।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि तब मैंने कहा कि फिर छिपना कैसा? उस ज़ात की क़सम, जिसने हक़ के साथ आपको भेजा है, हम ज़रूर बाहर निकलेंगे।

चुनांचे हम दो लाइनों में आपको साथ लेकर बाहर आए। एक लाइन में हमज़ा थे और एक में मैं था। हमारे चलने से चक्की के आटे की तरह

---

1. सहीह बुख़ारी, इस्लाम, उमर बिन ख़त्ताब 1/545
2. इब्ने हिशाम 1/349

हल्की-हल्की धूल उड़ रही थी, यहां तक कि हम मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए।

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि क़ुरैश ने मुझे और हमज़ा को देखा तो उनके दिलों पर ऐसी चोट लगी कि अब तक न लगी थी। उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मेरी उपाधि 'फ़ारूक़' रख दिया।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० का इर्शाद है कि हम ख़ाना काबा के पास नमाज़ पढ़ने की ताक़त न रखते थे, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपना लिया।[2]

हज़रत सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो इस्लाम परदे से बाहर आया, उसकी खुल्लम खुल्ला दावत दी गई। हम घेरा बना कर बैतुल्लाह के चारों ओर बैठे, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और जिसने हम पर सख़्ती की, उससे बदला लिया और उसके कुछ अत्याचारों का जवाब दिया।[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब से हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपनाया, तब से हम बराबर ताक़तवर और इज़्ज़तदार रहे।[4]

क़ुरैश का नुमाइन्दा अल्लाह के रसूल सल्ल० के दरबार में

इन दोनों महान योद्धाओं यानी हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुसलमान हो जाने के बाद दमन के बादल छटने शुरू हुए और मुसलमानों पर अत्याचार के जो पहाड़ तोड़े जा रहे थे, उसकी जगह सूझ-बूझ ने लेनी शुरू की। चुनांचे मुश्रिकों ने यह कोशिश की कि इस दावत से नबी का जो मक़्सद और मंशा हो सकता है, उसे जुटाने की बात कह के आपको आपके प्रचार-प्रसार से रोकने की सौदेबाज़ी की जाए, लेकिन उन बेचारों को पता न था कि यह पूरी सृष्टि, जिसमें सूरज उगता है, आपकी दावत के मुक़ाबले में एक तिनके की हैसियत भी नहीं रखती। इसलिए उन्हें अपनी योजना में बुरी तरह विफल होना पड़ा।

इब्ने इस्हाक़ ने यजीद बिन ज़ियाद के वास्ते से मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी का

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्नुल जौज़ी, पृ० 6-7
2. मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 103
3. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्नुल जौज़ी, पृ० 13
4. सहीह बुख़ारी : बाब इस्लामु उमर बिन ख़त्ताब 1/545

यह बयान नक़ल किया है कि मुझे बताया गया कि उत्बा बिन रबीआ ने, जो क़ौम का सरदार था, एक दिन क़ुरैश की एक सभा में कहा और उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में एक जगह अकेले बैठे हुए थे कि—

'क़ुरैश के लोगो! क्यों न मैं मुहम्मद के पास जाकर उनसे बात करूं और उनके सामने कुछ बातें रखूं, हो सकता है वह कोई चीज़ क़ुबूल कर लें, तो जो कुछ वह क़ुबूल करेंगे, उसे देकर हम उन्हें अपने विरोध से रोके रखेंगे।'

(यह उस वक़्त की बात है, जब हज़रत हमज़ा मुसलमान हो चुके थे और मुश्रिकों ने यह देख लिया था कि मुसलमानों की तायदाद बराबर बढ़ती ही जा रही है।)

मुश्रिकों ने कहा, अबुल वलीद! आप जाइए और उनसे बात कीजिए।

इसके बाद उत्बा उठा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर बैठ गया, फिर बोला—

'हमारी क़ौम में तुम्हारा जो पद और स्थान है और तुम्हारा जो श्रेष्ठ वंश है, वह तुम्हें मालूम ही है और अब तुम अपनी क़ौम में एक बड़ा मामला लेकर आए हो, जिसकी वजह से तुमने उनके समाज में फूट डाल दी, उनकी सोच को मूर्खता बता दी। उनके उपास्यों और उनके दीन (धर्म) में दोष निकाले और उनके जो बाप-दादा गुज़र चुके हैं, उन्हें 'काफ़िर' ठहरा दिया, इसलिए मेरी बात सुनो। मैं तुमसे कुछ बातें कह रहा हूं, उन पर सोचो, हो सकता है कि कोई बात मान लो।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबुल वलीद! कहो, मैं सुनूंगा।

अबुल वलीद ने कहा, भतीजे! यह मामला जिसे तुम लेकर आए हो, अगर तुम इससे यह चाहते हो कि माल हासिल करो, तो हम तुम्हारे लिए इतना माल जमा किए देते हैं कि तुम हम में सबसे ज़्यादा मालदार हो जाओ और अगर तुम यह चाहते हो कि पद-प्रतिष्ठा मिले, तो हम तुम्हें अपना सरदार बनाए लेते हैं, यहां तक कि तुम्हारे बिना किसी मामले का फ़ैसला न करेंगे, और अगर तुम चाहते हो कि बादशाह बन जाओ, तो हम तुम्हें अपना बादशाह बनाए लेते हैं और अगर यह जो तुम्हारे पास आता है, कोई जिन्न-भूत है, जिसे तुम देखते हो, लेकिन अपने आप से उसे दूर नहीं कर सकते, तो हम तुम्हारे लिए इसका इलाज खोजे देते हैं और इस सिलसिले में हम अपना इतना माल ख़र्च करने को तैयार हैं कि तुम स्वास्थ्य प्राप्त कर सको, क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन्न-भूत इंसान पर ग़ालिब आ जाता है और उसका इलाज करना पड़ता है।'

उत्बा ये बातें करता रहा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते रहे। जब वह कह चुका, तो आपने फ़रमाया—

'अबुल वलीद ! तुम कह चुके ?'

उसने कहा, 'हां'

आपने फ़रमाया, 'अच्छा, अब मेरी सुनो।'

उसने कहा, 'ठीक है, सुनूंगा।'

आपने फ़रमाया—

'हामीम, यह रहमान व रहीम की ओर से उतारी हुई ऐसी किताब है, जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी गई हैं—अरबी क़ुरआन उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोगों ने मुख मोड़ा और वे सुनते नहीं। कहते हैं कि जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो, उसके लिए हमारे दिलों पर परदा पड़ा हुआ है।. . .'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे पढ़ते जा रहे थे। और उत्बा अपने दोनों हाथ पीछे ज़मीन पर टेके चुपचाप सुनता जा रहा था। जब आप सज्दे की आयत पर पहुंचे तो आपने सज्दा किया, फिर फ़रमाया—

'अबुल वलीद ! तुम्हें जो कुछ सुनना था, सुन चुके, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।'

उत्बा उठा और सीधा अपने साथियों के पास आया।

उसे आता देखकर मुश्रिकों ने आपस में एक दूसरे से कहा, ख़ुदा की क़सम ! अबुल वलीद तुम्हारे पास वह चेहरा लेकर नहीं आ रहा है जो चेहरा लेकर गया था।

फिर जब अबुल वलीद आकर बैठ गया, तो लोगों ने पूछा, अबुल वलीद ! पीछे की क्या ख़बर है ?

उसने कहा, 'पीछे की ख़बर यह है कि मैंने एक ऐसा कलाम सुना है कि वैसा कलाम, ख़ुदा की क़सम ! मैंने कभी नहीं सुना। ख़ुदा की क़सम ! वह न कविता है, न जादू, न कहानत। क़ुरैश के लोगो ! मेरी बात मानो और इस मामले को मुझ पर छोड़ दो। (मेरी राय यह है कि) उस व्यक्ति को उसके हाल पर छोड़ दो कि अलग-थलग बैठे रहो। ख़ुदा की क़सम ! मैंने उसका जो कथन सुना है, उससे कोई बड़ी घटना घटित होकर रहेगी। फिर अगर उस व्यक्ति को अरब ने मार डाला, तो तुम्हारा काम दूसरों के ज़रिए अंजाम पा चुका होगा और अगर यह व्यक्ति अरब पर छा गया तो उसकी बादशाही तुम्हारी बादशाही और उसकी

इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त होगी और उसका वजूद सबसे बढ़कर तुम्हारे लिए बेहतरी की वजह होगा।'

लोगों ने कहा, अबुल वलीद ! ख़ुदा की क़सम, तुम पर भी उसकी ज़ुबान का जादू चल गया।

उत्बा ने कहा, उस व्यक्ति के बारे में मेरी राय यही है, अब तुम्हें जो ठीक मालूम हो, करो।[1]

एक दूसरी रिवायत में यह उल्लेख है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब तिलावत शुरू की तो उत्बा चुपचाप सुनता रहा। जब आप अल्लाह के इस कथन पर पहुंचे—

'पस अगर वे मुंह फेरें तो तुम कह दो कि मैं तुम्हें आद व समूद की कड़क जैसी एक कड़क के ख़तरे से सचेत कर रहा हूं।'

तो उत्बा थर्रा कर खड़ा हो गया और यह कहते हुए अपना हाथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह पर रख दिया कि मैं आपको अल्लाह का और नातेदारी का वास्ता देता हूं (कि ऐसा न करें)। उसे ख़तरा था कि कहीं यह डरावा आन न पड़े। इसके बाद वह क़ौम के पास गया और ऊपर लिखी बातें हुईं।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ुरैश के सरदारों की बात-चीत

उत्बा की उपरोक्त पेशकश का जिस ढंग से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया था, उससे क़ुरैश की आशाएं पूरे तौर पर ख़त्म नहीं हुई थीं, क्योंकि आपके उत्तर में उनकी पेशकश को ठुकराने या क़ुबूल करने की बात स्पष्ट न थी, बस आपने कुछ आयतों की तिलावत कर दी थी, जिन्हें उत्बा पूरे तौर पर न समझ सका था और जहां से आया था, वहीं वापस चला गया था, इसलिए क़ुरैश ने आपस में फिर मश्विरा किया। मामले के तमाम पहलुओं पर नज़र दौड़ाई और तमाम संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। इसके बाद एक दिन सूरज डूबने के बाद काबे के पास जमा हुए और अल्लाह के रसूल सल्ल० को बुला भेजा। आप ख़ैर (भलाई) की उम्मीद लिए हुए जल्दी में तशरीफ़ लाए। जब उनके बीच में बैठ गए तो उन्होंने वैसी ही बातें कहीं जैसी

---

1. इब्ने हिशाम 1/293-294
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर 6/159, 160, 161

उत्बा से कही थीं और वही पेशकश की जो उत्बा ने की थी, शायद उनका विचार रहा हो कि बहुत संभव है कि उत्बा के पेशकश करने से आपको पूरा सन्तोष न हुआ हो, इसलिए जब सारे सरदार मिलकर इस पेशकश को दोहराएंगे तो आपको सन्तोष हो जाएगा और आप उसे क़ुबूल कर लेंगे, मगर आप सल्ल० ने फ़रमाया—

'मेरे साथ यह बात नहीं जो आप लोग कह रहे हैं। मैं आप लोगों के पास जो कुछ लेकर आया हूं, वह इसलिए नहीं लेकर आया हूं कि मुझे आपका माल चाहिए या आपके अन्दर शरफ़ चाहिए या आप पर शासन करना चाहता हूं नहीं, बल्कि मुझे अल्लाह ने आपके पास पैग़म्बर बनाकर भेजा है, मुझ पर अपनी किताब उतारी है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं आपको ख़ुशख़बरी दूं और डराऊं, इसलिए मैंने आप लोगों तक अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया, आप लोगों को नसीहत कर दी। अब अगर आप लोग मेरी लाई हुई बात क़ुबूल करते हैं, तो यह दुनिया और आख़िरत में आप लोगों का नसीब और अगर रद्द करते हैं तो मैं अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा, यहां तक कि वह मेरे और आपके बीच फ़ैसला फ़रमा दे।'

इस जवाब के बाद उन्होंने एक दूसरा पहलू बदला, कहने लगे, आप अपने रब से सवाल करेंगे कि वह हमारे पास से उन पहाड़ों को हटा कर खुला हुआ मैदान बना दे और उसमें नदियां बहा दे और हमारे मुर्दों, मुख्य रूप से क़ुसई बिन किलाब को ज़िंदा कर लाए। अगर वह आपको सच्चा कर दिखाएं तो हम भी ईमान लाएंगे। आपने उनकी इस बात का भी वही जवाब दिया।

इसके बाद उन्होंने एक तीसरा पहलू बदला। कहने लगे, आप अपने रब से सवाल करें कि वह एक फ़रिश्ता भेज दे, जो आपकी पुष्टि करे और जिससे हम आपके बारे में रुजू भी कर सकें और यह भी सवाल करें कि आपके लिए बाग़ हों, ख़ज़ाने हों और सोने-चांदी के महल हों। आपने इस बात का भी वही जवाब दिया।

इसके बाद उन्होंने एक चौथा पहलू बदला, कहने लगे कि अच्छा, तो आप हम पर अज़ाब ही ला दीजिए और आसमान का कोई टुकड़ा ही गिरा दीजिए, जैसा कि आप कहते और धमकियां देते रहते हैं।

आपने फ़रमाया, इसका अख़्तियार अल्लाह को है, वह चाहे तो ऐसा कर सकता है। उन्होंने कहा, क्या आपके रब को मालूम था कि हम आपके साथ बैठेंगे, आपसे सवाल व जवाब करेंगे और आपसे मांग करेंगे कि वह आपको सिखा देता कि आप हमें क्या जवाब देंगे और अगर हमने आपकी बात न मानी

तो वह हमारे साथ क्या करेगा?

फिर आख़िर में उन्होंने सख़्त धमकी दी। कहने लगे, सुन लो! जो कुछ कर चुके हो, उसके बाद हम तुम्हें यों ही नहीं छोड़ देंगे, बल्कि या तो तुम्हें मिटा देंगे या ख़ुद मिट जाएंगे। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ गए और अपने घर वापस आ गए। आपको ग़म व अफ़सोस था कि जो आशाएं आपने लगा रखी थी, वह पूरी न हुई।[1]

अबू जहल, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल की स्कीम बनाता है

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के पास से उठकर वापस तशरीफ़ ले गए तो अबू जह्ल ने उन्हें सम्बोधित करके पूरे दंभ व अभिमान के साथ कहा—

क़ुरैशी भाइयो! आप देख रहे हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे दीन में दोष निकालने, हमारे पुरखों को बुरा-भला कहने, हमारी बुद्धिमत्ता को हलका करने और हमारे माबूदों (उपास्यों) को अपमानित करने से बाज़ नहीं आता, इसलिए मैं अल्लाह से प्रतिज्ञा करता हूं कि एक बहुत भारी और मुश्किल से उठने वाला पत्थर लेकर बैठूंगा और जब वह सज्दा कर लेगा, तो उस पत्थर से उसका सर कुचल दूंगा। अब इसके बाद चाहे आप लोग मुहम्मद को निःसहाय छोड़ दें, चाहे मेरी रक्षा करें और बनू अब्दे मुनाफ़ भी इसके बाद जो चाहे करें।

लोगों ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम तुम्हें कभी किसी मामले में बे-यार व मददगार नहीं छोड़ सकते। तुम जो कुछ करना चाहो, कर गुज़रो। चुनांचे सुबह हुई तो अबू जह्ल वैसा ही एक पत्थर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिज़ार में बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नित्य प्रति की तरह तशरीफ़ लाए और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे, क़ुरैश भी अपनी-अपनी मज्लिसों में आ चुके थे और अबू जह्ल की कार्रवाई देखने के इन्तिज़ार में थे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो अबू जह्ल ने पत्थर उठाया, फिर आपकी तरफ़ बढ़ा, लेकिन जब क़रीब पहुंचा पराजय का मुंह देखने वाले की

---

1. रिवायत इब्ने इस्हाक़ का सार (इब्ने हिशाम 1/295-298) व इब्ने जरीर व इब्नुल मुन्ज़िर व इब्ने अबी हातिम (अद्दुर्रुल मंसूर 4/365, 366)

तरह वापस भागा। उसका रंग उतरा हुआ था, वह इतना आतंकित था कि उसके दोनों हाथ पत्थर पर चिपक कर रह गए थे। वह बड़ी मुश्किल से हाथ से पत्थर फेंक सका। इधर क़ुरैश के लोग उठकर उसके पास आए और कहने लगे, अबुल हकम! तुम्हें क्या हो गया है? उसने कहा, मैंने रात जो बात कही थी, वही करने जा रहा था, लेकिन जब उसके क़रीब पहुंचा तो एक ऊंट आड़े आ गया। अल्लाह की क़सम! मैंने कभी किसी ऊंट की वैसी खोपड़ी, वैसी गरदन और वैसे दांत देखे ही नहीं। वह मुझे खा जाना चाहता था।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं, मुझे बताया गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। अगर अबू जह्ल क़रीब आता तो उसे धड़ पकड़ते।[1]

सौदेबाज़ियां और चालें

जब क़ुरैश धन-धौंस-धमकी से मिली-जुली अपनी बातों में असफल हो गए और अबू जह्ल को चाल, बदमाशी और क़त्ल के इरादे में मुंह की खानी पड़ी तो क़ुरैश में एक स्थाई हल तक पहुंचने का चाव पैदा हुआ, ताकि जिस 'मुश्किल' में वे पड गए थे, उससे निकल सकें। इधर उन्हें यह विश्वास भी नहीं था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच में सत्य पर हैं, बल्कि जैसा कि अल्लाह ने बताया है वे लोग डगमगा देने वाले सन्देह में थे, इसलिए उन्होंने उचित समझा कि दीन के बारे में आपसे सौदेबाज़ी की जाए। इस्लाम और अज्ञानता दोनों बीच रास्ते में एक दूसरे से मिल जाएं और 'कुछ लो और कुछ दो' के नियम पर अपनी कुछ बातें मुश्रिक छोड़ दें और कुछ बातों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से छोड़ने के लिए की जाए। उनका विचार था कि अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत सत्य पर है तो इस तरह वे भी इस सत्य को पा लेंगे।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहे थे कि अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा, वलीद बिन मुग़ीरह, उमैया बिन ख़ल्फ़ और आस बिन वाइल सह्मी आपके सामने आए। ये सभी अपनी क़ौम के बड़े लोग थे, ऐ मुहम्मद! आइए, जिसे आप पूजते हैं, हम भी पूजें और जिसे हम पूजते हैं उसे आप भी पूजें। इस तरह हम और आप इस काम में मुश्तरक (संयुक्त) हो जाएं। अब अगर आपका माबूद हमारे माबूद से बेहतर है तो हम उससे अपना हिस्सा

1. इब्ने हिशाम, 1/298, 299,

हासिल कर चुके होंगे और अगर हमारा माबूद आपके माबूद से बेहतर हुआ तो आप उससे अपना हिस्सा हासिल कर चुके होंगे। इस पर अल्लाह ने पूरी सूरः 'क़ुल या अय्युल काफ़िरून' नाज़िल फ़रमाई, जिसमें एलान किया गया है कि जिसे तुम लोग पूजते हो, उसे मैं नहीं पूज सकता।[1]

अब्द बिन हुमैद वग़ैरह ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि क़ुरैश ने कहा, अगर हमारे माबूदों को तबर्रुक के तौर पर छुएं तो हम आपके माबूद की इबादत करेंगे, इस पर पूरी सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' उतरी।[2]

इब्ने जरीर वग़ैरह ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, आप एक साल हमारे माबूदों की पूजा करें और हम एक साल आपके माबूद की पूजा करें, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आप कह दें कि ऐ नासमझो! क्या तुम मुझे ग़ैर-अल्लाह की इबादत के लिए कहते हो।'[3]

अल्लाह ने इस क़तई और निर्णायक उत्तर से उस हास्यास्पद वार्ता की जड़ काट दी, लेकिन फिर भी क़ुरैश पूरे तौर पर निराश नहीं हुए, बल्कि उन्होंने अपने दीन से और अधिक हाथ खींच लेने पर आमादगी बताई, अलबत्ता यह शर्त लगाई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी जो शिक्षाएं लेकर आए हैं, उसमें कुछ तब्दील करें। चुनांचे उन्होंने कहा, 'इसके बजाए कोई और क़ुरआन लाओ या इसमें तब्दीली कर दो। अल्लाह ने इसका जो जवाब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतलाया, उसके ज़रिए यह रास्ता भी काट दिया। चुनांचे फ़रमाया—

'आप कह दें, मुझे इसका अधिकार नहीं कि मैं इसमें ख़ुद अपनी तरफ़ से तब्दीली करूं। मैं तो सिर्फ़ उसी चीज़ की पैरवी करता हूं, जिसकी वह्य मेरी तरफ़ की जाती है। मैंने अगर अपने रब की नाफ़रमानी की तो मैं एक बुरे दिन के अज़ाब से डरता हूं।'

अल्लाह ने उस दिन की ज़बरदस्त ख़तरनाकी का ज़िक्र इस आयत में भी फ़रमाया—

'और क़रीब था कि जो वह्य हमने आपकी तरफ़ की है, उससे ये लोग

---

1. इब्ने हिशाम 1/362,
2. अद्-दुर्रुल मंसूर 6/692,
3. तफ़्सीर इब्ने जरीर तबरी 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून'

आपको फ़िले में डाल देते ताकि आप हम पर कोई और बात कह दें और तब यक़ीनन लोग आपको गहरा दोस्त बना लेते और अगर हमने आपको साबित क़दम न रखा होता तो आप भी उनकी तरफ़ थोड़ा-सा झुक जाते और तब हम आपको दोहरी सज़ा ज़िंदगी में और दोहरी सज़ा मरने के बाद चखाते। फिर आपको हमारे मुक़ाबले में कोई सहायता करने वाला न मिलता।'

मुश्रिकों को आश्चर्य, संजीदा ग़ौर व फ़िक्र और यहूदियों से सम्पर्क

उपरोक्त बात-चीत, प्रलोभन, सौदेबाज़ियों, पीछे हटने की चालों में असफलताओं के बाद मुश्रिकों के सामने रास्ते अंधेरे में डूब-से गए। वे परेशान थे कि अब क्या करें? चुनांचे उनके एक शैतान नज़्र बिन हारिस ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा, क़ुरैश के लोगो! अल्लाह की क़सम! तुम पर ऐसी परेशानी आ पड़ी है कि तुम लोग अब तक उसका कोई तोड़ नहीं ला सके। मुहम्मद तुममें जवान थे तो तुम्हारे पसंदीदा आदमी थे। सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे बढ़कर अमानतदार थे। अब जबकि उनकी कनपटियों पर सफ़ेदी दिखाई पड़ने को है (यानी अधेड़ हो चले हैं) और वह तुम्हारे पास कुछ बातें लेकर आते हैं, तो तुम कहते हो कि वह जादूगर हैं। नहीं, अल्लाह की क़सम! वह जादूगर नहीं हैं, हमने जादूगर देखे हैं, उनकी झाड़-फूंक और गिरहबंदी भी देखी है और तुम लोग कहते हो, वह काहिन है, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह काहिन भी नहीं, हमने काहिन भी देखे हैं, उनकी उलटी-सीधी हरकतें भी देखी हैं और उनकी चुस्त बातें भी सुनी हैं। तुम लोग कहते हो, वह शायर (कवि) हैं, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह शायर भी नहीं। हमने शेर (पद) भी देखा है और शायर के हर प्रकार के काव्य भी सुने हैं। तुम लोग कहते हो, वह पागल है, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह पागल भी नहीं, हमने पागलपन भी देखा है, उनके यहां न इस तरह की घुटन है, न वैसी बहकी-बहकी बातें और न उनके जैसी उलटी-सीधी हरकतें। क़ुरैश के लोगो! सोचो, अल्लाह की क़सम! तुम पर ज़बरदस्त परेशानी आ पड़ी है।

ऐसा मालूम होता है कि जब उन्होंने देखा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर चुनौती का डटकर सामना कर रहे हैं, आपने सारे प्रलोभनों पर लात मार दिया है और हर मामले में बिल्कुल खरे और ठोस साबित हुए हैं, जबकि सच्चाई, पाकदामनी और नैतिक मूल्य भी उनके जीवन में पूरी तरह पाये जाते हैं, तो उनका यह सन्देह ज़्यादा पक्का हो गया कि आप वाक़ई सच्चे रसूल हैं, इसलिए उन्होंने फ़ैसला किया कि यहूदियों से सम्पर्क बनाकर आपके बारे में ज़रा अच्छी तरह इत्मीनान हासिल कर लिया जाए।

चुनांचे जब नज़्र बिन हारिस ने उपरोक्त उपदेश दिया तो क़ुरैश ने ख़ुद उसी को ज़िम्मेदार बनाया कि वह एक या कुछ आदमियों के साथ लेकर मदीना के यहूदियों के पास जाए और उनसे आपके मामले की जांच-पड़ताल करे। चुनांचे वह मदीना आया तो यहूदी उलेमा ने कहा कि उससे तीन बातों का सवाल करो, अगर वह बता दे, तो भेजा हुआ नबी है, वरना सिर्फ़ बातें बनाने वाला। उससे पूछो कि पिछले दौर में कुछ नवजवान गुज़रे हैं, उनका क्या क़िस्सा है? क्योंकि उनकी बड़ी विचित्र घटना है और उससे पूछो कि एक आदमी ने ज़मीन को पूरब व पश्चिम के चक्कर लगाए, उसकी क्या ख़बर है? और उससे पूछो कि रूह क्या है?

इसके बाद नज़्र बिन हारिस मक्का आया, तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे और मुहम्मद के दर्मियान एक निर्णायक बात लेकर आया हूं। इसके साथ ही उसने यहूदियों की कही हुई बात बताई। चुनांचे क़ुरैश ने आपसे तीनों बातों का सवाल किया। कुछ दिनों बाद सूरः कह्फ़ उतरी, जिसमें उन नवजवानों का और उस चक्कर लगाने वाले आदमी का क़िस्सा बयान किया गया था। नवजवान अस्हाबे कह्फ़ थे और वह ज़ुलक़रनैन था। रूह के बारे में जवाब सूरः इसरा में उतरा। इससे क़ुरैश पर यह बात स्पष्ट हो गई कि आप सच्चे पैग़म्बर हैं, लेकिन उन ज़ालिमों ने कुफ़्र और इंकार का ही रास्ता अपनाया।[1]

मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत का जिस ढंग से मुक़ाबला किया था, यह उसकी एक संक्षिप्त रूप-रेखा है। उन्होंने ये सारे क़दम पहलू-ब-पहलू उठाए थे। वे एक ढंग से दूसरे ढंग और एक पद्धति से दूसरे पद्धति की ओर आगे बढ़ते रहते थे, सख़्ती से नर्मी की तरफ़ और नर्मी से सख़्ती की तरफ़, झगड़े से सौदेबाज़ी की तरफ़ और सौदेबाज़ी से झगड़े की तरफ़, धमकी से प्रलोभन की तरफ़ और प्रलोभन से धमकी की तरफ़, कभी भड़कते और कभी नर्म पड़ जाते, कभी झगड़ते और कभी चिकनी-चिकनी बातें करने लगते, कभी मरने-मारने पर उतर आते और कभी ख़ुद अपने दीन (धर्म) से हाथ खींच लेते, कभी गरजे-बरसते और कभी दुनिया के सुख-वैभव की पेशकश करते, न उन्हें किसी पहलू क़रार था, न किनारा अपनाना ही पसन्द करते थे और इन सबका अभिप्राय यही था कि इस्लामी दावत विफल हो जाए और कुफ़्र का बिखराव फिर से जुड़ जाए, लेकिन इन सारी कोशिशों और सारे हीलों के बाद भी वे नाकाम ही रहे और उनके सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता रह गया और वह था

---

1. इब्ने हिशाम, 1/299, 300, 301

तलवार। मगर ज़ाहिर है तलवार से मतभेद में तेज़ी ही आती बल्कि आपसी ख़ून-ख़राबा का ऐसा सिलसिला चल पड़ता जो पूरी क़ौम को ले डूबता, इसलिए मुश्रिक हैरान थे कि वे क्या करें।

अबू तालिब और उनके ख़ानदान की सोच

लेकिन जहां तक अबू तालिब का ताल्लुक़ है, तो जब उनके सामने क़ुरैश की यह मांग आई कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए उनके हवाले कर दें और उनकी गतिविधियों में ऐसी निशानी देखी जिससे यह डर पक्का होता था कि वह अबू तालिब के प्रण और सुरक्षा की परवाह किए बग़ैर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का तहैया किए बैठे हैं, जैसे उक़्बा बिन अबी मुऐत, अबू जह्ल बिन हिशाम और उमर बिन ख़त्ताब के उठाए जा रहे क़दम—तो उन्होंने अपने परदादा अब्दे मुनाफ़ के दो सुपुत्रों हाशिम और मुत्तलिब से अस्तित्व में आने वाले परिवारों को जमा किया और उन्हें दावत दी कि वे सब मिलकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा का काम अंजाम दें।

अबू तालिब की यह बात अरबी हमीयत (पक्षपात) की दृष्टि से इन दोनों परिवारों के सारे मुस्लिम और काफ़िर लोगों ने मान ली और इस पर ख़ाना काबा के पास प्रतिज्ञा की, अलबत्ता सिर्फ़ अबू तालिब का भाई अबू लह्ब एक ऐसा व्यक्ति था जिसने यह बात मंजूर न की और सारे ख़ानदान से अलग होकर क़ुरैश के मुश्रिकों के साथ रहा।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/269

मुकम्मल बाइकाट

अत्याचार का संकल्प

जब मुश्रिकों के तमाम हीले-बहाने ख़त्म हो गए और उन्होंने यह देखा कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब हर हाल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा और बचाव का पक्का इरादा किए बैठे हैं, तो वे चकित रह गए और अन्त में मुहस्सब घाटी में ख़ैफ़ बनी कनाना के अंदर जमा होकर और आपस में बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के ख़िलाफ़ यह संकल्प लिया कि न उनसे शादी-ब्याह करेंगे, न क्रय-विक्रय करेंगे, न उनके साथ उठें-बैठेंगे, न उनसे मेल-जोल रखेंगे, न उनके घरों में जाएंगे, न उनसे बातचीत करेंगे, जब तक कि वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को क़त्ल करने के लिए उनके हवाले न कर दें।

मुश्रिकों ने इस बाइकाट की दस्तावेज़ के तौर पर एक कागज लिखा, जिसमें इस बात का संकल्प लिया गया था कि वे बनी हाशिम की ओर से कभी भी किसी समझौते की बात न करेंगे, न उनके साथ किसी तरह की नर्मी दिखाएंगे, जब तक कि वे अल्लाह के रसूल सल्ल० को क़त्ल करने के लिए मुश्रिकों के हवाले न कर दें।

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि कहा जाता है कि यह लेख मंसूर बिन इक्रिमा बिन आमिर बिन हाशिम ने लिंखा था और कुछ के नज़दीक नज़्र बिन हारिस ने लिखा था, लेकिन सही बात यह है कि लिखने वाला बग़ीज़ बिन आमिर बिन हाशिम था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर बद-दुआ की और उसका हाथ बेकार हो गया।[1]

बहरहाल यह संकल्प ले लिया गया और काग़ज़ ख़ाना काबा पर लटका दिया गया। इसके नतीजे में अबू लहब के सिवा बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के सारे लोग, चाहे मुसलमान रहे हों या ग़ैर-मुसलमान सिमट-सिमटाकर शेबे अबी तालिब में क़ैद हो गये।

---

1. ज़ादुल मआद 2/46, बाइकाट के विषय पर देखिए सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 3/529, हदीस न० 1589, 1590, 3882, 4284, 4285, 7479,

यह नबी सल्ल० के पैग़म्बर बनाए जाने के सातवें साल मुहर्रम की चांद रात की घटना है।

तीन साल शेबे अबी तालिब की घाटी में

इस बाइकाट के नतीजे में हालात बड़े संगीन हो गए। अनाज और खाने-पीने के सामान का आना बन्द हो गया, क्योंकि मक्का में जो अनाज या सामान आता था, उसे मुशिरक लपक कर ख़रीद लेते थे, इसलिए क़ैदियों की हालत बड़ी पतली हो गई। उन्हें पत्ते और चमड़े खाने पड़े। लोगों के भूख का हाल यह था कि भूख से बिलखते हुए बच्चों और औरतों की आवाज़ें घाटी के बाहर सुनाई पड़ती थीं, उनके पास मुश्किल ही से कोई चीज़ पहुंच पाती थी,वह भी छिप-छिपाकर। वे लोग हुर्मत वाले महीनों के अलावा बाक़ी दिनों में ज़रूरत की चीज़ों की ख़रीद के लिए घाटी से बाहर निकलते भी न थे। वे अगरचे उन क़ाफ़िलों से सामान ख़रीद सकते थे जो बाहर से मक्का आते थे, लेकिन उनके सामान के साथ भी मक्का वाले इतना बढ़ाकर ख़रीदने को तैयार हो जाते थे कि घिरे हुए क़ैदियों के लिए कुछ ख़रीदना मुश्किल हो जाता था।

हकीम बिन हिज़ाम, जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का भतीजा था, कभी-कभी अपनी फूफी के लिए गेहूं भिजवा देता था। एक बार अबू जहल का सामना हो गया, वह अनाज रोकने पर अड़ गया, लेकिन अबुल बख़्तरी ने हस्तक्षेप किया और उसे अपनी फूफी के पास गेहूं भिजवाने दिया।

उधर अबू तालिब को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बराबर ख़तरा लगा रहता था, इसलिए जब लोग अपने-अपने बिस्तरों पर जाते, तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम अपने बिस्तर पर सोए रहो। मक़्सद यह होता कि अगर कोई व्यक्ति आपको क़त्ल करने की नीयत रखता हो, तो देख ले कि आप कहां सो रहे हैं। फिर जब लोग सो जाते तो अबू तालिब आपकी जगह बदल देते यानी अपने बेटों, भाइयों या भतीजों में से किसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सुला देते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम उसके बिस्तर पर चले जाओ।

इस क़ैद व बन्द के बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे मुसलमान हज के दिनों में बाहर निकलते थे और हज के लिए आने वालों से मिलकर उन्हें इस्लाम की दावत देते थे। इस मौक़े पर अबू लहब की जो हरकत हुआ करती थी, उसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में हो चुका है।

काग़ज़ फाड़ दिया जाता है

इन हालात पर पूरे तीन साल गुज़र गए। इसके बाद मुहर्रम 10 नबवी[1] में काग़ज़ फाड़े जाने और इस अत्याचारपूर्ण संकल्प को ख़त्म किए जाने की यह घटना घटी। इसकी वजह यह थी कि शुरू ही से क़ुरैश के कुछ लोग अगर इस संकल्प से प्रसन्न थे, तो कुछ नाराज़ भी थे और इन्हीं नाराज़ लोगों ने इस काग़ज़ को फाड़ देने की कोशिश की।

इनमें असल हौसला दिखाने वाला क़बीला बनू आमिर बिन लुई का हिशाम बिन अम्र नाम का एक व्यक्ति था। यह रात के अंधेरे में चुपके-चुपके शेबे अबी तालिब के भीतर अनाज भेजकर बनू हाशिम की मदद भी किया करता था—यह ज़ुहैर बिन अबी उमैया मख़्ज़ूमी के पास पहुंचा—ज़ुहैर की मां आतिका, अब्दुल मुत्तलिब की बेटी यानी अबू तालिब की बहन थीं और उससे कहा—

'ज़ुहैर! क्या तुम्हें यह पसन्द है कि तुम मज़े से खाओ, पियो और तुम्हारे मामूं का वह हाल है जिसे तुम जानते हो?'

ज़ुहैर ने कहा, मैं अकेला क्या कर सकता हूं? हां, अगर मेरे साथ कोई आदमी होता, तो मैं इस काग़ज़ को फाड़ने के लिए यक़ीनन उठ खड़ा होता।

उसने कहा, अच्छा तो एक आदमी और मौजूद है।

पूछा, कौन है?

कहा, मैं हूं।

ज़ुहैर ने कहा, अच्छा तो अब तीसरा आदमी खोजो।

इस पर हिशाम, मुतअम बिन अदी के पास गया और बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब से, जो कि अब्दे मुनाफ़ की औलाद थे, मुतइम के क़रीबी ख़ानदानी ताल्लुक़ का ज़िक्र करके उसे मलामत की कि उसने इस ज़ुल्म पर क़ुरैश की हां में हां कैसे मिलाया? (याद रहे कि मुतइम भी अब्दे मुनाफ़ ही की नस्ल से था)

मुतइम ने कहा, अफ़सोस! मैं अकेला क्या कर सकता हूं?

हिशाम ने कहा, एक आदमी और मौजूद है।

---

1. इसकी दलील यह है कि अबू तालिब की वफ़ात काग़ज़ फाड़े जाने के छः महीने के बाद हुई और सही बात यह है कि उनकी मौत रजब के महीने में हुई थी और जो लोग यह कहते हैं कि उनकी वफ़ात रमज़ान में हुई थी, वे यह भी कहते हैं कि उनकी वफ़ात काग़ज़ फाड़े जाने के छः महीने बाद नहीं, बल्कि आठ माह और कुछ दिन बाद हुई थी। दोनों शक्लों में वह महीना जिसमें काग़ज़ फाड़ा गया, मुहर्रम साबित होता है।

मुतइम ने पूछा, कौन है ?

हिशाम ने कहा, मैं।

मुतइम ने कहा, अच्छा एक तीसरा आदमी खोजो।

हिशाम ने कहा, यह भी कर चुका हूं।

पूछा, वह कौन है ?

कहा, ज़ुहैर बिन अबी उमैया।

मुतइम ने कहा, अच्छा तो अब चौथा आदमी खोजो।

इस पर हिशाम बिन अम्र अबुल बख़्तरी बिन हिशाम के पास गया और उससे भी इसी तरह की बात की, जैसी मुतइम से की थी।

उसने कहा, भला कोई इसकी ताईद भी करने वाला है ?

हिशाम ने कहा, हां।

पूछा, कौन ?

कहा, ज़ुहैर बिन अबी उमैया, मुतइम बिन अदी और मैं।

उसने कहा, अच्छा तो अब पांचवां आदमी ढूंढो।

इसके लिए हिशाम, ज़मआ बिन अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद के पास गए और उससे बातों-बातों में बनू हाशिम की रिश्तेदारी और उनके हक़ याद दिलाए।

उसने कहा, भला जिस काम के लिए मुझे बुला रहे हो, उससे कोई और भी सहमत है ?

हिशाम ने हां में सर हिलाया और सबके नाम बता दिए।

इसके बाद उन लोगों ने जहून के पास जमा होकर यह संकल्प लिया कि काग़ज़ फाड़ देना है। ज़ुहैर ने कहा, मैं शुरूआत करूंगा, यानी सबसे पहले मैं ही ज़ुबान खोलूंगा।

सुबह हुई तो सब लोग हर दिन की तरह अपनी-अपनी सभाओं में पहुंचे। ज़ुहैर भी सज-धजकर पहुंचा, पहले बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए, फिर लोगों को संबोधित करके बोला—

'मक्का वालो ! क्या हम खाना खाएं, कपड़े पहनें और बनू हाशिम तबाह व बर्बाद हों, न उनके हाथ कुछ बेचा जाए, न उनसे कुछ ख़रीदा जाए। ख़ुदा की क़सम ! मैं बैठ नहीं सकता, यहां तक कि इस ज़ुल्म भरे और रिश्तेदारियों के तोड़ने वाले काग़ज़ को फाड़ दिया जाए।'

अबू जह्ल, जो मस्जिदे हराम के एक कोने में मौजूद था, बोला, 'तुम ग़लत कहते हो, ख़ुदा की क़सम ! उसे फाड़ा नहीं जा सकता।'

इस पर ज़मआ बिन अस्वद ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! तुम ग़लत कहते हो। जब यह काग़ज़ लिखा गया था, तब भी हम उससे राज़ी न थे।

इस पर अबुल बख़्तरी ने गिरह लगाई, ज़मआ ठीक कह रहा है। इसमें जो कुछ लिखा गया है, उससे न हम राज़ी हैं, न इसे मानने को तैयार हैं।

इसके बाद मुतइम बिन अदी ने कहा, 'तुम दोनों ठीक कहते हो और जो इसके ख़िलाफ़ कहता है, ग़लत कहता है। हम इस काग़ज़ से और जो कुछ इसमें लिखा गया है उससे अल्लाह के हुज़ूर अलग होने का एलान करते हैं।'

फिर हिशाम बिन अम्र ने भी इसी तरह की बात कही।

यह स्थिति देखकर अबू जह्ल ने कहा, 'हुंह ! यह बात रात में तै की गई है और इसका मश्विरा यहां के बजाए कहीं और किया गया है।'

इस बीच अबू तालिब भी हरम पाक के एक कोने में मौजूद थे। उनके आने की वजह यह थी कि अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस काग़ज़ के बारे में यह ख़बर दी कि उस पर अल्लाह ने कीड़े भेज दिए हैं, जिन्होंने ज़ुल्म व सितम और नातेदरी के काटने की सारी बातें चट कर ली हैं और सिर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी छोड़ा है।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा को यह बात बताई तो वह क़ुरैश से यह क़हने आए थे कि उनके भतीजे ने उन्हें यह और यह ख़बर दी है, अगर वह झूठा साबित हुआ तो हम तुम्हारे और उसके बीच से हट जाएंगे, फिर तुम्हारा जो जी चाहे, करना, लेकिन अगर वह सच्चा साबित हुआ तो तुम्हें हमारे बाइकाट और ज़ुल्म से रुक जाना होगा।

इस पर क़ुरैश ने कहा था, आप इंसाफ़ की बात कर रहे हैं।

इधर अबू जह्ल और बाक़ी लोगों की नोक-झोंक ख़त्म हुई तो मुतइम बिन अदी काग़ज़ फाड़ने के लिए उठा। क्या देखता है कि वाक़ई कीड़ों ने उसका सफ़ाया कर दिया है, सिर्फ़ 'बिस्मिकल्लाहुम-म' बाक़ी रह गया है और जहां-जहां अल्लाह का नाम था, वह बचा है। कीड़ों ने उसे नहीं खाया था।

इसके बाद काग़ज़ फट गया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और बाक़ी तमाम लोग शेबे अबी ताबिल से निकल आए।

मुश्रिकों ने आपके नबी होने की एक शानदार निशानी देखी, लेकिन उनका

रवैया वही रहा, जिसका उल्लेख इस आयत में है—

'अगर वे कोई निशानी देखते हैं तो रुख़ फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह तो चलता-फिरता जादू है।' (54 : 2)

चुनांचे मुश्रिकों ने इस निशानी से भी रुख़ फेर लिया और अपने कुफ़्र की राह में कुछ क़दम और आगे बढ़ गए।[1]

---

1. बाइकाट का यह विस्तृत विवरण नीचे लिखे स्रोतों से लिया गया है—सहीह बुख़ारी बाब नुज़ूलुन्नबी सल्ल० बिमक्क-त 1/216, बाब तक़ासमुल मुश्रिकीन अलन्नबी सल्ल० 1/548, ज़ादुल मआद 2/46, इब्ने हिशाम 1/350, 351, 374-377 इन स्रोतों में कुछ-कुछ मतभेद हैं। हमने जांच-परख कर तर्जीही पहलू नोट किया है।

अबू तालिब की सेवा में क़ुरैश का आख़िरी प्रतिनिधि मंडल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शेबे अबी तालिब से निकलने के बाद फिर पहले की तरह दीन के प्रचार-प्रसार का काम शुरू कर दिया और अब मुश्रिकों ने अगरचे बाइकाट ख़त्म कर दिया था, लेकिन वे भी पहले की तरह मुसलमानों पर दबाव डालने और अल्लाह के रास्ते से रोकने का सिलसिला जारी रखे हुए थे और जहां तक अबू तालिब का ताल्लुक़ है, तो वह भी अपनी पुरानी परंपरा के मुताबिक़ पूरी तवज्जोह से अपने भतीजे की हिमायत और हिफ़ाज़त में लगे हुए थे, लेकिन अब उनकी उम्र अस्सी से भी ज़्यादा हो चुकी थी। कई साल से लगातार आ रही परेशानियों ने और ख़ास तौर से क़ैद व बंद ने उन्हें तोड़ कर रख दिया था। उनके जिस्म की ताक़त जवाब दे चुकी थी और कमर टूट चुकी थी, चुनांचे घाटी से निकलने के बाद कुछ ही महीने बीते थे कि उन्हें बड़ी बीमारी ने आ पकड़ा।

इस मौक़े पर मुश्रिकों ने सोचा कि अगर अबू तालिब का इंतिक़ाल हो गया और उसके बाद हमने उसके भतीजे पर कोई ज़्यादती की, तो बड़ी बदनामी होगी, इसलिए अबू तालिब के सामने ही नबी सल्ल० से कोई मामला तै कर लेना चाहिए। इस सिलसिले में वे कुछ ऐसी रियायतें देने को तैयार हो गए जिस पर अभी तक राज़ी न थे। चुनांचे उनका एक दल अबू तालिब की सेवा में आया और यह उनका अन्तिम दल था।

इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह का बयान है कि जब अबू तालिब बीमार पड़ गए और क़ुरैश को मालूम हुआ कि उनकी हालत बहुत ख़राब होती जा रही है, तो उन्होंने आपस में कहा कि देखो हमज़ा और उमर रज़ि० मुसलमान हो चुके हैं और मुहम्मद (सल्ल०) का दीन हर क़बीले में फैल चुका है, इसलिए चलो, अबू तालिब के पास चलें कि वह अपने भतीजे को किसी बात का पाबंद करें और हम से भी उनके बारे में वचन ले लें, क्योंकि ख़ुदा की क़सम ! हमें डर है, लोग हमारे क़ाबू में न रहेंगे।

एक रिवायत यह है कि हमें डर है कि वह बूढ़ा मर गया और मुहम्मद सल्ल० के साथ कोई गड़बड़ हो गई, तो अरब हमें ताने देंगे, कहेंगे कि इन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़े रखा (और उनके ख़िलाफ़ कुछ करने की हिम्मत न

की) लेकिन जन उसका चचा मर गया तो उस पर चढ़ दौड़े।

बहरहाल क़ुरैश का यह दल अबू तालिब के पास पहुंचा और उनसे बातें कीं। दल के सदस्य क़ुरैश के प्रतिष्ठित जन थे यानी उत्बा बिन रबीआ, शैबा निब रबीआ, अबू जह्ल बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और क़ुरैश के दूसरे बड़े लोग, जिनकी कुल तायदाद लगभग पचीस थी, उन्होंने कहा—

'ऐ अबू तालिब ! हमारे बीच आपका जो पद और स्थान है, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं और अब आप जिस हालत से गुज़र रहे हैं, वह भी आपके सामने है। हमें डर है कि ये आपकी उम्र के आख़िरी दिन हैं। इधर हमारे और आपके भतीजे के बीच जो मामला चल रहा है, उसे भी आप जानते हैं। हम चाहते हैं कि आप उन्हें बुलाएं और उनके बारे में हम से कुछ वचन लें और हमारे बारे में उनसे वचन लें, यानी यह कि वे हमको हमारे दीन पर छोड़ दें और हम उनको उनके दीन पर छोड़ दें।'

इस पर अबू तालिब ने आपको बुलवाया और आप तशरीफ़ लाए तो कहा—

'भतीजे ! ये तुम्हारी क़ौम के सरदार लोग हैं। तुम्हारे ही लिए जमा हुए हैं। ये चाहते हैं कि तुम्हें कुछ वचन दें और तुम भी इन्हें कुछ वचन दे दो।'

इसके बाद अबू तालिब ने उनकी यह बात बताई कि कोई भी फ़रीक़ एक दूसरे से छेड़छाड़ न करे।

जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दल को सम्बोधित करके फ़रमाया, आप लोग यह बताएं कि अगर मैं एक ऐसी बात पेश करूं, जिसके अगर आप क़ायल हो जाएं, तो अरब के बादशाह बन जाएं और अजम आपके पैरों में आ जाएं, तो आपकी राय क्या होगी ?

कुछ रिवायतों में यह कहा गया है कि आपने अबू तालिब को सम्बोधित करके फ़रमाया, मैं उनसे एक ऐसी बात चाहता हूं जिसके ये क़ायल हो जाएं तो अरब इनके आज्ञाकारी बन जाएं और अजम इन्हें जिज़्या अदा करें।

एक और रिवायत में इसका उल्लेख है कि आपने फ़रमाया, चचा जान ! आप क्यों न इन्हें एक ऐसी बात की ओर बुलाएं जो इनके हक़ में बेहतर है ?

उन्होंने कहा, तुम इन्हें किस बात की ओर बुलाना चाहते हो ?

आपने फ़रमाया, मैं एक ऐसी बात की ओर बुलाना चाहता हूं जिसके ये क़ायल हो जाएं तो अरब इनके आज्ञाकारी हो जाएं और अजम पर इनकी

बादशाही चले।

इब्ने इस्हाक़ की एक रिवायत यह है कि आपने फ़रमाया—

आप लोग सिर्फ़ एक बात मान लें जिसकी वजह से आप अरब के बादशाह बन जाएंगे और अजम आपके क़दमों में होगा।

बहरहाल जब आपने यह बात कही तो वे लोग कुछ संकोच में पड़ गए और सटपटा से गए। वे हैरान थे कि सिर्फ़ एक बात जो इतनी फ़ायदेमंद है, उसे रद्द कैसे कर दें? आख़िरकार अबू जह्ल ने कहा—

'अच्छा तो बताओ वह बात है क्या? तुम्हारे बाप की क़सम! ऐसी एक बात क्या, दस बातें भी पेश करो, जो हम मानने को तैयार हैं?'

आपने फ़रमाया, 'आप लोग ला इला-ह इल्लल्लाहु कहें और अल्लाह के सिवा जो कुछ पूजते हैं उसे छोड़ दें।'

इस पर उन्होंने हाथ पीट-पीटकर और तालियां बजा-बजाकर कहा, 'मुहम्मद (सल्ल०)! तुम यह चाहते हो कि सारे ख़ुदाओं की जगह बस एक ही ख़ुदा बना डालो, वाक़ई तुम्हारा मामला बड़ा अजीब है।'

फिर आपस में एक दूसरे से बोले, 'ख़ुदा की क़सम! यह व्यक्ति तुम्हारी एक बात मानने को तैयार नहीं, इसलिए चलो और अपने बाप-दादों के दीन पर डट जाओ, यहां तक कि अल्लाह हमारे और इस व्यक्ति के बीच फ़ैसला कर दे।'

इसके बाद उन्होंने अपना-अपना रास्ता लिया। इस घटना के बाद इन्हीं लोगों के बारे में क़ुरआन मजीद की ये आयतें उतरीं—

'साद, क़सम है नसीहत भरे क़ुरआन की, बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया, हेकड़ी और ज़िद में हैं। हमने कितनी ही क़ौमें इनसे पहले हलाक कर दीं और वे चीख़े-चिल्लाए (लेकिन उस वक़्त) जबकि बचने का समय न था। उन्हें ताज्जुब है कि उनके पास ख़ुद उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया। काफ़िर कहते हैं कि यह जादूगर है, बड़ा झूठा है। क्या उसने सारे माबूदों की जगह बस एक ही माबूद बना डाला! यह तो बड़ी अजीब बात है और उनके बड़े यह कहते हुए निकले कि चलो और अपने माबूदों पर डटे रहो। यह एक सोची-समझी स्कीम है। हमने किसी और मिल्लत में यह बात नहीं सुनी। यह सिर्फ़ गढ़ी हुई बात है।'[1] (38 : 1-7)

---

1. इब्ने हिशाम 1/417 से 419 तक, तिर्मिज़ी, हदीस न० 3232 (5/341) मुस्नद अबू याला हदीस न० 2583, (4/456) तफ़्सीर इब्ने जरीर,

ग़म का साल

अबू तालिब की वफ़ात

अबू तालिब का रोग बढ़ता गया, यहां तक कि वह इंतिक़ाल कर गए।

उनकी वफ़ात शेबे अबी तालिब के क़ैद व बन्द के ख़ात्मे के छः माह बाद रजब सन् 10 नबवी में हुई।[1]

एक कथन यह भी है कि उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात से सिर्फ़ तीन दिन पहले रमज़ान के महीने में वफ़ात पाई।

सहीह बुख़ारी में हज़रत मुसय्यिब से रिवायत है कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त आया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए। वहां अबू जह्ल भी मौजूद था। आपने फ़रमाया, चचा जान! आप 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कह दीजिए, बस एक बोल, जिसके ज़रिए मैं अल्लाह के पास आपके लिए हुज्जत पेश कर सकूंगा।'

अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बिन उमैया ने कहा, अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत से रुख़ फेर लोगे?

फिर ये दोनों बराबर उनसे बात करते रहे, यहां तक कि आख़िरी बात जो अबू तालिब ने लोगों से कही, वह यह थी कि 'अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत पर'

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'मैं जब तक आपसे रोक न दिया जाऊं, आपके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा।' इस पर यह आयत उतरी—

'नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें, भले ही वे रिश्ते-नातेदार हों, जबकि उन पर स्पष्ट हो चुका है कि वे लोग जहन्नमी हैं।' (9 : 113)

और यह आयत भी उतरी—

---

1. सीरत की किताबों में बड़ा मतभेद है कि अबू तालिब की वफ़ात किस महीने में हुई। हमने रजब को इसलिए तर्जीह दी है कि अधिकतर किताबों में यही बात है कि उनकी वफ़ात शेबे अबी तालिब से निकलने के छः माह बाद हुई और क़ैद व बन्द की शुरूआत मुहर्रम सन् 07 नबवी की चांद रात से हुई थी। इस हिसाब से उनकी मौत का समय रजब सन् 10 नबवी ही होता है।

'आप जिसे पसन्द करें, हिदायत नहीं दे सकते।'[1] (28 : 56)

यहां यह बताने की ज़रूरत नहीं कि अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कितनी हिमायत व हिफ़ाज़त की थी। वह वास्तव में मक्के के बड़ों और मूर्खों के हमलों से बचाव के लिए एक क़िला थे, लेकिन वह अपने आप अपने पुरखों की मिल्लत पर क़ायम रहे, इसलिए पूरी कामियाबी न पा सके।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया—

'आप अपने चचा के क्या काम आ सके? क्योंकि वह आपकी रक्षा करते थे और आपके लिए (दूसरों पर) बिगड़ते (और उनसे लड़ाई मोल लेते) थे।'

आपने फ़रमाया, 'वह जहन्नम की एक छिछली जगह में हैं और अगर मैं न होता तो वह जहन्नम के सबसे गहरे खड्ड में होते।'[2]

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आपके चचा की बात निकल आई, तो आपने फ़रमाया—

'मुम्किन है क़ियामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअत फ़ायदा पहुंचा दे और उन्हें जहन्नम की एक उथली जगह में रख दिया जाए, जो सिर्फ़ उनके दोनों टख़नों तक पहुंच सके।'[3]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० भी वफ़ात पा गईं

अबू तालिब की वफ़ात के दो महीने बाद या सिर्फ़ तीन दिन बाद—अलग-अलग कथनों की बुनियाद पर—उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा भी इंतिक़ाल फ़रमा गईं। उनकी वफ़ात नुबूवत के दसवें साल रमज़ान के महीने में हुई। उस वक़्त वह 65 वर्ष की थीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्र के पचासवीं मंज़िल में थे।[4]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
2. सहीह बुख़ारी बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
3. सहीह बुख़ारी बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
4. रमज़ान में वफ़ात हुई है, इसे इब्ने जौज़ी ने 'तलक़ीहुल मफ़हूम' पृ० 7 में और अल्लामा मंसूरपुरी ने रहमतुल लिल आलमीन 2/164 में लिखकर स्पष्ट किया है।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत थीं। वह एक चौथाई सदी बीवी की हैसियत से आपके साथ रहीं और इस बीच रंज और दुख का वक़्त आता, तो आपके लिए तड़प उठतीं, संगीन और कठिन घड़ियों में आपको ताक़त पहुंचातीं, दावत पहुंचाने में आपकी मदद करतीं और इस कठिन से कठिन जिहाद में आपकी बराबर शरीक रहतीं और अपनी जान व माल से आपका पूरा-पूरा साथ देतीं और हौसला बढ़ातीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

जिस वक़्त लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया, वह मुझ पर ईमान लाई, जिस वक़्त लोगों ने मुझे झुठलाया, उन्होंने मेरी तस्दीक़ की, जिस वक़्त लोगों ने मुझे महरूम किया, उन्होंने मुझे अपने माल में शरीक किया और अल्लाह ने मुझे उनसे औलाद दी और दूसरी बीवियों से कोई औलाद न दी।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ख़दीजा रज़ि० तशरीफ़ ला रही हैं। इनके पास एक बरतन है, जिसमें सालन या खाना या कोई पेय है। जब वह आपके पास आ पहुंचें तो आप उन्हें उनके रब की ओर से सलाम कहें और जन्नत में मोती के महल की ख़ुशख़बरी दें, जिसमें न शोर-हंगामा होगा, न परेशानी व थकन।[2]

ग़म ही ग़म

ये दोनों दुखद घटनाएं कुछ दिनों के बीच में घटीं, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल दुख और ग़म से भर गया था। इसके बाद क़ौम की ओर से मुसीबतों का पहाड़ तोड़ा जाने लगा, क्योंकि अबू तालिब की वफ़ात के बाद उनकी हिम्मत बढ़ गई और वे खुलकर आपको कष्ट और पीड़ा पहुंचाने लगे। इस स्थिति ने आपके दुख को और बढ़ा दिया। आपने उनसे निराश होकर तायफ़ का रास्ता पकड़ा कि शायद लोग वहां आपकी दावत क़ुबूल कर लें, आपको पनाह दे दें और आपकी क़ौम के ख़िलाफ़ आपकी मदद करें। लेकिन वहां न कोई पनाह देनेवाला मिला, न मदद करने वाला, बल्कि उलटे उन्होंने बहुत

---

1. मुस्नद अहमद 6/118
2. सहीह बुख़ारी बाब तज़वीजुन्नबी सल्ल० ख़दी-ज-त व फ़ज़्लुहा 1/539

पीड़ा पहुंचाई और ऐसा दुर्व्यवहार किया कि ख़ुद आपकी क़ौम ने वैसा दुर्व्यवहार न किया था। (विवरण आगे आ रहा है)

यहां इस बात का दोहराना बे-मौक़ा न होगा कि मक्का वालों ने जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ ज़ुल्म व सितम का बाज़ार गर्म कर रखा था, उसी तरह वे आपके साथियों के ख़िलाफ़ भी अन्याय व अत्याचार के हर तरीक़े पर उतर आए थे, चुनांचे आपके क़रीबी साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० मक्का छोड़ने पर मजबूर हो गए और हब्शा के इरादे से निकल पड़े, लेकिन बरके ग़माद पहुंचे तो इब्ने दुग़ना से मुलाक़ात हो गई और वह अपनी पनाह में आपको मक्का वापस ले आया।[1]

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब अबू तालिब इंतिक़ाल कर गए, तो क़ुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी पीड़ा पहुंचाई कि अबू तालिब की ज़िंदगी में कभी इसकी आरज़ू भी न कर सके थे, यहां तक कि क़ुरैश के एक मूर्ख ने सामने आकर आपके सर पर मिट्टी डाल दी। आप उसी हालत में घर तशरीफ़ लाए। मिट्टी आपके सर पर पड़ी हुई थी। आपकी एक सुपुत्री ने उठकर मिट्टी धुली। वह धुलते हुए रोती जा रही थीं, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें तसल्ली देते हुए फ़रमाते जा रहे थे—

'बेटी! रोओ नहीं, अल्लाह तुम्हारे अब्बा की हिफ़ाज़त करेगा।'

इस बीच आप यह भी फ़रमाते जा रहे थे कि क़ुरैश ने मेरे साथ कोई ऐसा दुर्व्यवहार न किया, जो मुझे नागवार गुज़रा हो, यहां तक कि अबू तालिब का देहान्त हो गया।[2]

इसी तरह की लगातार आने वाली परेशानियों और कठिनाइयों की वजह से इस साल का नाम 'आमुल हुज़्न' यानी ग़म का साल पड़ गया और यह साल इतिहास में इसी नाम से मशहूर हो गया।

हज़रत सौदा रज़ि० से शादी

इसी वर्ष शव्वाल सन् 10 नबवी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। यह शुरू

---

1. अकबर शाह नजीबादी ने स्पष्ट किया है कि यह घटना उसी साल घटी थी। देखिए तारीखे इस्लाम 1/120 असल घटना पूरे विस्तार के साथ इब्ने हिशाम 1/372-374 और सहीह बुख़ारी 1/552-553 में उल्लिखित है।
2. इब्ने हिशाम 1/416

के दिनों में ही मुसलमान हो गई थीं और हब्शा की दूसरी हिजरत के मौक़े पर हिजरत भी की थी। इनके शौहर का नाम सकरान बिन अम्र था। वह भी पुराने मुसलमान थे। हज़रत सौदा रज़ि० ने उन्हीं के साथ हब्शा की ओर हिजरत की थी, लेकिन वह भी हब्शा ही में और कहा जाता है कि मक्का वापस आकर इंतिक़ाल कर गए। इसके बाद जब हज़रत सौदा रज़ि० की इद्दत ख़त्म हो गई तो नबी सल्ल० ने उनको शादी का पैग़ाम दिया और फिर शादी हो गई।

यह हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात के बाद पहली बीवी हैं जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शादी की। कुछ वर्षों के बाद उन्होंने अपनी बारी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दी थी।[1]

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 1/165, तलक़ीहुल फ़हूम, पृ० 6

मुसलमानों का आदर्श धैर्य

यहां पहुंचकर गहरी सूझ-बूझ और मज़बूत दिल व दिमाग़ का आदमी भी चकित रह जाता है और बड़े-बड़े सूझ-बूझ वाले लोग सोच में पड़ जाते हैं कि आख़िर वे क्या बातें थीं, जिन्होंने मुसलमानों के क़दमों को इतना अधिक चमत्कारिक ढंग से जमाए रखा? आख़िर मुसलमानों ने किस तरह ज़ुल्म के इन पहाड़ों पर सब्र किया, जिन्हें सुन-सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं और मन कांप-कांप उठता है। बार-बार खटकने और दिल की तहों से उभरने वाले इस प्रश्न को देखते हुए उचित लगता है कि उन बातों की ओर एक सरसरी इशारा कर दिया जाए।

1. **इनमें सबसे पहली और अहम वजह एक अल्लाह पर ईमान और उसकी ठीक-ठीक पहचान है,** क्योंकि ईमान की ताज़गी दिलों में बैठ जाती है, तो इंसान पहाड़ों से टकरा जाता है फिर भी उसी का पल्ला भारी रहता है और जो आदमी ऐसे मज़बूत ईमान और पक्के यक़ीन से भर जाए, वह दुनिया की कठिनाइयों को—चाहे वे जितनी हों और जैसी भी भारी-भरकम हों, ख़तरनाक और सख़्त हों—अपने ईमान के मुक़ाबले में उस काई से ज़्यादा अहमियत नहीं देता जो किसी बन्द तोड़ और क़िला शिकन बाढ़ की ऊपरी सतह पर जम जाती है, इसलिए मोमिन (ईमान वाला) अपने ईमान की मिठास, यक़ीन की ताज़गी और विश्वास के स्वाद के सामने इन कठिनाइयों की कोई परवाह नहीं करता कि—

'जो झाग है, वह तो बेकार होकर उड़ जाता है और जो लोगों को नफ़ा देनेवाली चीज़ है, वह ज़मीन में बरक़रार रहती है।' (13 : 17)

फिर इसी एक वजह से ऐसी वज्हें सामने आती हैं जो इस जमाव और धैर्य को ताक़त पहुंचाती हैं। जैसे—

2. **आकर्षक नेतृत्व** : मालूम है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जो पूरी उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम समुदाय) बल्कि सारी मानव-जाति के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक और रहनुमा थे, ऐसी जिस्मानी ख़ूबसूरती, मन की पाकीज़गी, श्रेष्ठ चरित्र, आदर्श आचरण और आदर्श तौर-तरीक़ों के मालिक थे कि मन अपने आप आपकी ओर खिंचे जाते थे और तबीयतें स्वयं आप पर निछावर होती थीं, क्योंकि जिन अच्छी बातों पर लोग जान छिड़कते हैं, उनमें से आपको इतना भरपूर हिस्सा मिला था कि इतना किसी और इंसान को दिया ही नहीं गया। आप श्रेष्ठता की सबसे ऊंची चोटी पर आसीन नज़र आते थे। सच्चाई, अमानतदारी,

पाकदामनी और तमाम ही भली ख़ूबियों में आप इतने नुमायां जगह पर थे कि साथी तो साथी, आपके दुश्मनों को भी आप पर कभी सन्देह न गुज़रा। आपके मुख से जो बात निकल गई, दुश्मनों को भी यक़ीन हो गया कि वह सच्ची है और होकर रहेगी। घटनाएं इसकी गवाही देती हैं।

एक बार क़ुरैश के ऐसे तीन आदमी इकट्ठे हुए, जिनमें से हर एक ने अपने बाक़ी दो साथियों से छिप-छिपाकर बिल्कुल अकेले क़ुरआन मजीद सुना था, लेकिन बाद में हर एक का भेद दूसरे पर खुल गया। इन्हीं तीनों में से एक अबू जह्ल भी था।

तीनों इकट्ठे हुए तो एक ने अबू जह्ल से पूछा कि बताओ, तुमने जो कुछ मुहम्मद सल्ल० से सुना है, उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?

अबू जह्ल ने कहा, मैंने क्या सुना है? बात असल में यह है कि हमने और बनू अब्द मुनानफ़ ने महत्ता और महानता में एक दूसरे का मुक़ाबला किया। उन्होंने (ग़रीबों को) खाना खिलाया, तो हमने भी खिलाया, उन्होंने दान-दक्षिणा में सवारियां दीं, तो हमने भी दीं, उन्होंने लोगों को भेंट-उपहार दिए, तो हमने भी ऐसा किया, यहां तक कि जब हम और वह घुटनों-घुटनों एक दूसरे के बराबर हो गए और हमारी और उनकी हैसियत रेस के दो मुक़ाबले के घोड़ों की हो गई, तो अब अबू अब्द मुनाफ़ कहते हैं कि हमारे अन्दर एक नबी सल्ल० है, जिसके पास आसमान से वह्य आती है। भला बताइए, हम उसे कब पा सकते हैं? ख़ुदा की क़सम! हम उस व्यक्ति पर कभी ईमान न लाएंगे और उसकी हरगिज़ तस्दीक़ न करेंगे।[1]

चुनांचे अबू जह्ल कहा करता था, 'ऐ मुहम्मद! हम तुम्हें झूठा नहीं कहते, लेकिन तुम जो कुछ लेकर आए हो उसे झुठलाते हैं और इसी बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'ये लोग आपको नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।'[2]

इस घटना को विस्तार में दिया जा चुका है कि एक बार दुश्मनों ने नबी सल्ल० की तीन बार लान-तान की और तीसरी बार में आपने फ़रमाया कि ऐ क़ुरैश की जमाअत! मैं तुम्हारे पास ज़िब्ह लेकर आया हूं, तो यह बात उन पर इस तरह असर कर गई कि जो व्यक्ति दुश्मनी में सबसे बढ़कर था, वह भी बेहतर से बेहतर जो वाक्य पा सकता था, उसके ज़रिए आपको राज़ी करने की

---

1. इब्ने हिशाम 1/316
2. तिर्मिज़ी, तफ़्सीर सूरः अनआम 2/132

कोशिश में लग गया।

इसी तरह यह भी सविस्तार आ चुका है कि जब सज्दे की हालत में आप पर ओझड़ी डाली गई और आपने सर उठाने के लिए इस हरकत के करने वालों पर बद-दुआ की तो उनकी हंसी हवा हो गई और उनमें दुख और अफ़सोस की लहर दौड़ गई। उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम बच नहीं सकते।

इस घटना का भी उल्लेख किया जा चुका है कि आपने अबू लहब के बेटे उतैबा के लिए बद-दुआ की, तो उसे यक़ीन हो गया कि वह आपकी बद-दुआ की मार से बच नहीं सकता। चुनांचे उसने शामदेश के सफ़र में शेर को देखते ही कहा, 'ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्का में रहते हुए मुझे क़त्ल कर दिया।'

उबई बिन ख़ल्फ़ की घटना है कि वह बार-बार आपको क़त्ल की धमकियां दिया करता था। एक बार आपने जवाब में फ़रमाया कि (तुम नहीं) बल्कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, अगर अल्लाह ने चाहा।

इसके बाद जब आपने उहुद की लड़ाई के दिन उबई की गरदन पर नेज़ा मारा, तो अगरचे उससे मामूली चोट आई थी, लेकिन उबई बराबर यही कहे जा रहा था कि मुहम्मद ने मुझसे मक्का में कहा था कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, इसलिए वह अगर मुझ पर थूक ही देता तो भी मेरी जान निकल जाती।[1] (विस्तृत विवेचन आगे आ रहा है)

इसी तरह एक बार हज़रत साद बिन मुआज़ ने मक्का में उमैया बिन ख़ल्फ़ से कह दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मुसलमान तुम्हें क़त्ल करेंगे तो उससे उमैया पर बड़ी घबराहट छा गयी जो बराबर छाई रही, चुनांचे उसने प्रण कर लिया कि मक्के से बाहर ही न निकलेगा और जब बद्र की लड़ाई के मौक़े पर अबू जह्ल के आग्रह से मजबूर होकर निकलना पड़ा तो उसने मक्के से तेज़ चलने वाला ऊंट ख़रीदा, ताकि ख़तरे की घंटी बजते ही चम्पत हो जाए।

इधर लड़ाई में जाने पर तैयार देखकर उसकी बीवी ने भी टोका कि अबू सफ़वान! आपके यसरबी भाई ने जो कुछ कहा था, उसे आप भूल गए?

अबू सफ़वान ने जवाब में कहा कि नहीं, बल्कि मैं ख़ुदा की क़सम! उनके साथ थोड़ी ही दूर जाऊंगा।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 2/84
2. सहीह बुख़ारी 2/563

यह तो आपके दुश्मनों का हाल था। बाक़ी रहे आपके साथी और सहाबा तो आप तो उनके लिए जान-प्राण थे। उनके दिल की गहराइयों से आपके लिए सच्ची मुहब्बत इस तरह उबलती थी जैसे ढाल की ओर पानी बहता है और जान व दिल इस तरह आपकी ओर खिंचते थे, जैसे लोहा चुम्बक की ओर खिंचता है—

'आपका रूप हर देह का प्राण था,

और आपका अस्तित्व हर दिल के लिए चुम्बक।'

इस मुहब्बत, फ़िदाकारी और जांनिसारी का नतीजा यह था कि सहाबा किराम को यह गवारा न था कि आपके नाख़ून में चोट लगे या आपके पांव में कांटा चुभ जाए, चाहे इसके लिए उनकी गरदनें ही क्यों न काट दी जाएं।

एक दिन अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बुरी तरह कुचल दिया गया और उन्हें कड़ी मार मारी गई। उत्बा बिन रबीआ उनके क़रीब आकर उन्हें दो पैवन्द लगे हुए जूतों से मारने लगा। चेहरे को मुख्य रूप से निशाना बनाया, फिर पेट पर चढ़ गया। स्थिति यह थी कि चेहरे और नाक का पता नहीं चल रहा था। फिर उनके क़बीले बनू तैम के लोग उन्हें एक कपड़े में लपेटकर ले गए। उन्हें यक़ीन था कि अब यह ज़िंदा न बचेंगे, लेकिन दिन के ख़ात्मे के क़रीब उनकी ज़ुबान खुल गई (और ज़ुबान खुली, तो यही बोले कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क्या हुए?

इस पर बनू तैम ने उन्हें सख़्त-सुस्त कहा, निन्दा की और उनकी मां उम्मुल ख़ैर से यह कहकर उठ खड़े हुए कि इन्हें कुछ खिला-पिला देना। जब वह अकेली रह गईं, तो उन्होंने अबूबक्र रज़ि० से खाने-पीने के लिए आग्रह किया, लेकिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु यही कहते रहे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ?

आख़िरकार उम्मुल ख़ैर ने कहा, मुझे तुम्हारे साथी का हाल मालूम नहीं।

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा, उम्मे जमील बिन्त ख़त्ताब के पास जाओ और उससे मालूम करो।

वह उम्मे जमील के पास गईं और बोलीं, 'अबूबक्र तुमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे में मालूम कर रहे हैं।'

उम्मे जमील ने कहा, मैं न अबूबक्र को जानती हूं, न मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को, अलबत्ता अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बेटे के पास चल सकती हूं।

उम्मुल ख़ैर ने कहा, बेहतर है।

इसके बाद उम्मे जमील उनके साथ आई, देखा, तो अबूबक्र बड़े ही फटेहाल पड़े थे। फिर क़रीब हुई तो चीख़ पड़ीं और कहने लगीं, जिस क़ौम ने आपकी यह दुर्गति बनाई है, वह यक़ीनन बदमाश और दुश्मन क़ौम है। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह आपका बदला उनसे लेकर रहेगा।

अबूबक्र रज़ि० ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या हुए?

उन्होंने कहा, यह आपकी मां सुन रही हैं।'

कहा, 'कोई बात नहीं!'

बोलीं, आप सही-सालिम हैं।

पूछा, कहां हैं?

कहा, इब्ने अरक़म के घर में हैं।

अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा, तो फिर अल्लाह के लिए मुझ पर यह प्रतिज्ञा है कि मैं न कोई खाना खाऊंगा, न पानी पियूंगा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो जाऊं।

इसके बाद उम्मुल ख़ैर और उम्मे जमील रुकी रहीं। जब आना-जाना बन्द हो गया और स्यापा पड़ गया, तो ये दोनों अबूबक्र रज़ि० को लेकर निकलीं। वे इन पर टेक लगाए हुए थे और इस तरह उन्होंने अबूबक्र रज़ि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचा दिया।[1]

मुहब्बत और जांनिसारी की कुछ और भी अनोखी घटनाएं हम अपनी इस पुस्तक में मौक़े-मौक़े से नक़ल करेंगे, मुख्य रूप से उहुद की लड़ाई की घटनाएं और हज़रत ख़ुबैब रज़ि० के हालात बयान करते समय।

3. ज़िम्मेदारी का एहसास—सहाबा किरम जानते थे कि मिट्टी का यह पुतला, जिसे इंसान कहा जाता है, उस पर कितनी भारी-भरकम और ज़बरदस्त ज़िम्मेदारियां हैं और यह कि इन ज़िम्मेदारियों से किसी हाल में भी नहीं बचा जा सकता, क्योंकि इस बचने के जो नतीजे होंगे, वे वर्तमान ज़ुल्म व सितम से ज़्यादा भयानक और विनाशकारी होंगे और इस बचने के बाद ख़ुद उनको और सारी मानवता को जो घाटा होगा, वह इतना ज़्यादा होगा कि इस ज़िम्मेदारी के नतीजे में पेश आनेवाली कठिनाइयां इस घाटे के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखतीं।

---

1. अल-बिदाया वन्निहाया 3/30

4. आख़िरत पर ईमान—जो ऊपर लिखी ज़िम्मेदारी के एहसास को ताक़त पहुंचाने की वजह था। सहाबा किराम रज़ि० इस बात पर अडिग विश्वास रखते थे, उन्हें अपने रब के सामने खड़ा होना है, फिर उनके छोटे-बड़े और मामूली-ग़ैर मामूली हर तरह के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा। इसके बाद या तो नेमतों भरी हमेशा की जन्नत होगी या अज़ाब की भड़कती हुई जहन्नम। इस विश्वास का फल यह था कि सहाबा किराम अपनी ज़िंदगी आशा-निराशा की हालत में गुज़ारते थे, यानी अपने पालनहार की रहमत की आशा रखते थे और उसकी सज़ा का डर और उनकी स्थिति वही रहती थी जो इस आयत में बयान की गई है कि—

'वे जो कुछ करते हैं, दिल के इस डर के साथ करते हैं कि उन्हें अपने रब के पास पलट कर जाना है।'

उन्हें इस बात का भी विश्वास था कि दुनिया अपनी सारी नेमतों और मुसीबतों सहित आखिरत के मुक़ाबले में मच्छर के एक पर के बराबर भी नहीं और यह विश्वास इतना पक्का था कि उसके सामने दुनिया की सारी परेशानियां, मशक़्क़तें और कडुवाहटें तुच्छ थीं, इसलिए वे इन कठिनाइयों और कडुवाहटों को कोई हैसियत नहीं देते थे।

5. बुनियादी बातों पर पक्का यक़ीन—इन्हीं ख़तरों भरे सबसे कठिन और अंधेरे हालात में ऐसी सूरतें और आयतें भी उतर रही थीं, जिनमें बड़े ठोस और आकर्षक ढंग से इस्लाम के बुनियादी उसूलों पर दलीलें जुटाई गई थीं और उस वक़्त इस्लाम की दावत इन्हीं उसूलों के चारों ओर घूम रही थी। इन आयतों में इस्लाम वालों को ऐसी बुनियादी बातें बताई जा रही थीं, जिन पर अल्लाह ने मानवता के सबसे आदर्श और रौनक़दार समाज यानी इस्लामी समाज का गठन तै कर रखा था।

साथ ही इन आयतों में मुसलमानों को धैर्य और जमाव पर उभारा जा रहा था, इसके लिए मिसालें दी जा रही थीं और उसकी हिक्मतें बयान की जाती थीं—

'तुम समझते हो कि जन्नत में चले जाओगे, हालांकि अभी तुम पर उन लोगों जैसी हालत नहीं आई जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। वे सख़्तियों और बदहालियों से दो चार हुए और उन्हें झिंझोड़ दिया गया, यहां तक कि रसूल और जो लोग उन पर ईमान लाए थे, बोल उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। सुनो! अल्लाह की मदद क़रीब ही है। (2 : 214)

'अलिफ़-लाम-मीम० क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन्हें यह कहने पर छोड़ दिया जाएगा कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश नहीं की जाएगी! हालांकि इनसे पहले जो लोग थे हमने उनकी आज़माइश की, इसलिए (उनके बारे में भी) अल्लाह यह ज़रूर मालूम करेगा कि किन लोगों ने सच कहा और यह भी ज़रूर मालूम करेगा कि कौन लोग झूठे हैं।' (29 : 1, 2, 3)

और इन्हीं के पहलू ब पहलू ऐसी आयतें भी उतर रही थीं जिनमें विरोधियों और शत्रुओं के मुंहतोड़ जवाब दिए गए थे, उनके लिए कोई हीला छोड़ा नहीं गया था और उन्हें बड़े स्पष्ट और दो टोक शब्दों में बता दिया गया था कि अगर वे अपनी गुमराही और वैर-भाव पर अड़े रहे तो उसके नतीजे कितने संगीन होंगे। इसकी दलील में पिछली क़ौमों की ऐसी घटनाएं और ऐतिहासिक गवाहियां पेश की गई थीं, जिनसे स्पष्ट होता था कि अल्लाह की सुन्नत अपने वलियों के बारे में और अपने दुश्मनों के बारे में क्या है। फिर इस डरावे के साथ-साथ दया व कृपा की बातें भी की जा रही थीं और समझाने-बुझाने और रहनुमाई का हक़ भी अदा किया जा रहा था, ताकि रुकने वाले अपनी खुली गुमराही से रुक सकें।

सच तो यह है कि क़ुरआन मुसलमानों को एक दूसरी ही दुनिया की सैर करा रहा था और उन्हें कायनात में ख़ुदा के ऐसे-ऐसे जलवे दिखा रहा था कि उनके आकर्षण के आगे कोई रुकावट ठहर ही नहीं पा रही थी।

फिर इन्हीं आयतों की तह में मुसलमानों से ऐसे-ऐसे सम्बोधन भी होते थे कि जिनमें पालनहार की ओर से रहमत, ख़ुशी और हमेशा की नेमतों से भरी हुई जन्नत की ख़ुशख़बरी होती थी और ज़ालिम और सरकश दुश्मनों के उन हालात का चित्रण होता था कि वे रब्बुल आलमीन की अदालत में फ़ैसले के लिए खड़े किए जाएंगे। इनकी भलाइयां और नेकियां ज़ब्त कर ली जाएंगी और इन्हें चेहरों के बल घसीट कर यह कहते हुए जहन्नम में फेंक दिया जाएगा कि लो जहन्नम का मज़ा चखो।

6. सफलता की शुभ सूचनाएं—इन सारी बातों के अलावा मुसलमानों को अपनी आज़माइशों के पहले ही दिन से, बल्कि इसके पहले से, मालूम था कि इस्लाम अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि हमेशा की मुसीबतें और परेशानियां मोल ले ली गई, बल्कि इस्लामी दावत पहले दिन से अज्ञानता, अज्ञानी और उसकी अन्यायपूर्ण व्यवस्था के ख़ात्मे के इरादे रखती है और इस दावत का एक अहम निशाना यह भी है कि वह धरती पर अपना प्रभाव फैलाए और दुनिया के राजनीतिक क्षितिज पर इस तरह छा जाए कि इंसानी समूह और दुनिया की क़ौमों

को अल्लाह की मर्ज़ी की ओर ले जा सके और उन्हें बन्दों की बन्दगी से निकालकर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल कर सके।

क़ुरआन मजीद में ये शुभ-सूचनाएं, कभी संकेतों में, कभी स्पष्ट शब्दों में, उतरती थीं, चुनांचे एक ओर हालात ये थे कि मुसलमानों पर पूरी धरती अपने सारे फैलाव के बावजूद तंग बनी हुई थी और ऐसा लगता था कि अब वे पनप न सकेंगे, बल्कि उनका मुकम्मल सफ़ाया कर दिया जाएगा, मगर दूसरी ओर इन्हीं हतोत्साह करने वाले हालात में ऐसी आयतों का उतरना भी होता रहता था जिनमें पिछले नबियों की घटनाएं और उनकी क़ौम के झुठलाने और विरोधी रवैया अपनाने का विस्तृत विवरण होता था और इन मामलों में इनका जो चित्र खींचा जाता था, वह ठीक वही होता था जो मक्के के मुसलमानों और दुश्मनों के बीच पाया जाता था।

इसके बाद यह भी बताया जाता था कि इन हालात के नतीजे में किस तरह दुश्मनों और ज़ालिमों को हलाक किया गया और अल्लाह के नेक बन्दों को धरती का वारिस बनाया गया। इस तरह इन आयतों में खुला इशारा होता था कि आगे चलकर मक्का वाले नाकाम व नामुराद रहेंगे और मुसलमान और उनकी इस्लामी दावत सफलता के क़दम चूमेगी।

फिर इन्हीं हालात और दिनों में कुछ ऐसी भी आयतें उतरती थीं जिनमें स्पष्ट रूप से ईमान वालों के ग़लबे की शुभ-सूचना मौजूद होती थी, जैसे इर्शाद है कि—

'अपने भेजे हुए बन्दों के लिए हमारा पहले ही फ़ैसला हो चुका है कि उनकी ज़रूर मदद की जाएगी और यक़ीनन हमारी ही फ़ौज ग़ालिब रहेगी। पस (हे नबी! एक वक़्त तक के लिए तुम उनसे रुख़ फेर लो और उन्हें देखते रहो। बहुत जल्द ये ख़ुद भी देख लेंगे। क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं? तो जब वह उनके आंगन में उतर पड़ेगा, तो डराए गए लोगों की सुबह बुरी हो जाएगी।' (37 : 171-177)

साथ ही यह भी कहा गया—

'बहुत जल्द इस दल को परास्त कर दिया जाएगा और ये लोग पीठ फेरकर भागेंगे।' (54 : 45)

'यह जत्थों में से एक मामूली-सा जत्था है, जिसे यहां परास्त कर दिया जाएगा।' (38 : 11)

हब्शा हिजरत करने वालों के बारे में इर्शाद हुआ—

'जिन लोगों ने मज़्लूमियत (उत्पीड़न) के बाद अल्लाह की राह में हिजरत की, हम उन्हें यक़ीनन दुनिया में बेहतरन ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला बहुत बड़ा है, अगर लोग जानें।' (16 : 41)

इसी तरह कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में जानकारी चाही, तो जवाब में यह आयत उतरी—

'यूसुफ़ और उनके भाइयों (की घटना) में पूछने वालों के लिए निशानियां हैं।' (12 : 7)

यानी मक्का वाले जो आज हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की घटना पूछ रहे हैं, ये ख़ुद भी उसी तरह असफल होंगे, जिस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई असफल हुए थे और उनके हथियार डालने का हाल वही होगा, जो उनके भाइयों का हुआ था। इन्हें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उनके भाइयों की घटना से सबक़ लेना चाहिए कि ज़ालिम का अंजाम क्या होता है।

एक जगह पैग़म्बरों का उल्लेख करते हुए कहा गया—

'कुफ़्फ़ार ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे या यह कि तुम हमारी मिल्लत में वापस आ जाओ। इस पर उनके रब ने उनके पास वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को यक़ीनन हलाक कर देंगे। यह (वायदा) है उस व्यक्ति के लिए जो मेरे पास खड़े होने से डरे और मेरी धमकियों से डरे।' (14 : 13-14)

इसी तरह जित वक़्त फ़ारस व रूम में लड़ाई के शोले भड़क रहे थे और कुफ़्फ़ार चाहते थे कि फ़ारसी ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि फ़ारसी मुश्रिक थे और मुसलमान चाहते थे कि रूमी ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि रूमी बहरहाल अल्लाह पर, पैग़म्बरों पर, वह्य पर, आसमानी किताबों पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने के दावेदार थे, लेकिन ग़लबा फ़ारसियों को होता जा रहा था, तो उस वक़्त अल्लाह ने यह ख़ुशख़बरी दी कि कुछ वर्षों बाद रूमी ग़ालिब आ जाएंगे, लेकिन उस एक ख़ुशख़बरी पर बस न किया, बल्कि इसी के साथ यह ख़ुशख़बरी भी दी कि रूमियों के ग़लबे के वक़्त अल्लाह ईमान वालों की भी ख़ास मदद फ़रमाएगा, जिससे वे ख़ुश हो जाएंगे। चुनांचे इर्शाद है—

'उस दिन ईमान वाले भी अल्लाह की (एक ख़ास) मदद से ख़ुश हो जाएंगे।' (30 : 4-5)

(और आगे चलकर अल्लाह की यह मदद बद्र की लड़ाई में मिलने वाली

भारी सफलता और विजय के रूप में सामने आई।)

क़ुरआन के अलावा ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुसलमानों को कभी-कभी इस तरह की ख़ुशख़बरी सुनाया करते थे, चुनांचे हज के मौसम में आप उकाज़, मजना और ज़ुलमजाज़ के बाज़ारों में लोगों के अन्दर दीन का पैग़ाम पहुंचाने के लिए तशरीफ़ ले जाते, तो सिर्फ़ जन्नत ही की ख़ुशख़बरी नहीं देते थे, बल्कि दो टोक शब्दों में इसका भी एलान फ़रमाते थे—

'लोगो! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, सफल रहोगे और इसकी बुनियाद पर अरब के बादशाह बन जाओगे और इसकी वजह से अजम भी तुम्हारे क़दमों में आ जाएगा। फिर जब वफ़ात पा जाओगे तो जन्नत के अन्दर बादशाह रहोगे।'[1]

यह घटना पिछले पन्नों में आ चुकी है कि जब उत्बा बिन रबीआ ने आपको दुनिया की पूंजी की पेशकश करके सौदेबाज़ी करनी चाही और आपने जवाब में हा-मीम तंज़ील अस्सज्दा की आयतें पढ़कर सुनाईं तो उत्बा को यह आशा हो गई कि अन्ततः आप ग़ालिब रहेंगे।

इसी तरह अबू तालिब के पास आने वाले क़ुरैश के आख़िरी दल से आपकी जो बातें हुई थीं, उसका भी विवरण बीत चुका है। इस मौक़े पर भी आपने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि आप उनसे सिर्फ़ एक बात चाहते हैं, जिसे वे मान लें तो अरब उनके अधीन आ जाएं और अजम पर उनकी बादशाही क़ायम हो जाए।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त का इर्शाद है कि एक बार मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप काबे के साए में एक चादर को तकिया बनाए तशरीफ़ फ़रमा थे। उस वक़्त हम मुश्रिकों के हाथों सख़्ती से दो चार थे। मैंने कहा—

'क्यों न आप अल्लाह से दुआ फ़रमाएं?'

यह सुनकर आप उठ बैठे। आपका चेहरा लाल हो गया और आपने फ़रमाया, जो लोग तुमसे पहले थे, उनकी हड्डियों तक में गोश्त और अंगों के साथ लोहे की कंघियां कर दी जाती थीं, लेकिन यह सख़्ती भी उन्हें दीन पर चलने से रोक न पाती थी।'

फिर आपने फ़रमाया, अल्लाह इस दीन को मुकम्मल करके रहेगा, यहां तक कि एक सवार सनआ से हज़र मौत तक जाएगा और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा। अलबत्ता बकरी पर भेड़िए का डर होगा।[2]

---

1. इब्ने साद 1/216
2. सहीह बुख़ारी 1/543

एक रिवायत में इतना और भी है कि—

'लेकिन तुम लोग जल्दी कर रहे हो।'[1]

याद रहे कि ये ख़ुशख़बरियां कुछ ढकी-छिपी न थीं, बल्कि काफ़ी मशहूर थीं और मुसलमानों ही की तरह कुफ़्फ़ार भी इन्हें जानते थे। चुनांचे जब अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब और उसके साथी सहाबा किराम को देखते तो ताने देते हुए आपस में कहते कि लीजिए, आपके पास धरती के बादशाह आ गए हैं। यह जल्द ही क़ैसर व किसरा के बादशाहों पर ग़ालिब आ जाएंगे। इसके बाद वे सीटियां और तालियां बजाते।[2]

बहरहाल सहाबा किराम के ख़िलाफ़ उस वक़्त ज़ुल्म व सितम और मुसीबतों और तक्लीफ़ों का भारी-भरकम तूफ़ान आया हुआ था, उसकी हैसियत जन्नत हासिल करने की इन यक़ीनी उम्मीदों और रोशन भविष्य की उन ख़ुशख़बरियों के मुक़ाबले में उस बादल से ज़्यादा न थी, जो हवा के एक ही झोंके से बिखरकर फट जाता है।

इसके अलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईमान वालों को ईमानी चाहतों के ज़रिए बराबर रूहानी भोजन जुटा रहे थे। किताब व हिक्मत की तालीम के ज़रिए उनके नफ़्स को पाक कर रहे थे। बड़ी शानदार और गहरी तर्बियत दे रहे थे और रूह की ऊंचाई, दिल की सफ़ाई, अख़्लाक़ की पाकी, माद्दी ग़लबे से आज़ादी, वासनाओं से मुक्ति रब की ओर खिंचाव जैसी ख़ूबियों को परवान चढ़ा रहे थे। आप उनके दिलों की बुझती हुई चिंगारी को भड़कते हुए शोलों में तब्दील कर देते थे और उन्हें अंधेरों से निकालकर हिदायत की रोशनी में पहुंचा रहे थे। उन्हें पीड़ाओं पर धीरज से काम लेने को कह रहे थे।

इसका नतीजा यह था कि उनकी दीनी मज़बूती हर दिन बढ़ती चली गई और वे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे भागने से बचने, ख़ुदा की रिज़ा के लिए जान दे देने, जन्नत के शौक़, ज्ञान का लोभ, दीन की समझ, नफ़्स की पकड़, भावनाओं को दबाने, रुझानों को मोड़ने, उग्रता की लहरों पर क़ाबू पाने और सब्र व सुकून और मान-मर्यादा की पाबन्दी करने में मानवता का आदर्श बन गए।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/510
2. अस्सीरतुल हलबीया 1/511, 512

तीसरा मरहला

मक्का के बाहर इस्लाम की दावत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तायफ़ में

शव्वाल सन् 10 नबवी (मई का अन्त या जून 619 ई० का शुरू) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ तशरीफ़ ले गए। यह मक्के से एक सौ तीस किलोमीटर से ज़्यादा दूर है। आपने यह दूरी आते-जाते पैदल तै फ़रमाई थी। आपके साथ आपके आज़ाद किए हुए दास हज़रत ज़ैद बिन हारिसा थे।

रास्ते में जिस क़बीले से गुज़र होता, उसे इस्लाम की दावत देते, लेकिन किसी ने भी यह दावत कुबूल नहीं की। जब ताइफ़ पहुंचे तो क़बीला सक़ीफ़ के तीन सरदारों के पास तशरीफ़ ले गए, जो आपस में भाई थे और जिनके नाम ये थे—

अब्दिया लैल, मस्ऊद और हबीब।

इन तीनों के पिता का नाम अम्र बिन उमैर सक़फ़ी था।

आपने उनके पास बैठने के बाद उन्हें अल्लाह की इताअत और इस्लाम की मदद की दावत दी। जवाब में एक ने कहा—

'वह काबे का परदा फाड़े अगर अल्लाह ने तुम्हें रसूल बनाया हो।'[1]

दूसरे ने कहा, 'क्या अल्लाह को तुम्हारे अलावा और कोई न मिला?'

तीसरे ने कहा, 'मैं तुमसे हरगिज़ बात न करूंगा। अगर तुम वाक़ई पैग़म्बर हो तो तुम्हारी बात रद्द करना मेरे लिए बहुत ही ख़तरनाक है और अगर तुमने अल्लाह पर झूठ गढ़ रखा है, तो फिर मुझे तुमसे बात करनी ही नहीं चाहिए।'

यह जवाब सुनकर आप वहां से उठ खड़े हुए और सिर्फ़ इतना कहा—

'तुम लोगों ने जो कुछ किया, बहरहाल इसे छिपाए रखना।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ में दस दिन ठहरे रहे। इस बीच आप उनके एक-एक सरदार के पास तशरीफ ले गए और हर एक से बात की, लेकिन सबका एक ही जवाब था कि तुम हमारे शहर से निकल जाओ, बल्कि

---

1. यह उर्दू के उस मुहावरे से मिलता-जुलता है कि 'अगर तुम पैग़म्बर हो, तो अल्लाह मुझे ग़ारत करे।' अभिप्राय यह विश्वास व्यक्त करना है कि तुम्हारा पैग़म्बर होना नामुम्किन है, जैसे काबे के परदे पर हाथ डालना नामुम्किन है।

उन्होंने अपने गुंडों को उभार दिया।

चुनांचे जब आपने वापसी का इरादा किया, तो ये गुंडे गालियां देते, तालियां पीटते और शोर मचाते आपके पीछे लग गए और देखते-देखते इतनी भीड़ जमा हो गई कि आपके रास्ते के दोनों ओर लाइन लग गई। फिर गालियों और अपशब्दों के साथ-साथ पत्थर भी चलने लगे, जिससे आपकी एड़ी पर इतने घाव अए कि दोनों जूते ख़ून में तर ब तर हो गये।

इधर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ढाल बनकर पत्थरों को रोक रहे थे, जिससे उनके सर में कई जगह चोट आई। बदमाशों ने यह सिलसिला बराबर जारी रखा, यहां तक कि आपको रबीआ के बेटों उत्बा और शैबा के एक बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। यह बाग़ ताइफ़ से तीन मील की दूरी पर स्थित था।

जब आपने यहां पनाह ली तो भीड़ वापस चली गई और आप एक दीवार से टेक लगाकर अंगूर की बेल के साए में बैठ गए। कुछ इत्मीनान हुआ तो दुआ फ़रमाई, जो 'कमज़ोरों की दुआ' के नाम से मशहूर है। इस दुआ के एक-एक वाक्य से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि ताइफ़ में इस दुष्टता को भोगने के बाद और किसी एक भी व्यक्ति के ईमान न लाने की वजह से आपका दिल कितना टूटा होगा और आपका मन दुख और अफ़सोस की भावनाओं से कितना भर गया होगा। आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! मैं तुझी से अपनी कमज़ोरी, बेबसी और लोगों के नज़दीक अपनी बे-क़द्री का शिकवा करता हूं, ऐ दया करने वालों में सबसे बड़े दया करने वाले! तू कमज़ोरों का रब है और तू ही मेरा भी रब है, तू मुझे किसके हवाले कर रहा है? क्या किसी बेगाने के, जो मेरे साथ दुव्यर्वहार करे या किसी दुश्मन के, जिसको तूने मेरे मामले का मालिक बना दिया है? अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है तो मुझे कोई परवाह नहीं। लेकिन मेरी कुशलता का द्वार मेरे लिए ज़्यादा खुला हुआ है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह चाहता हूं जिससे अंधेरे जगमगा उठें और जिस पर दुनिया व आख़िरत के मामले ठीक हुए कि तू मुझ पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे या तेरा गुस्सा मुझ पर उतरे। तेरी ही रज़ा मुझे चाहिए, यहां तक कि तू ख़ुश हो जाए और तेरे बिना कोई ज़ोर और ताक़त नहीं।'

इधर आपको रबीआ के बेटों ने इस हालत में देखा तो उनकी रिश्तेदारी की भावना ने जोश मारा और उन्होंने अपने एक ईसाई दास को, जिसका नाम अदास था, बुलाकर कहा कि इस अंगूर से एक गुच्छा लो और उस व्यक्ति को दे

आओ। जब उसने अंगूर आपको दिया, तो आपने 'बिस्मिल्लाह' कहकर हाथ बढ़ाया और खाना शुरू किया।

अदास ने कहा, 'यह वाक्य तो इस क्षेत्र के लोग नहीं बोलते?'

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, तुम कहां के रहने वाले हो? और तुम्हारा दीन क्या है?

उसने कहा, 'मैं ईसाई हूं और नैनवा का रहने वाला हूं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा, तुम भले व्यक्ति यूनुस बिन मत्ती की बस्ती के रहने वाले हो।

उसने कहा, आप यूनुस बिन मत्ती को कैसे जानते हैं?

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, वह मेरे भाई थे, वह नबी थे और मैं भी नबी हूं।

यह सुनकर अदास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झुक पड़ा और आपके सर और हाथ-पांव को बोसा दिया।

यह देखकर रबीआ के दोनों बेटों ने आपस में कहा, लो, अब इस व्यक्ति ने हमारे दास को बिगाड़ दिया।

इसके बाद जब अदास वापस आया तो दोनों ने उससे कहा, अजी! यह क्या मामला था?

उसने कहा, मेरे मालिक! धरती पर इस व्यक्ति से बेहतर और कोई नहीं। उसने मुझे एक ऐसी बात बताई है जिसे नबी के सिवा कोई नहीं जानता।

इन दोनों ने कहा, देखो अदास, कहीं यह व्यक्ति तुम्हें दीन से फेर न दे, क्योंकि तुम्हारा दीन इसके दीन से बेहतर है।[1]

थोड़ा ठहर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाग़ से निकले तो मक्का के रास्ते पर चल पड़े। दुख व पीड़ा से तबियत निढाल और दिल टुकड़े-टुकड़े था। क़र्नेमनाज़िल पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिश्ता था। वह आपसे यह निवेदन करने आया था कि आप हुक्म दें तो वह मक्का वालों को दो पहाड़ों के बीच पीस डाले।

इस घटना को सविस्तार सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया गया है। उनका बयान है कि उन्होंने एक दिन अल्लाह के रसूल

1. ख़ुलासा इब्ने हिशाम 1/419, 421

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि क्या आप पर कोई दिन ऐसा भी आया है जो उहुद के दिन से ज़्यादा संगीन रहा हो?

आपने फ़रमाया, हां। तुम्हारी क़ौम से मुझे जिन-जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा, उनमें सबसे संगीन मुसीबत वह थी, जिसमें मैं घाटी के दिन दो चार हुआ, जब मैंने अपने आपको अब्दिया लैल बिन अब्दे कुलाल के लड़के पर पेश किया, मगर उसने मेरी बात न मानी, तो मैं दुख और पीड़ा से निढाल अपने रुख़ पर चल पड़ा और मुझे क़र्ने सआलिब पहुंचकर ही सुकून हुआ। वहां मैंने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर छाया हुआ है। मैंने ध्यान से देखा तो उसमें हज़रत जिब्रील थे। उन्होंने मुझे पुकारकर कहा—

आपकी क़ौम ने आपको जो बात कही, अल्लाह ने उसे सुन लिया है। अब उसने आपके पास पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है, ताकि आप उनके बारे में उन्हें जो चाहें हुक्म दें।

इनके बाद पहाड़ों के फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और सलाम करने के बाद कहा—

ऐ मुहम्मद सल्ल० ! बात यही है। अब आप जो चाहें. . . . अगर चाहें कि मैं इन्हें दो पहाड़ों[1] के बीच कुचल दूं, तो ऐसा ही होगा।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करेगा जो सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करेगी और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएगी।[2]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस जवाब में आपकी महानता और चरित्र की श्रेष्ठता की झलक देखी जा सकती है। बहरहाल अब सात आसमानों के ऊपर से आने वाली इस ग़ैबी (अप्रत्यक्ष) मदद की वजह से आपका दिल सन्तुष्ट हो गया और दुख व कष्ट के बादल छंट गये। चुनांचे आप मक्के के रास्ते पर और आगे बढ़े और नख़्ला की घाटी में ठहरे।

---

1. इस मौक़े पर सहीह बुख़ारी में शब्द 'अख़्शबीन' इस्तेमाल किया गया है, जो मक्का के दो मशहूर पहाड़ों अबू क़ुबीस और क़ैक़आन के लिए बोला जाता है। ये दोनों पहाड़ क्रमवार हरम के दक्षिण-उत्तर में आमने-सामने स्थित हैं। उस वक़्त मक्के की आम आबादी इन्हीं दो पहाड़ों के बीच में थी।
2. सहीह बुख़ारी किताब ब-दअल ख़ल्क़ 1/458, मुस्लिम बाब मालक़ियन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन अज़ल मुश्रिकीन वल मुनाफ़िक़ीन 2/109

यहां दो जगहें ठहरने लायक हैं—एक अस्सैलुल कबीर और दूसरे ज़ैमा, क्योंकि दोनों ही जगह पानी और हरियाली मौजूद हैं, लेकिन किसी स्रोत से यह न मालूम हो सका कि आप इनमें से किस जगह ठहरे थे।

नख़्ला की घाटी में आप कुछ दिन ठहरे रहे। इस बीच अल्लाह ने आपके पास जिन्नों का एक दल भेजा[1] जिसका उल्लेख क़ुरआन मजीद में दो जगह हुआ है। एक सूरः अहक़ाफ़ में, दूसरे सूरः जिन्न में। सूरः अहक़ाफ़ की आयतें ये हैं—

'और जबकि हमने आपकी ओर जिन्नों के एक गिरोह को फेरा कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे क़ुरआन (की तिलावत) की जगह पहुंचे तो उन्होंने आपस में कहा कि चुप हो जाओ। फिर जब उसकी तिलावत पूरी की जा चुकी, तो वे अपनी क़ौम की ओर अज़ाबे इलाही से डराने वाले बनकर पलटे। उन्होंने कहा, ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली है, हक़ और सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा।' (46 : 29-31)

सूरः जिन्न की आयतें ये हैं—

'आप कह दें, मेरी ओर यह वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना, और आपस में कहा कि हमने एक विचित्र क़ुरआन सुना है जो सीधी रहनुमाई करता है। हम उस पर ईमान लाए हैं और हम अपने रब के साथ किसी को हरगिज़ शरीक नहीं कर सकते।' (सूरः जिन्न की 15 आयतों तक)

ये आयतें जो इस घटना का उल्लेख कर रही हैं, इनके आगे-पीछे पढ़ने से लगता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शुरू में जिन्नों के इस दल के आने का ज्ञान न हो सका था, बल्कि जब इन आयतों के ज़रिए अल्लाह की ओर से आपको ख़बर दी गई तब आप जान सके। यह भी मालूम होता है कि जिन्नों का यह आना पहली बार हुआ था और हदीसों से पता चलता है कि इसके बाद उनका आना-जाना होता रहा।

जिन्नों के आने और उनके इस्लाम स्वीकार करने की घटना वास्तव में अल्लाह की ओर से दूसरी मदद थी, जो उसने अपने परदे की तहों में छिपे ख़ज़ाने से इस

1. देखिए सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाबु अल जहरु बिक़िराति सलातिल फ़ज्रि 1/195

दल के ज़रिए फ़रमाई थी, जिसका ज्ञान अल्लाह के सिवा किसी को नहीं। फिर इस घटना के ताल्लुक़ से जो आयतें उतरीं, उनके बीच में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की कामियाबी की ख़ुशख़बरियां भी हैं और इस बात की व्याख्या भी कि सृष्टि की कोई भी ताक़त इस दावत की कामियाबी के रास्तों में रुकावट नहीं हो सकती, चुनांचे इर्शाद है—

'जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की दावत न क़ुबूल करे, वह ज़मीन में (अल्लाह को) बेबस नहीं कर सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई कर्त्ता-धर्त्ता है भी नहीं और ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं।' (46 : 32)

'हमारी समझ में आ गया है कि हम अल्लाह को ज़मीन में बेबस नहीं कर सकते और न हम भाग कर ही उसे (पकड़ने में) विवश कर सकते हैं।'

(72 : 12)

इस मदद और इन ख़ुशख़बरियों के सामने दुख, कष्ट और निराशा के वे सारे बादल छट गए जो ताइफ़ से निकलते वक़्त गालियां और तालियां सुनने और पत्थर खाने की वजह से आप पर छाए गए थे। आपने पक्का इरादा कर लिया कि अब मक्का पलटना है और नए सिरे से इस्लाम की दावत और रिसालत की तब्लीग़ के काम में चुस्ती और मुस्तैदी के साथ लग जाना है। यही मौक़ा था जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने आपसे कहा कि आप मक्का कैसे जाएंगे, जबकि वहां के रहने वालों ने यानी क़ुरैश ने आपको निकाल दिया है?

जवाब में आपने फ़रमाया, ऐ ज़ैद! तुम जो हालत देख रहे हो, अल्लाह उससे बचाने और नया रास्ता बनाने की कोई शक्ल ज़रूर पैदा करेगा। अल्लाह यक़ीनन अपने दीन की मदद करेगा और अपने नबी को ग़ालिब फ़रमाएगा।

आख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से रवाना हुए और मक्के के क़रीब पहुंच कर हिरा पहाड़ी के दामन में ठहर गए। फिर ख़ुज़ाआ के एक आदमी के ज़रिए अख़नस बिन शुरैक़ को यह सन्देश भेजा कि वह आपको पनाह दे दे, पर अख़नस ने यह कहकर विवशता दिखाई कि मैं क़ुरैश का मित्र हूं और मित्र पनाह देने का अधिकार नहीं रखता।

इसके बाद आपने सुहैल बिन अम्र के पास यही सन्देश भेजा, पर उसने भी यह कहकर विवशता दिखाई कि बनू आमिर की दी हुई पनाह बनू काब पर लागू नहीं होती।

इसके बाद आपने मुतइम बिन अदी के पास पैग़ाम भेजा।

मुतइम ने कहा, हां। और फिर हथियार पहनकर अपने बेटों और क़ौम के

लोगों को बुलाया और कहा कि तुम लोग हथियार बांध कर ख़ाना काबा के कोनों में जमा हो जाओ, क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्ल० को पनाह दे दी है।

इसके बाद मुतइम ने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास पैग़ाम भेजा कि मक्के के अन्दर आ जाओ।

आप पैग़ाम पाने के बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को साथ लेकर मक्का तशरीफ़ लाए और मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए। इसके बाद मुतइम बिन अदी ने अपनी सवारी पर खड़े होकर एलान किया कि क़ुरैश के लोगो! मैंने मुहम्मद को पनाह दे दी है, अब उसे कोई न छेड़े।

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सीधे हजरे अस्वद के पास पहुंचे, उसे चूमा, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और अपने घर को पलट आए। इस बीच मुतइम बिन अदी और उनके लड़कों ने हथियार बन्द होकर आपके चारों ओर हलक़ा उस वक़्त तक बांधे रखा, जब तक कि आप अपने मकान के अन्दर तशरीफ़ न ले गए।

कहा जाता है कि इस मौक़े पर अबू जह्ल ने मुतइम से पूछा था, तुमने पनाह दी है या पैरवी करने वाले (यानी मुसलमान) बन गए हो?

मुतइम ने जवाब दिया था, पनाह दी है।

इस जवाब को सुनकर अबू जह्ल ने कहा था, जिसे तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दी।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतइम बिन अदी के सद्व्यवहार को कभी न भुलाया, चुनांचे बद्र में जब मक्का के कुफ़्फ़ार की एक बड़ी तायदाद क़ैद होकर आई और कुछ क़ैदियों की रिहाई के लिए हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि० आपकी सेवा में आए, तो आपने फ़रमाया—

'अगर मुतइम बिन अदी ज़िंदा होता, फिर मुझसे इन बदबूदार लोगों के बारे में बातें करता, तो उसके लिए मैं इन सबको छोड़ देता।'[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/381 (संक्षिप्त), ज़ादुल मआद 2/46, 47
2. सहीह बुख़ारी 2/573

क़बीलों और व्यक्तियों को इस्लाम की दावत

ज़ीक़ादा 10 नबवी (सन् 619 ई० के जून का आख़िरी हिस्सा या जुलाई का शुरूका हिस्सा) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ से मक्का तशरीफ़ लाए और यहां क़बीलों और व्यक्तियों को फिर से इस्लाम की दावत देनी शुरू की। चूंकि हज का मौसम क़रीब था, इसलिए हज अदा करने, अपने मुनाफ़े और अल्लाह की याद के लिए दूर व नज़दीक हर जगह से पैदल और सवारों का आना शुरू हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और एक-एक क़बीले के पास जाकर उसे इस्लाम की दावत दी, जैसा कि नुबूवत के चौथे साल से आपका तरीक़ा था। अलबत्ता इस दसवें साल से आपने यह भी चाहा कि वह आपको ठिकाना जुटाएं, आपकी सहायता करें और आपकी रक्षा करें, यहां तक कि अल्लाह की दी हुई बात का आप प्रचार कर सकें।

वे क़बीले, जिन्हें इस्लाम की दावत दी गई

इमाम ज़ोहरी रह० फ़रमाते हैं कि जिन क़बीलों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गए और उन्हें इस्लाम की दावत देते हुए अपने आपको उन पर पेश किया, उनमें नीचे लिखे क़बीलों के नाम हमें बताए गए हैं—

बनू आमिर बिन सासआ, मुहारिब बिन ख़सफ़ा, फ़ज़ारा, ग़स्सान, मुर्रा, हनीफ़ा, सुलैम, अबस, बनू नस्र, बनुल बका कन्दा, कल्ब, हारिस बिन काब, उज़रा, हज़ारमा, लेकिन इनमें से किसी ने भी इस्लाम क़ुबूल न किया।[1]

स्पष्ट रहे कि इमाम ज़ोहरी के उल्लिखित इन सारे क़बीलों पर एक ही साल या हज के एक ही मौसम में इस्लाम नहीं पेश किया गया था, बल्कि नुबूवत के चौथे साल से हिजरत से पहले के हज के आख़िरी मौसम तक दस साल की इस मुद्दत में पेश किया गया था और किसी निश्चित वर्ष में किसी निश्चित क़बीले पर इस्लाम पेश करने के समय को निश्चित नहीं किया जा सकता, अलबत्ता अधिकतर क़बीलों के पास आप दसवें साल तशरीफ़ ले गए।[2]

---

1. तिर्मिज़ी, मुख़्तसरुस्सीर:, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 149
2. देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/74

इब्ने इस्हाक़ ने कुछ क़बीलों पर इस्लाम की पेशी और उनके जवाब का भी उल्लेख किया है। नीचे संक्षेप में उनका बयान नक़ल किया जा रहा है—

1. बनू कल्ब—नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस क़बीले की एक शाखा बनू अब्दुल्लाह के पास तशरीफ़ ले गए। उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आपको उन पर पेश किया। बातों-बातों में यह भी फ़रमाया कि ऐ बनू अब्दुल्लाह! अल्लाह ने तुम्हारे परदादा का नाम बहुत अच्छा रखा था, लेकिन उस क़बीले ने आपकी दावत क़ुबूल न की।

2. बनू हनीफ़ा—आप इनके डेरे पर तशरीफ़ ले गए। इन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आपको उन पर पेश किया, लेकिन उनके जैसा बुरा जवाब अरबों में से किसी ने भी न दिया।

3. आमिर बिन सासआ—इन्हें भी आपने अल्लाह की ओर दावत दी और अपने आपको उन पर पेश किया। जवाब में उनके एक आदमी बुहैरा बिन फ़रास ने कहा, ख़ुदा की क़सम! अगर मैं क़ुरैश के इस जवान को ले लूं, तो इसके ज़रिए पूरे अरब को खा जाऊंगा।

फिर उसने पूछा, अच्छा यह बताइए, अगर हम आपसे आपके इस दीन पर बैअत (वचन) कर लें, फिर अल्लाह आपको विरोधियों पर ग़लबा दे दे, तो क्या आपके बाद सत्ता हमारे हाथ में होगी?

आपने फ़रमाया, सत्ता तो अल्लाह के हाथ में है, वह जहां चाहेगा, रखेगा।

इस पर उस व्यक्ति ने कहा, ख़ूब, आपकी रक्षा में तो हमारा सीना अरबों के निशाने पर रहे, लेकिन जब अल्लाह आपको ग़लबा दे, तो सत्ता किसी और के हाथ में हो। हमें आपके दीन की ज़रूरत नहीं, ग़रज़ उन्होंने इंकार कर दिया।

इसके बाद जब क़बीला बनू आमिर अपने इलाक़े में वापस गया, तो अपने एक बूढ़े आदमी को, जो बुढ़ापे की वजह से हज में शरीक न हो सका था, सारा क़िस्सा सुनाया, और बताया कि हमारे पास क़ुरैश क़बीले के ख़ानदान बनू अब्दुल मुत्तलिब का एक जवान आया था, जिसका ख़्याल था कि वह नबी है। उसने हमें दावत दी कि हम उसकी हिफ़ाज़त करें और उसका साथ दें और अपने इलाक़े में ले आएं।

यह सुनकर उस बूढ़े ने दोनों हाथों से सर थाम लिया और बोला—

'ऐ बनू आमिर! क्या अब इस क्षतिपूर्ति का कोई रास्ता है? और क्या उस व्यक्ति को ढूंढा जा सकता है? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में फ़्लां की

जान है, किसी इस्माईली ने कभी इस (नुबूवत) का झूठा दावा नहीं किया। यह यक़ीनन हक़ है, आख़िर तुम्हारी अक़्ल कहां चली गई थी ?[1]

ईमान की किरणें मक्के से बाहर

जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीलों और समूहों पर इस्लाम पेश किया, उसी तरह व्यक्तियों को भी इस्लाम की दावत दी और कुछ ने अच्छा जवाब भी दिया। फिर हज के इस मौसम के कुछ ही दिनों बाद कई लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया। नीचे उनकी एक 'छोटी सी झलक पेश की जा रही है।

1. सुवैद बिन सामित—यह कवि थे, गहरी सूझ-बूझ वाले, यसरिब के रहने वाले, इनके उच्चकोटि के कवि होने और श्रेष्ठ वंश के व्यक्ति होने की वजह से इनकी क़ौम ने इन्हें 'कामिल' की उपाधि दी थी। यह हज या उमरा के लिए तशरीफ़ ले आए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हें इस्लाम की दावत दी, कहने लगे—

'शायद आपके पास जो कुछ है, वह वैसा ही है, जैसा मेरे पास है !'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास क्या है ?

सुवैद ने कहा, 'लुक़मान की हिक्मत !'

आपने फ़रमाया, पेश करो।

उन्होंने पेश किया। आपने फ़रमाया—

'यह कलाम यक़ीनन अच्छा है, लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह इससे भी अच्छा है। वह क़ुरआन है, जो अल्लाह ने मुझ पर उतारा है, वह हिदायत और नूर है।' इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया और इस्लाम की दावत दी।

उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और बोले, यह तो बहुत ही अच्छा कलाम है।

इसके बाद वह मदीना पलट कर आए ही थे कि बुआस की लड़ाई से पहले औस व ख़ज़रज की एक लड़ाई में क़त्ल कर दिए गए।[2]

उन्होंने सन् 11 नबवी के शुरू में इस्लाम क़ुबलू किया था।

---

1. इब्ने हिशाम 1/424-425
2. इब्ने हिशाम 1/425-427, अल-इस्तीआब 2/677, असदुल ग़ाबा 2/337

2. इयास बिन मुआज़—यह भी यसरिब के रहने वाले थे और थे नवयुवक। सन् 11 नबवी में बुआस की लड़ाई से कुछ पहले औस का एक प्रतिनिधि मंडल ख़ज़रज के ख़िलाफ़ क़ुरैश से मिताई करने मक्का आया था। आप भी उसके साथ तशरीफ़ लाए थे। उस वक़्त यसरिब में इन दोनों क़बीलों के दर्मियान दुश्मनी की आग भड़क रही थी और औस की तायदाद ख़ज़रज से कम थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रतिनिधि मंडल के आने का ज्ञान हुआ, तो आप उनके पास तशरीफ़ ले गए और उनके बीच बैठकर यों कहा—

'आप लोग जिस मक़्सद के लिए तशरीफ़ लाए हैं, क्या इससे बेहतर चीज़ क़ुबूल कर सकते हैं?'

उन सबने कहा, वह क्या चीज़ है?

आपने फ़रमाया, 'मैं अल्लाह का रसूल हूं। अल्लाह ने मुझे अपने बन्दों के पास इस बात की दावत देने के लिए भेजा है कि वे अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें। अल्लाह ने मुझ पर किताब भी उतारी है।'

फिर आपने इस्लाम का ज़िक्र किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई।

इयास बिन मुआज़ बोले, 'ऐ क़ौम! यह अल्लाह की क़सम, उससे बेहतर है जिसके लिए आप लोग यहां तशरीफ़ लाए हैं, लेकिन दल के एक सदस्य अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ ने एक मुट्ठी कंकड़ी उठाकर इयास के मुंह पर दे मारी और बोला—

'यह बात छोड़ो, मेरी उम्र की क़सम! यहां हम इसके बजाए दूसरे मक़्सद से आए हैं।'

इयास चुप हो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उठ गए। दल क़ुरैश के साथ मैत्री समझौता करने में सफल न हो सका और यों ही नाकाम मदीना वापस हो गया।

मदीना पहुंचने के थोड़े दिनों बाद इयास इंतिक़ाल कर गए। वह अपनी वफ़ात के वक़्त तक्बीर व तह्लील और हम्द व तस्बीह (रब के गुणगान वाले शब्द हैं) कर रहे थे। इसलिए लोगों को यक़ीन है कि उनकी वफ़ात इस्लाम पर हुई।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/427-428, मुस्नद अहमद, 5/427

3. अबूज़र ग़िफ़ारी—यह यसरिब के बाहरी भाग के रहने वाले थे। जब सुवैद बिन सामित और इयास बिन मुआज़ के ज़रिए यसरिब में नबी के आने की ख़बर पहुंची, तो शायद यह ख़बर अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के कान से भी टकराई और यही उनके इस्लाम लाने की वजह बनी।

इनके इस्लाम लाने की घटना का सहीह बुख़ारी में सविस्तार उल्लेख हुआ है। इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया—

मैं क़बीला ग़िफ़ार का एक आदमी था। मुझे मालूम हुआ कि मक्के में एक आदमी ज़ाहिर हुआ है, जो अपने आपको नबी कहता है। मैंने अपने भाई से कहा, तुम उस आदमी के पास जाओ, उससे बात करो और मेरे पास उसकी ख़बर लाओ।

वह गया, मुलाक़ात की और वापस आया। मैंने पूछा, 'क्या ख़बर लाए हो?'

बोला, ख़ुदा की क़सम! मैंने एक ऐसा आदमी देखा है, जो भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है।

मैंने कहा, तुमने सन्तोषजनक ख़बर नहीं दी।

आख़िर मैंने ख़ुद रास्ते का खाना लिया और डंडा उठाया और मक्का के लिए चल पड़ा। (वहां पहुंच तो गया) लेकिन आपको पहचानता न था और यह भी पसन्द न था कि आपके बारे में किसी से मालूम करूं।

चुनांचे मैं ज़मज़म का पानी पीता और मस्जिदे हराम में पड़ा रहता। आख़िर मेरे पास से अली रज़ि० का गुज़र हुआ, कहने लगे, आदमी अनजाना मालूम होता है।

मैंने कहा, जी हां।

उन्होंने कहा, अच्छा तो घर चलो।

मैं उनके साथ चल पड़ा। न वह मुझसे कुछ पूछ रहे थे, न मैं उनसे कुछ पूछ रहा था और न उन्हें कुछ बता ही रहा था।

सुबह हुई तो मैं इस इरादे से फिर मस्जिदे हराम गया कि आपके बारे में मालूम करूं। लेकिन कोई न था जो मुझे आपके बारे में कुछ बताता। आख़िर मेरे पास से फिर हज़रत अली रज़ि० गुज़रे। (देखकर) बोले, लगता है इस आदमी को अभी अपना ठिकाना न मालूम हो सका।

मैंने कहा, नहीं।

उन्होंने कहा, अच्छा तो मेरे साथ चलो।

इसके बाद उन्होंने कहा, अच्छा तुम्हारा मामला क्या है? और तुम इस शहर में क्यों आए हो?

मैंने कहा, आप राज़दारी से काम लें, तो बताऊं?

उन्होंने कहा, ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।

मैंने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि यहां एक आदमी ज़ाहिर हुआ है, जो अपने आपको अल्लाह का नबी बताता है। मैंने आपने भाई को भेजा कि वह बात करके आए, मगर उसने पलटकर कोई सन्तोषजनक बात न बताई। इसलिए मैंने सोचा कि ख़ुद ही मुलाक़ात कर लूं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, भाई! तुम सही जगह पहुंचे। देखो, मेरा रुख़ उन्हीं की ओर है। जहां मैं घुसूं वहां तुम भी घुस जाना और हां, अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूंगा, जिससे तुम्हारे लिए ख़तरा है, तो दीवार की ओर इस तरह जा रहूंगा, मानो अपना जूता ठीक कर रहा हूं, लेकिन तुम रास्ता चलते रहना।

इसके बाद हज़रत अली रज़ि० रवाना हुए और मैं भी साथ-साथ चल पड़ा, यहां तक कि वह अन्दर दाख़िल हुए और मैं भी उनके साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जा दाख़िल हुआ और बोला—

'आप मुझ पर इस्लाम पेश करें।'

आपने इस्लाम पेश फ़रमाया और मैं वहीं मुसलमान हो गया। इसके पास आपने मुझसे फ़रमाया—

'ऐ अबूज़र! इस मामले को अभी छिपाए रखो और अपने इलाक़े में वापस चले जाओ! जब हमारे ज़ाहिर होने की ख़बर मिले, तो आ जाना।'

मैंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, मैं तो उनके बीच खुल्लम खुल्ला इसका एलान करूंगा।

इसके बाद मैं मस्जिदे हराम आया। कुरैश मौजूद थे। मैंने कहा—

'कुरैश के लोगो! मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।'

लोग चिल्लाए, उठो, इस बेदीन (विधर्मी) की ख़बर लो।

लोग उठ खड़े हुए और मुझे इतना मारा कि मर जाता, लेकिन हज़रत अब्बास रज़ि० ने आकर बचाया।

उन्होंने मुझे झुककर देखा, फिर कुरैश की ओर पलटकर कहा—

'तुम्हारी बर्बादी हो, तुम लोग ग़िफ़ार के आदमी को मारे दे रहे हो, हालांकि तुम्हारा कारोबार और कारोबारी रास्ता ग़िफ़ार ही से होकर जाता है।'

इस पर लोग मुझे छोड़कर हट गए।

दूसरे दिन सुबह हुई तो मैं फिर वहीं गया और जो कुछ कहा था, आज फिर कहा और लोगों ने फिर कहा, उठो, इस बेदीन की ख़बर लो।

इसके बाद फिर मेरे साथ वहीं हुआ जो कल हो चुका था और आज भी हज़रत अब्बास रज़ि० ही ने मुझे आकर बचाया। वह मुझ पर झुके और वैसी ही बात कही, जैसी कल कही थी।[1]

4. तुफ़ैल बिन अम्र दौसी—यह सज्जन कवि, सूझ-बूझ के मालिक और क़बीला दौस के सरदार थे। इनके क़बीले को यमन के आस-पास में सरदारी या लगभग सरदारी हासिल थी। वह नुबूवत के ग्यारहवें साल मक्का तशरीफ़ लाए, तो वहां पहुंचने से पहले ही मक्का वालों ने उनका स्वागत किया और बड़े आदर से सत्कार किया, फिर बोले—

ऐ तुफ़ैल! आप हमारे नगर में पधारे हैं और यह व्यक्ति जो हमारे बीच है, इसने हमें बड़ी उलझनों में डाल रखा है। हमारे भीतर फूट डाल रखी है और हम बिखर कर रह गए हैं। इसकी बातों में जादू-जैसा प्रभाव है कि बेटे और बाप में, भाई और भाई में और मियां-बीवी में फूट डाल देता है। हमें डर लगता है कि जिस आज़माइश में हम घिरे हुए हैं, कहीं वह आप पर और आपकी क़ौम पर भी न आ पड़े। इसलिए आप इससे हरगिज़ बात न करें और इसकी कोई चीज़ न सुनें।

हज़रत तुफ़ैल का इर्शाद है कि ये लोग मुझे बराबर इसी तरह की बातें समझाते रहे, यहां तक कि मैंने तै कर लिया कि न आपकी कोई चीज़ सुनूंगा, न आपसे बातचीत करूंगा, यहां तक कि जब मैं सुबह को मस्जिदे हराम गया तो कान में रूई ठूंस रखी थी कि कहीं कोई बात आपकी मेरे कान में न पड़ जाए। लेकिन अल्लाह को मंज़ूर था कि आपकी कुछ बातें मुझे सुना ही दे। चुनांचे मैंने बड़ा अच्छा कलाम सुना, फिर मैंने अपने जी में कहा—

हाय! मुझ पर मेरी मां की चीख-पुकार! में तो, ख़ुदा की क़सम! एक सूझबूझ रखने वाला कवि हूं, मुझ पर बुरा-भला छिपा नहीं रह सकता, फिर क्यों न मैं इस व्यक्ति की बात सुनूं? अगर अच्छी हुई तो क़ुबूल कर लूंगा, बुरी हुई तो छोड़ दूंगा।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब क़िस्सा ज़मज़म 1/499-500, बाब इस्लाम अबूज़र 1/544-545

यह सोचकर मैं रुक गया और जब आप घर पलटे तो मैं भी पीछे हो लिया। आप अन्दर दाख़िल हुए तो मैं भी दाख़िल हो गया और आपको अपना आना, लोगों का भय दिलाना, फिर कान में रूई ठूंसना, फिर भी आपकी कुछ बातों का सुन लेना ये सब बातें सविस्तार आपको बताईं, फिर अर्ज़ किया कि आप अपनी बात पेश कीजिए।

आपने मुझ पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। ख़ुदा गवाह है, मैंने इससे अच्छी बात और इससे ज़्यादा इंसाफ़ की बात कभी न सुनी थी। चुनांचे मैंने वहीं इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हक़ की गवाही दी।

इसके बाद आपसे अर्ज़ किया कि मेरी क़ौम में मेरी बात मानी जाती है। मैं उसके पास पलट कर जाऊंगा और उन्हें इस्लाम की दावत दूंगा। इसके बाद आप अल्लाह से दुआ फ़रमाएं कि वह मुझे कोई निशानी दे दे।

आपने दुआ फ़रमाई।

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० को जो निशानी मिली, वह यह थी कि जब वह अपनी क़ौम के क़रीब पहुंचे, तो अल्लाह ने उनके चेहरे पर चिराग़ जैसी- रोशनी पैदा कर दी।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह ! चेहरे के बजाए किसी और जगह ? मुझे अंदेशा है कि लोग इसे मुस्ला (चेहरे का विकृत होना) कहेंगे।

चुनांचे यह रोशनी उनके डंडे में पलट गई। फिर उन्होंने अपने बाप और अपनी बीवी को इस्लाम की दावत दी और वे दोनों मुसलमान हो गए, लेकिन क़ौम ने इस्लाम अपनाने में देर की।

फिर भी हज़रत तुफ़ैल रज़ि० बराबर कोशिशें करते रहे, यहां तक कि ख़ंदक़ की लड़ाई के बाद[1], जब उन्होंने हिजरत फ़रमाई, तो उनके साथ उनकी क़ौम के सत्तर या अस्सी परिवार थे।

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने इस्लाम में बड़े अहम कारनामे अंजाम देकर यमामा की लड़ाई में शहीद होने का पद प्राप्त किया।[2]

ज़िमाद अज़्दी—यह यमन के रहने वाले और क़बीला अज़्दशनूआ के एक व्यक्ति थे। झाड़-फूंक करना और भूत-प्रेत उतारना उनका काम था। मक्का आए

1. बल्कि हुदैबिया के समझौते के बाद, क्योंकि जब वह मदीना तशरीफ़ लाए, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में थे। देखिए इब्ने हिशाम 1/385
2. इब्ने हिशाम 1/182-185,

तो वहां के मूर्खों से सुना कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पागल हैं। सोचा, क्यों न उस व्यक्ति के पास चलूं? हो सकता है अल्लाह मेरे ही हाथों उसे सेहत दे दे।

चुनांचे आपसे मुलाक़ात की, और कहा—

'ऐ मुहम्मद! मैं भूत-प्रेत उतारने के लिए झाड़-फूंक किया करता हूं, क्या आपको भी इसकी ज़रूरत है?'

आपने जवाब में फ़रमाया—

'यक़ीनन सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता, और जिसे अल्लाह भटका दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। अम्मा बादु'

ज़ियाद ने कहा, ज़रा अपने ये कलिमे मुझे फिर सुना दीजिए। आपने तीन बार दोहराया। इसके बाद ज़ियाद ने कहा—

'मैं काहिनों, जादूगरों और कवियों की बात सुन चुका हूं, लेकिन मैंने आपके इन जैसे कलिमे कहीं नहीं सुने। ये तो समुद्र की अथाह गहराई को पहुंचे हुए हैं। लाइए, अपना हाथ बढ़ाइए। आपसे इस्लाम पर बैअत करूं।'

इसके बाद उन्होंने बैअत कर ली।[1]

यस्रिब की छः भाग्यवान आत्माएं

सन् 11 नबवी (जुलाई 620 ई०) के हज के मौसम में इस्लामी दावत को कुछ काम के बीज मिले, जो देखते-देखते छतनार पेड़ों में बदल गए और उनकी सुगन्धित और घनी छांवों में बैठकर मुसलमानों ने वर्षों के ज़ुल्म व सितम की तपन से राहत व नजात पाई, यहां तक कि घटनाओं की दिशा बदल गई और इतिहास की धारा मुड़ गई ।

मक्के वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाने और लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जो बेड़ा उठा रखा था, उस सिलसिले में नबी सल्ल० की रणनीति थी कि आप रात के अंधेरों में क़बीलों के पास तशरीफ़ ले जाते, ताकि मक्का का कोई मुश्रिक रुकावट न डाल सके।

---

1. सहीह मुस्लिम, मिश्कातुल मसाबीह, बाब अलामातुन्नुबूवः 2/525

इसी रणनीति के अनुसार एक रात आप, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० को साथ लेकर निकले। बनू ज़ुहल और बनू शैबान बिन सालबा के डेरों से गुज़रे, तो उनसे इस्लाम के बारे में बातचीत की। उन्होंने जवाब तो उम्मीदों भरा दिंया, लेकिन इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में कोई क़तई फ़ैसला न किया। इस मौक़े पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू ज़ुह्ल के एक आदमी के बीच वंश-क्रम के बारे में बड़ा दिलचस्प सवाल व जवाब भी हुआ। दोनों ही वंश-विशेषज्ञ थे।[1]

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० मिना की घाटी से गुज़रे, तो कुछ लोगों को आपस में बातचीत करते सुना।

आपने सीधे उनका सीधा रुख़ किया और उनके पास जा पहुंचे।

ये यसरिब के छः जवान थे और सबके सब क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ रखते थे। नाम ये हैं—

1. असअद बिन ज़ुरारा (क़बीला बनी नज्जार)
2. औफ़ बिन हारिस बिन रिफ़ाआ (इब्ने अफ़रा क़बीला बनी नज्जार)
3. राफ़ेअ बिन मालिक बिन अजलान (क़बीला बनी ज़ुरैक़)
4. क़ुतबा बिन आमिर बिन हदीदा (क़बीला बनी सलमा)
5. उक़्बा बिन आमिर बिन नाबी (क़बीला बनी हराम बिन काब)
6. हारिस बिन अब्दुल्लाह बिन रिआब (क़बीला बनी उबैद बिनग़नम)

यह यसरिब वालों का सौभाग्य था कि वे मदीना के अपने मित्र यहूदियों से सुना करते थे कि उस ज़माने में एक नबी भेजा जाने वाला है और अब जल्द ही वह ज़ाहिर होगा। हम उसकी पैरवी करके उसके साथ तुम्हें आदे इरम की तरह क़त्ल कर डालेंगे।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पास पहुंचकर मालूम किया कि आप कौन लोग हैं?

उन्होंने कहा, हम ख़ज़रज क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं।

आपने फ़रमाया, यानी यहूदियों के मित्र।

बोले, हां।

फ़रमाया, फिर क्यों न आप लोग बैठें, कुछ बातचीत की जाए।

---

1. देखिए मुख़्तसरुत्तवारीख़ : अब्दुल्लाह, पृ० 150-151
2. ज़ादुल मआद 2/50, इब्ने हिशाम 1/429, 541

वे लोग बैठ गए।

आपने उनके सामने इस्लाम की सच्चाई बयान की, उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई।

उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, भाई, देखो, यह तो वही नबी मालूम होते हैं, जिनका हवाला देकर यहूदी तुम्हें धमकियां दिया करते हैं, इसलिए यहूदी तुमसे आगे न जाने पाएं।

इसके बाद उन्होंने तुरन्त आपकी दावत मान ली और मुसलमान हो गए।

ये यसरिब के बुद्धिमान लोग थे। हाल ही में जो लड़ाई हो चुकी थी और जिसके धुएं अब तक फ़िज़ा को अंधेरा बनाए हुए थे। इस लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर दिया था, इसलिए उन्होंने सही ही यह उम्मीद कर रखी थी कि आपकी दावत, लड़ाई के अन्त का ज़रिया बनेगी, चुनांचे उन्होंने कहा—

'हम अपनी क़ौम को इस हाल में छोड़कर आए थे कि किसी और क़ौम में उनके जैसी दुश्मनी और वैर-भाव नहीं पाई जाती। उम्मीद है कि अल्लाह आपके ज़रिए उन्हें एक कर देगा। हम वहां जाकर लोगों को आपके उद्देश्य की ओर बुलाएंगे और यह दीन जो हमने ख़ुद क़ुबूल कर लिया है, उन पर भी पेश करेंगे। अगर अल्लाह ने आप पर उनको एक कर दिया, तो फिर आपसे बढ़कर कोई और सम्माननीय न होगा।'

इसके बाद जब ये लोग मदीना वापस हुए तो अपने साथ इस्लाम का पैग़ाम भी ले गए। चुनांचे वहां घर-घर रसूलुल्लाह सल्ल० की चर्चा फैल गाई।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह

इसी साल शव्वाल सन् 11 नबवी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह फ़रमाया।

उस वक़्त उनकी उम्र छः वर्ष थी।

फिर हिजरत के पहले साल शव्वाल ही के महीने में मदीना के अन्दर उनकी विदाई हुई।

उस वक़्त उनकी उम्र नौ वर्ष की थी।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/428, 430
2. तलक़ीहुल फ़ुहूम, पृ० 10, सहीह बुख़ारी 1/550

चांद के दो टुकड़े

इस्लामी दावत मुश्रिकों के साथ इसी संघर्ष के मरहले से गुज़र रही थी कि इस सृष्टि का अति शानदार और विचित्र मोजज़ा ज़ाहिर हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुश्रिकों के बहस व तकरार के जो कुछ नमूने गुज़र चुके हैं, उनमें यह बात भी मौजूद है कि उन्होंने आपकी नुबूवत पर ईमान लाने के लिए अप्राकृतिक निशानियों की मांग की थी और क़ुरआन के बयान के अनुसार उन्होंने पूरा ज़ोर देकर क़सम खाई थी कि अगर आपने मांगी गई निशानियां पेश कर दीं तो वे ज़रूर ईमान लाएंगे, मगर इसके बाद भी उनकी यह मांग पूरी नही की गई और उनकी तलब की गई कोई निशानी पेश नहीं की गई। इसकी वजह यह है कि यह अल्लाह की सुन्नत रही है कि जब कोई क़ौम अपने पैग़म्बर से कोई ख़ास निशानी तलब करे और दिखलाए जाने के बाद भी ईमान न लाए, तो उसकी क़ौम की मोहलत ख़त्म हो जाती है और उसे आम अज़ाब से हलाक कर दिया जाता है। चूंकि अल्लाह की सुन्नत तब्दील नहीं होती और उसे मालूम था कि अगर क़ुरैश को उनकी तलब की हुई कोई निशानी दिखला भी दी जाए तो वह अभी ईमान नहीं लाएंगे, जैसा कि उसका इर्शाद है—

'अगर हम इन पर फ़रिश्ते उतार दें और मुर्दे इनसे बातें करें और हर चीज़ इनके सामने लाकर इकट्ठा कर दें, तो भी वे ईमान नहीं लाएंगे, सिवाए इस शक्ल के कि अल्लाह चाहे, मगर इनमें से अधिकतर नासमझ हैं।'

और अल्लाह को भी मालूम था कि उनको अगर कोई निशानी न भी दिखलायी जाए, लेकिन और मोहलत दे दी जाए, तो आगे चलकर यही लोग कोई निशानी देखे बिना ईमान लाएंगे, इसलिए इन्हें अल्लाह ने इनकी तलब की हुई कोई निशानी नहीं दिखाई और ख़ुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अधिकार दिया कि अगर आप चाहें तो इनकी तलब की हुई निशानी इन्हें दिखा दी जाए, लेकिन फिर ईमान लाने पर इन्हें सारी दुनिया से सख़्त अज़ाब दिया जाए और अगर चाहें तो निशानी न दिखाई जाए और तौबा और रहमत का दरवाज़ा इनके लिए खोल दिया जाए। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही आख़िरी शक्ल अख़्तियार फ़रमाई कि इनके लिए तौबा व रहमत का दरवाज़ा खुला रखा जाए।[1]

तो यह थी मुश्रिकों को उनकी तलब की हुई चीज़ न दिखाई जाने की असल

1. मुस्नद अहमद, 1/342, 34,

वजह, चूंकि मुश्रिकों को इस बात से कोई सरोकार न था, इसलिए उन्होंने सोचा कि निशानी तलब करना आपको ख़ामोश और बेबस करने का बेहतरीन ज़रिया है, इस तरह आम लोगों को सन्तुष्ट भी किया जा सकता है कि आप पैग़म्बर नहीं, बल्कि बातें बनाने वाले हैं, इसलिए उन्होंने फ़ैसला किया कि चलो अगर यह नामज़द निशानी नहीं दिखाते तो बिन कुछ तय किए ही कोई भी निशानी तलब की जाए। चुनांचे उन्होंने सवाल किया कि कोई भी निशानी ऐसी ही दिखा दें, जिससे हम यह जान सकें कि आप वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं? इस पर आपने अपने पालनहार से सवाल किया कि इन्हें कोई निशानी दिखला दे। जवाब में हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि इन्हें बतला दो, आज रात निशानी दिखलाई जाएगी[1] और रात हुई तो अल्लाह ने चांद को दो टुकड़े करके दिखला दिया।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मक्का वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि आप उन्हें कोई निशानी दिखाएं। आपने उन्हें सिखलाया कि चांद के दो टुकड़े हो गए हैं, यहां तक कि उन्होंने दोनों टुकड़ों के बीच में हिरा पहाड़ को देखा।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि चांद दो टुकड़े हुआ। उस वक़्त हम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मिना में थे। आपने फ़रमाया, गवाह रहो और चांद का एक टुकड़ा फट कर पहाड़ (यानी जबल अबू क़ुबैस) की ओर जा रहा।[3]

चांद के दो टुकड़े होने का यह मोजज़ा बहुत साफ़ था। क़ुरैश ने इसे स्पष्ट रूप से बड़ी देर तक देखा और आंख मल-मल कर साफ़ करके देखा और स्तब्ध रह गए, लेकिन फिर भी ईमान नहीं लाए, बल्कि कहा तो यह कहा कि यह तो चलता हुआ जादू है और सच तो यह है कि मुहम्मद ने हमारी आंखों पर जादू कर दिया है। इस पर बहस व मुबाहसा भी किया। कहने वालों ने कहा कि अगर मुहम्मद ने तुम पर जादू कर दिया है, तो वह सारे लोगों पर तो जादू नहीं कर सकते। बाहर वालों को आने दो, देखो, क्या ख़बर लेकर आते हैं। इसके बाद ऐसा हुआ कि बाहर से जो कोई भी आया, उसने इसी घटना की पुष्टि की[4],

---

1. अद्-दुर्रुल मंसूर, अबू नुऐम, दलाइल 6/177
2. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/221, भाग 8/386
3. वही, वही, भाग 9, पृ० 386
4. फ़त्हुल बारी 7/223, अबू नुऐम, दलाइल व अ़बू अवाना, अद्दुर्रुल मंसूर 6/176, इब्ने जरीर, हाकिम, बैहक़ी

लेकिन ज़ालिम फिर भी ईमान नहीं लाए और अपनी डगर पर चलते रहे।

यह घटना कब घटित हुई, इब्ने हजर ने इसका वक़्त हिजरत से लगभग पांच साल पहले लिखा है।[1] अर्थात सन् 08 नबवी। अल्लामा मंसूरपुरी ने सन् 09 नबवी लिखा है।[2] मगर ये दोनों बयान विचारणीय हैं, क्योंकि सन् 08 और 09 नबवी में कुरैश की तरफ़ से आप और बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब का पूरी तरह से बाइकाट चल रहा था, बात-चीत तक बन्द थी और मालूम है कि यह घटना इस प्रकार की परिस्थितियों में नहीं घटित हुई थी। हज़रत आइशा रज़ि० ने इस एक आयत का उल्लेख करके इस सूरः की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया है कि वह जब उतरी तो मैं मक्का में एक खेलती हुई बच्ची थी।[3] यानी यह उम्र का वह मरहला था, जिसमें इस प्रकार की बातें याद भी हो जाती हैं और बचपन का खेल भी जारी रहता है यानी 5-6 वर्ष की उम्र। इसलिए चांद के दो टुकड़े होने की घटना सन् 10 या 11, सही होने के ज़्यादा क़रीब है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के इस बयान से कि उस वक़्त हम मिना में थे, ऐसा लगता है कि यह हज का ज़माना था, यानी चांद का साल अपने अंत पर था।

चांद के दो टुकड़े होने की यह निशानी शायद इस बात की भी प्रस्तावना रही हो कि आगे मेराज की घटना हो तो मन उसकी संभावना को स्वीकार कर सकें। वल्लाहु आलम (अल्लाह ही बेहतर जाने)

---

1. फ़त्हुल बारी 6/635
2. रहमतुल लिल आलमीन 3/159
3. सहीह बुख़ारी, तफ़्सीर सूरः क़मर

मेराज

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) अभी सफलता और ज़ुल्म व सितम के उस दर्मियानी मरहले से गुज़र रही थी और क्षितिज में दूर-दूर तक फैले तारों की झलक दिखाई पड़ना शुरू हो चुकी थी कि मेराज की घटना घटित हुई।

यह मेराज कब हुई? इस बारे में सीरत लिखने वालों के कथन अलग-अलग हैं, जो ये हैं—

1. जिस साल आपको नुबूवत दी गई, उसी साल मेराज की घटना घटित हुई। (यह तबरी का कथन है)

2. नुबूवत के पांच साल बाद मेराज हुई। (इसे इमाम नववी और इमाम क़ुरतबी ने प्रमुखता दी है)

3. नुबूवत से दसवें साल 27 रजब को हुई। (इसे अल्लामा मंसूरपुरी ने अपनाया है)

4. हिजरत के सोलह महीने पहले यानी नुबूवत के बारहवें साल रमज़ान के महीने में हुई।

5. हिजरत से एक साल दो माह पहले यानी नुबूवत के तेरहवें साल मुहर्रम में हुई।

6. हिजरत से एक साल पहले यानी नुबूवत के तेरहवें साल रबीउल अव्वल के महीने में हुई।

इनमें से पहले तीन कथन इसलिए सही नहीं माने जा सकते कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले हुई थी और इस पर सभी सहमत हैं कि पांच वक़्त की नमाज़ मेराज में फ़र्ज़ हुई।

इसका मतलब यह है कि हज़रत ख़दीजा की वफ़ात मेराज से पहले हुई थी और मालूम है कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात नुबूवत के दसवें साल रमज़ान महीने में हुई थी, इसलिए मेराज का ज़माना इसके बाद होगा, इससे पहले का नहीं।

बाक़ी रहे आख़िर के तीन कथन, तो इनमें से किसी को किसी पर प्रमुखता देने के लिए दलील न मिल सकी। अलबत्ता सूरः इस्रा के देखने से अन्दाज़ा

होता है कि यह घटना मक्की ज़िंदगी के बिल्कुल आखिरी दौर की है।[1]

हदीस के इमामों ने इस घटना का जो विवरण दिया है, हम आगे उनका सार लिख रहे हैं।

इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सही कथन के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके मुबारक जिस्म के साथ बुराक़ पर सवार करके हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ मस्जिदे हराम से बैतुल मक़्दिस तक सैर कराई गई, फिर आप वहां उतरे और नबियों की इमामत करते हुए नमाज़ पढ़ाई और बुराक़ को मस्जिद के दरवाज़े के हलक़े से बांध दिया था।

इसके बाद उसी रात आपको बैतुल मक़्दिस से आसमाने दुनिया तक ले जाया गया। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दरवाज़ा खुलवाया। आपके लिए दरवाज़ा खोला गया। आपने वहां इंसानों के बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने आपको मरहबा (अभिनन्दन) कहा, सलाम का जवाब दिया और आपकी नुबूवत का इक़रार किया। अल्लाह ने आपको उनके दाहिनी ओर भाग्यवानों की आत्माएं और बाईं ओर भाग्यहीनों की आत्माएं दिखलाईं।

फिर आपको दूसरे आसमान पर ले जाया गया और दरवाज़ा खुलवाया गया। आपने वहां हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम को देखा। दोनों से मुलाक़ात की और सलाम किया। दोनों ने सलाम का जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर आपको तीसरे आसमान पर ले जाया गया। आपने वहां हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा और सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर चौथे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपने हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मरहबा कहा और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर पांचवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आपने हज़रत हारून बिन इम्रान अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और नुबूवत का इक़रार किया।

फिर आपको छठे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इम्रान से हुई। आपने सलाम किया। उन्होंने मरहबा कहा और

1. इस कथनों के विस्तृत विवेचन के लिए देखिए ज़ादुल मआद 2/49, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 148-149, रहमतुल लिल आलमीन 1/76

फिर आपको छठे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इम्रान से हुई। आपने सलाम किया। उन्होंने मरहबा कहा और नुबूवत का इक़रार किया।

अलबत्ता जब आप वहां से आगे बढ़े, तो वह रोने लगे। उनसे कहा गया, आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, मैं इसलिए रो रहा हूं कि एक नवजवान, मेरे बाद पैग़म्बर बनाकर भेजा गया, उसकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत के लोगों से बहुत ज़्यादा तायदाद में जन्नत के अन्दर दाख़िल होंगे।

इसके बाद आपको सातवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई। आपने उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

इसके बाद आपको सिदरतुलमुन्तहा तक ले जाया गया। इसके बेर (फल) हिज्र के ठलियों जैसे और उसके पत्ते हाथी के कान जैसे थे, फिर उस पर सोने के पतंगे, रोशनी और विभिन्न रंग छा गए और वह सियरा इस तरह बदल गया कि अल्लाह के पैदा किए हुए लोगों में से कोई उसके सौन्दर्य की प्रशंसा नहीं कर सकता। फिर आपके लिए बैते मामूर को ऊंचा किया गया। उसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दाख़िल होते थे जिनके दोबारा पलटने की नौबत नहीं आती थी। इसके बाद आपको जन्नत में दाख़िल किया गया। उसमें मोती के गुम्बद थे और उसकी मिट्टी मुश्क थी। इसके बाद आपको और ऊपर ले जाया गया, यहां तक कि आप एक ऐसी बराबर जगह पर ज़ाहिर हुए जहां क़लमों की चरमराहट सुनी जा रही थी।

फिर आपके लिए बैते मामूर को ज़ाहिर किया गया।

फिर अल्लाह के दरबार में पहुंचाया गया और आप अल्लाह के इतने क़रीब हुए कि दो कमानों के बराबर या उससे भी कम दूरी रह गई। उस वक़्त अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य फ़रमाई जो कुछ कि वह्य फ़रमाई और पचास वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ कीं।

इसके बाद आप वापस हुए, यहां तक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा कि अल्लाह ने आपको किस चीज़ का हुक्म दिया है?

आपने फ़रमाया, पचास नमाज़ों का।

उन्होंने कहा, आपकी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती। अपने पालनहार के पास वापस जाइए और अपनी उम्मत के लिए इसके घटा देने की दरख़्वास्त कीजिए।

उन्होंने इशारा किया कि हां, अगर आप चाहें।

इसके बाद हज़रत जिब्रील आपको अल्लाह के हुज़ूर ले गये और वह अपनी जगह था। (कुछ रिवायतों में सहीह बुख़ारी के शब्द यही हैं)

उसने दस नमाज़ें कम कर दीं और आप नीचे लाए गए।

जब मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़र हुआ तो उन्हें ख़बर दी।

उन्होंने कहा, आप अपने रब के पास वापस जाइए और कमी के लिए फिर कहिए। इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह के बीच आपका आना-जाना बराबर चलता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सिर्फ़ पांच नमाज़ें बाक़ी रखीं। इसके बाद भी मूसा अलैहिस्सलाम ने आपको वापसी और कम करने की तलब का मश्विरा दिया, मगर आपने फ़रमाया, अब मुझे अपने रब से शर्म महसूस हो रही है। मैं इसी पर राज़ी हूं और इसे मान लेता हूं।

फिर जब आप कुछ दूर और चले तो आवाज़ आई कि मैंने अपना फ़र्ज़ लागू कर दिया और अपने बन्दों से कमी कर दी।[1]

इसके बाद इब्ने क़य्यिम ने इस बारे में मतभेद का उल्लेख किया है कि नबी सल्ल० ने अपने रब को देखा या नहीं? फिर इमाम इब्ने तैमिया के एक शोध का उल्लेख किया है, जिसका सार यह है कि आंख से देखने का सिरे से कोई सबूत नहीं और न कोई सहाबी इसके क़ायल हैं? और इब्ने अब्बास से साफ़ देखने और दिल के देखने के जो कथन कहे जाते हैं, उनमें से पहला दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं।

इसके बाद इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सूरः नज्म में अल्लाह का जो यह कथन है—

'फिर वह नज़दीक आया और ज़्यादा क़रीब हो गया।' (53 : 8)

तो यह उस क़रीब होने के अलावा है जो मेराज में हासिल हुआ था, क्योंकि सूरः नज्म में जिस क़रीब होने का उल्लेख है, उससे मुराद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का क़रीब होना है, जैसा कि हज़रत आइशा रज़ि० और इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया है और सब पर नज़र रखने से यही सही बात भी मालूम होती है।

इसके ख़िलाफ़ मेराज की हदीस में जिस क़रीब होने का उल्लेख है, उसके बारे में स्पष्ट है कि यह अल्लाह से क़रीब होना है और सूरः नज्म में सिरे से इसको छेड़ा ही नहीं गया है, बल्कि इसमें यह कहा गया है कि आपने इन्हें दूसरी

---

1. ज़ादुल मआद, 2/47-48

बार सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा और यह हज़रत जिब्रील थे। इन्हें मुहम्मद सल्ल० ने उनकी अपनी शक्ल में दो बार देखा था—

एक बार ज़मीन पर और एक बार सिदरतुल मुन्तहा के पास।[1]

कुछ रिवायतों में आया है कि इस बार भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शक़्क़े सद्र (सीना चाक करने) की घटना घटित हुई और आपको इस सफ़र के दौरान कई चीज़ें दिखाई गईं।

आप पर दूध और शराब पेश की गई। आपने दूध लिया। इस पर आपसे कहा गया कि आपको प्रकृति की राह बताई गई या आपने प्रकृति पा ली और याद रखिए कि अगर आपने शराब ली होती, तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती।

आपने जन्नत में चार नहरें देखीं, दो ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष), दो बातिनी (अप्रत्यक्ष)।

ज़ाहिरी नहरें नील व फ़रात नदियां थीं यानी उनका तत्व था और बातिनी दो नहरें जन्नत की दो नहरें हैं। (नील व फ़रात देखने का मतलब शायद यह है कि आपकी रिसालत नील व फ़रात की हरी भरी घाटियों को अपना वतन बनाएगी)। (वल्लाहु आलम)

आपने मालिक, जहन्नम के दारोग़ा को भी देखा। वह हंसता न था और न उसके चेहरे पर हर्ष और प्रसन्नता थी।

आपने जन्नत और जहन्नम भी देखी।

आपने उन लोगों को भी देखा, जो यतीमों का माल ज़ुल्म करके खा जाते हैं। उनके होंठ ऊंट के होंठों की तरह थे और वे अपने मुंह में पत्थर के टुकड़ों जैसे अंगारे ठूंस रहे थे, जो दूसरी ओर उनके पाख़ाने के रास्ते से निकल रहे थे।

आपने सूदख़ोरों को भी देखा। उनके पेट इतने बड़े-बड़े थे कि वे अपनी जगह से इधर-उधर नहीं हो सकते थे और जब आले फ़िरऔन को आग पर पेश करने के लिए ले जाया जाता, तो उनके पास से गुज़रते वक़्त उन्हें रौंदते हुए जाते थे।

आपने ज़िनाकारों को भी देखा। उनके सामने ताज़ा और चिकना गोश्त था और इसी के पहलू में साथ-साथ सड़ा हुआ छीछड़ा भी था। ये लोग ताज़ा और चिकना गोश्त छोड़कर सड़ा हुआ छीछड़ा खा रहे थे।

आपने उन औरतों को देखा जो अपने शौहरों पर दूसरों की औलाद दाख़िल कर देती हैं। (यानी दूसरों से ज़िना के ज़रिए गर्भवती होती हैं, लेकिन न जानने

---

1. ज़ादुल मआद 2/47-48, साथ ही देखिए सहीह बुख़ारी 1/450, 455, 456, 470, 471, 481, 508, 549, 550, 2/684, सहीह मुस्लिम, 1/91, 92, 93, 94, 95, 96

की वजह से बच्चा उनके शौहर का समझा जाता है।) आपने उन्हें देखा कि उनके सीनों में बड़े-बड़े टेढ़े कांटे चुभा कर उन्हें आसमान व ज़मीन के बीच लटका दिया गया है।

आपने आते-जाते हुए मक्के वालों का एक क़ाफ़िला भी देखा और उन्हें उनका एक ऊंट भी बताया जो भड़क कर भाग गया था। आपने उनका पानी भी पिया जो एक ढके हुए बरतन में रखा था। उस वक़्त क़ाफ़िला सो रहा था, फिर आपने उसी तरह बरतन ढक कर छोड़ दिया और यह बात मेराज की सुबह आपके दावे की सच्चाई की एक दलील साबित हुई।[1]

अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की और अपनी क़ौम को उन बड़ी-बड़ी निशानियों की ख़बर दी, जो अल्लाह ने आपको दिखाई थीं, तो क़ौम के झुठलाने और पीड़ा पहुंचाने में और तेज़ी आ गई।

उन्होंने आपसे सवाल किया कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बयान करें।

इस पर अल्लाह ने आप पर बैतुल मक़्दिस ज़ाहिर कर दिया और वह आपकी निगाहों के सामने आ गया। चुनांचे आपने क़ौम को उसकी निशानियां बतानी शुरू कीं और उनसे किसी बात का खंडन न बन पड़ा।

आपने जाते और आते हुए उनके क़ाफ़िले से मिलने का उल्लेख किया और बतलाया कि उसके आने का समय क्या है।

आपने उस ऊंट की भी निशानदेही की जो क़ाफ़िले के आगे-आगे आ रहा था, फिर जैसा कुछ आपने बताया था, वैसा ही साबित हुआ। लेकिन इन सबके बावजूद उनकी नफ़रत में वृद्धि ही हुई और इन ज़ालिमों ने कुफ़्र करते हुए कुछ भी मानने से इंकार कर दिया।[2]

कहा जाता है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को इसी मौक़े पर सिद्दीक़ की उपाधि दी गई, क्योंकि आपने इस घटना की उस वक़्त पुष्टि की, जबकि और लोगों ने झुठला दिया था।[3]

मेराज की उपलब्धि बताते हुए कम से कम शब्दों में जो बड़ी बात कही गई,

---

1. पिछले हवाले, साथ ही इब्ने हिशाम 1/397, 402, 406 और तफ़्सीर की किताबें, तफ़्सीर सूरः इसरा
2. ज़ादुल मआद 1/48, साथ ही देखिए सहीह बुख़ारी 2/684, सहीह मुस्लिम 1/96 इब्ने हिशाम 1/402-403
3. इब्ने हिशाम 1/399

वह यह है—

'ताकि हम (अल्लाह) आपको अपनी कुछ निशानियां दिखाएं।' (17-1)

और नबियों के बारे में यही अल्लाह की सुन्नत है। इर्शाद है कि—

'और इसी तरह हमने इब्राहीम को आसमान व ज़मीन की राज्य-व्यवस्था दिखाई और ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो।' (6/57)

और मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया—

'ताकि हम तुम्हें अपनी कुछ बड़ी निशानियां दिखाएं।' (20/23)

फिर इन निशानियों के दिखाने का जो अभिप्राय था, उसे भी अल्लाह ने अपने इर्शाद 'ताकि वह विश्वास करने वालों में से हो' द्वारा स्पष्ट किया।

चुनांचे जब नबियों के ज्ञान को इस तरह की चीज़ें दिखाकर सनद हासिल हो जाती थी, तो उन्हें 'ऐनल यक़ीन' का वह स्थान मिल जाता था, जिसका अन्दाज़ा लगाना संभव नहीं कि—

'देखी हुई चीज़ सुनी चीज़ों जैसी नहीं होती।'

और यही वजह है कि पैग़म्बर अल्लाह की राह में ऐसी-ऐसी परेशानियां झेल लेते थे, जिन्हें कोई और झेल ही नहीं सकता। हक़ीक़त में उनकी निगाहों में दुनिया की सारी ताक़तें मिलकर भी मच्छर के पर के बराबर हैसियत नहीं रखती थीं, इसीलिए वे इन ताक़तों की ओर से होने वाली सख़्तियों पर दी जाने वाली पीड़ाओं की कोई परवाह नहीं करते थे।

मेराज की इस घटना की छोटी-छोटी बातों के भेद खोलने वाली किताबें हैं, हां, कुछ मोटी-मोटी सच्चाइयां ऐसी हैं जो इस मुबारक सफ़र के स्रोतों से फूट कर नबी की सीरत पर भरपूर रोशनी डालती हैं, इसलिए यहां उन्हें संक्षेप में लिखा जा रहा है।

आप देखेंगे कि अल्लाह ने सूरः इसरा में इसरा (मेराज का सफ़र) की घटना का केवल एक आयत में उल्लेख करके बात का रुख़ यहूदियों के कुकर्मों, करतूतों और अपराधों के बताने की ओर फेर दिया है, फिर उन्हें बता दिया गया है कि यह क़ुरआन वह रास्ता बताता है जो सबसे सीधा और सही है।

क़ुरआन पढ़ने वालों को कभी-कभी सन्देह हो जाता है कि दोनों बातें बेजोड़ हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, बल्कि अल्लाह इस शैली में यह इशारा फ़रमा रहा है कि अब यहूदियों को मानव-जाति के नेतृत्व से हटाया जा रहा है, क्योंकि उन्होंने ऐसे-ऐसे अपराध किए हैं, जिनके करने के बाद इस पद पर बाक़ी नहीं रखा जा सकता, इसलिए अब यह पद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को सौंपा जाएगा और इब्राहीमी दावत के दोनों केन्द्र उनके आधीन कर दिए जाएंगे।

दूसरे शब्दों में अब समय आ गया है कि रूहानी (आध्यात्मिक) क़ियादत (नेतृत्व) एक उम्मत (समुदाय) से दूसरी उम्मत को दे दी जाए, यानी एक ऐसी उम्मत से जिसका इतिहास धोखादेही, बद-दयानती, ज़ुल्म और बदकारी से भरा हुआ है, यह नेतृत्व छीनकर एक ऐसी उम्मत के हवाले कर दिया जाए, जिससे नेकियों और भलाइयों के सोते फूटेंगे और जिसका पैग़म्बर सबसे ज़्यादा सीधा रास्ता बताने वाले क़ुरआन की वह्य से मालामाल है।

लेकिन यह नेतृत्व कैसे मिल सकता है जबकि इस उम्मत का रसूल मक्के के पहाड़ों में लोगों के बीच ठोकरें खाता फिर रहा है?

उस समय यह एक सवाल था जो एक दूसरी सच्चाई से परदा उठा रहा था और वह सच्चाई यह थी कि इस्लामी दावत का एक दौर अपने अन्त और पूरा होने के क़रीब आ लगा है और अब एक दूसरा दौर शुरू होने वाला है, जिसकी धारा पहले से अलग होगी।

इसीलिए हम देखते हैं कि कुछ आयतों में मुश्रिकों को खुली चेतावनी और कड़ी धमकी दी गई है। इर्शाद है—

'और जब हम किसी बस्ती को तबाह करना चाहते हैं तो वहां के खाते-पीते लोगों को हुक्म देते हैं, पर वे खुली मनमानी करते हैं। पस उस बस्ती पर (तबाही का) कथन सही साबित हो जाता है और हम उसे कुचल कर रख देते हैं।'

(17 : 16)

'और हमने नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को तबाह कर दिया और तुम्हारा रब अपने बन्दों के अपराधों की ख़बर रखने और देखने के लिए काफ़ी है।'

(17 : 17)

फिर इन आयतों के साथ-साथ कुछ ऐसी आयंतें भी हैं जिनमें मुसलमानों को सांस्कृतिक नियम और विधान बताये गए हैं जिन पर आगे इस्लामी समाज का निर्माण होना था, गोया अब वे किसी ऐसे भू-भाग पर अपना ठिकाना बना चुके हैं, जहां हर पहलू से उनके मामले उनके अपने हाथ में हैं और उन्होंने एक ऐसी इकाई बना ली है, जिस पर समाज की चक्की घूमा करती है, इसलिए इन आयतों में इशारा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत जल्द ऐसी शरण-स्थली और शान्ति स्थली पा लेंगे जहां आपके दीन को चैन नसीब होगा।

यह इसरा और मेराज की बरकत भरी घटना की तह में छिपी हिक्मतों और छिपे भेदों में से एक ऐसा भेद और एक ऐसी हिक्मत है जिसका हमारे विषय से सीधा ताल्लुक़ है। इसलिए हमने उचित समझा कि उसे बयान कर दें।

इस तरह की दो बड़ी हिक्मतों पर नज़र डालने के बाद हमने यह राय बनाई है कि मेराज की यह घटना या तो पहली अक़बा की बैअत से कुछ ही पहले की है या अक़बा की दोनों बैअतों के बीच की है। (वल्लाहु आलम)